वैश्विक संवाद

6.3

16 भाषाओं में एक वर्ष में 4 अंक

स्वयं के साथ युद्ध करता भारतीय लोकतंत्र

नन्दिनी सुन्दर

तुर्की अधिनायकवाद

सिहान तुगल

ब्राजील में लूलीवाद का अंत

रूये ब्रागा

नवउदारवादी अर्जेन्टीना में श्रमिक राजनीति

रोडोल्फो एल्बर्ट

अमरीकी अधिकारों की गहरी कहानी

अर्ली हाशचाइल्ड

विश्वविद्यालय एवं समाजशास्त्र

> ब्रिटेन में कार्पोरेट विश्वविद्यालय का उदय

> कनाडा में 'समाजशास्त्रीय के युद्ध'

स्मृतियों में

> जॉन उरी, 1946–2016

विशिष्ट कॉलम

> यौन हिंसा के खिलाफ छात्र अभियान

> मान्ड्रेगन का तीसरा रास्ता

> *वैश्विक संवाद* का रोमानियाई भाषा में अनुवाद

पत्रिका

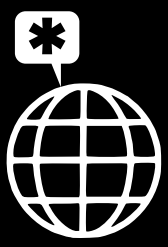

GD
अंक 6 / क्रमांक 3 / सितम्बर 2016
www.isa-sociology.org/global-dialogue/

International Sociological Association

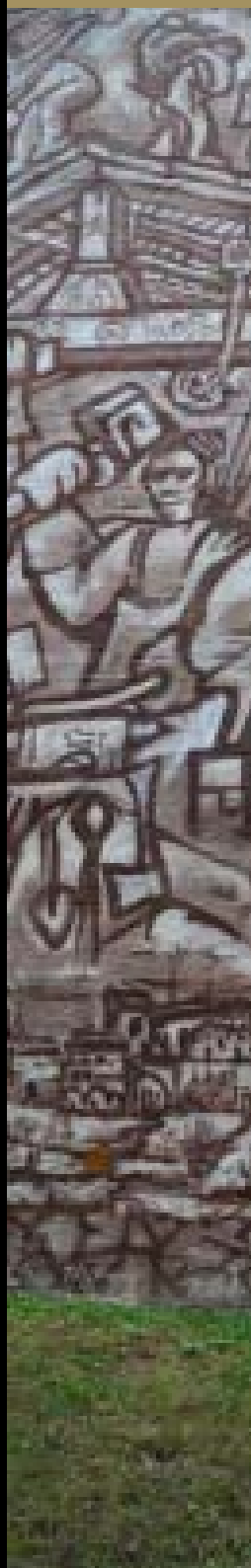

> सम्पादकीय

21वीं शताब्दी का लोकलुभावनवाद

सन् 2011 और 2014 के मध्य दुनिया में छाये सामाजिक आंदोलनों–अरब बगावत, कब्जा करों आंदोलन, इंडिग्नाडोस, श्रम आंदोलन, छात्र आंदोलन, पर्यावरण आंदोलनों और ग्रामीण बेदखली के खिलाफ संघर्ष के बारे में वैश्विक संवाद ने आशावादी ढंग से रिपोर्ट किया। यह आशावाद अल्पकालिक था क्योंकि इन आंदोलनों ने प्रतिक्रियावादी लोकलुभावन आंदोलनों और सत्तावादी शासन व्यवस्था की लहर का नेतृत्व करने वाले परिवर्तनों को प्रारंभ किया। यह अंक इन दक्षिणपंथी उभारों का विवरण प्रस्तुत करता है : अमरीका में ट्रम्पवाद और चाय पार्टी के बारे में अर्ली होशाइल्ड का विश्लेषण; सिहान तुगल द्वारा तुर्की शासन के सत्तावादी झुकाव का परीक्षण; ब्राजील में दक्षिण पंथी तख्तापलट के बारे में रूये ब्रागा की व्याख्या, रूडोल्फो एल्बर्ट द्वारा अर्जेन्टीना में नवउदारवादी झुकाव का विश्लेषण; और नंदिनी द्वारा नस्लवाद आंदोलन के खिलाफ चालू हिंसा का आलेखीय चित्रण। जैसा कि हमने पिछले अवसरों पर तर्क दिया है, हम इन आंदोलनों को कार्ल पोलान्यी के बाजार के अति–विस्तार के विश्लेषण के संदर्भ में देख सकते हैं। खास तौर पर वित्तीय पूंजी के शासन ने आज अनिश्चितता के वैश्वीकरण को प्रेरित किया है। इसने दक्षिणपंथी और वामपंथी लोकलुभावन आंदोलनों के मध्य, दोनों द्वारा संसदीय राजनीति की अस्वीकृति को साझा कर, उतार चढ़ाव को जन्म दिया है।

हम अपने विश्वविद्यालयी कार्यप्रणाली में भी कार्य के वित्तीयकरण को देख सकते हैं। अतः इस अंक में, हू बेनॉन आर्थिक रूप से अपने को बनाये रखने की कोशिश करने वाले ब्रिटिश विश्वविद्यालय पर अप्रकार्यात्मक प्रबन्धवाद का विश्लेषण करते हैं। वे वर्णन करते हैं कि शोध उत्कृष्टता का आकलन करने की प्रणाली कैसे साधारणता को पैदा करती है और कैसे फीस पर निर्भरता ने छात्रों को उपभोक्ता और विश्वविद्यालयों को विज्ञापन एजेन्सियाँ, जो छात्र की "सन्तुष्टता" के स्तर को अधिकतम करने के लिए प्रतिस्पर्धा करती हैं, में परिवर्तित कर दिया है। क्या यू. के. का कार्पोरेट मॉडल बाकी दुनिया को नेतृत्व प्रदान कर रहा है या क्या अनतिक्रम प्रचलन में रहेगा जैसा कनाड़ा में नील मैकलागलिन और एंटनी पुड्डेफट द्वारा वर्णित किया गया–यद्यपि यहाँ पर भी शैक्षणिक जगत् को रूढ़िवादी प्रधानमंत्री के रोष का सामना करना पड़ा, यह एक खुला प्रश्न था।

हम जॉन उरी जिनका दुर्भाग्यवश एवं अप्रत्याशित रूप से इस वर्ष मार्च में निधन हो गया के जीवन एवं कार्य के प्रति चार श्रद्धांजलि प्रकाशित कर रहे हैं। जॉन उरी विश्व के सबसे मौलिक और सफल समाजशास्त्रियों में से एक थे। पूंजीवाद के कायापलट से लेकर पर्यटन के महत्व तक जिसने शोध कार्यक्रम की सामाजिक और गतिशीलता को गति दी; ग्लोबल वार्मिंग से लेकर उनकी नवीनतम और बहुत अशांत करने वाली पुस्तक, Offshoring, जो वैश्विक असमानताओं और मानवाधिकार उल्लंघनों को तीव्र करने वाली गोपनीयता की अर्थव्यवस्था पर विचार उन्हें ऐसा बनाते हैं। वे संभवतः भविष्य के समाजशास्त्र के एक अग्रणी के रूप में सर्वाधिक स्मरण किये जायेंगे, जिसने उन आपदाओं के बारे में भविष्यवाणी करने का साहस दिखाया जिनकी तरफ हमारा ग्रह अग्रसर हो रहा है।

हमारे पास तीन और आलेख हैं : अमरीका में यौन उत्पीड़न के खिलाफ तेजी से बढ़ता छात्र आंदोलन; महान मान्ड्रेगन सहकारी समिति की विरोधियों से रक्षा; और, अंत में, वैश्विक संवाद की रोमानियाई टीम मैसे अनुवाद की चुनौतियों का सामना करती है। हमें आशा है कि अन्य टीमें भी समाजशास्त्र का अंग्रेजी से विभिन्न राष्ट्रीय भाषाओं में अनुवाद के उनके अनुभवों के बारें लिखेंगी।

> ***वैश्विक संवाद*** को आईएसए वैबसाइट पर 16 भाषाओं में देखा जा सकता है।
> प्रस्तुतियां (Submissions) burawoy@berkeley.edu पर प्रेषित की जा सकती हैं।

*राजनैतिक हिंसा की अग्रणी भारतीय समाजशास्त्री एवं द बर्निंग फॉरेस्ट की लेखिका, **नन्दिनी सुंदर** छत्तीसगढ़ के कन्द्रीय राज्य में भारतीय युद्ध का विश्लेषण करती हैं।*

*तुर्की समाजशास्त्री और पैसिव रेवोल्यूशन : एबसोरबिंग द इस्लामिक चैलेंज टू कैपिटलिज्म के लेखक **सिहान तुगल** तुर्की को 21वीं सदी के अधि–नायकवाद के मॉडल के रूप में प्रस्तावित करते हुए।*

*ब्राजील में अनिश्चित वर्गों और वर्कर्स पार्टी (PT) के उत्थान और पतन की व्याख्या करने वाले विख्यात टिप्पणीकार **रूये ब्रागा,** ब्राजील की राजनीति के नवीनतम संकट का विश्लेषण करते हुए*

GD

Global Dialogue is made possible by a generous grant from **SAGE Publications.**

> Editorial Board

Editor: Michael Burawoy.

Associate Editor: Gay Seidman.

Managing Editors: Lola Busuttil, August Bagà.

Consulting Editors:
Margaret Abraham, Markus Schulz, Sari Hanafi, Vineeta Sinha, Benjamín Tejerina, Rosemary Barbaret, Izabela Barlinska, Dilek Cindoğlu, Filomin Gutierrez, John Holmwood, Guillermina Jasso, Kalpana Kannabiran, Marina Kurkchiyan, Simon Mapadimeng, Abdul-mumin Sa'ad, Ayse Saktanber, Celi Scalon, Sawako Shirahase, Grazyna Skapska, Evangelia Tastsoglou, Chin-Chun Yi, Elena Zdravomyslova.

Regional Editors

Arab World:
Sari Hanafi, Mounir Saidani.

Argentina:
Juan Ignacio Piovani, Pilar Pi Puig, Martín Urtasun.

Brazil:
Gustavo Taniguti, Andreza Galli, Ângelo Martins Júnior, Lucas Amaral, Benno Alves, Julio Davies.

India:
Ishwar Modi, Rashmi Jain, Jyoti Sidana, Pragya Sharma, Nidhi Bansal, Pankaj Bhatnagar.

Indonesia:
Kamanto Sunarto, Hari Nugroho, Lucia Ratih Kusumadewi, Fina Itriyati, Indera Ratna Irawati Pattinasarany, Benedictus Hari Juliawan, Mohamad Shohibuddin, Dominggus Elcid Li, Antonius Ario Seto Hardjana.

Iran:
Reyhaneh Javadi, Abdolkarim Bastani, Niayesh Dolati, Mitra Daneshvar, Vahid Lenjanzade.

Japan:
Satomi Yamamoto, Yutaro Shimokawa, Shinsa Kameo, Yuki Nakano.

Kazakhstan:
Aigul Zabirova, Bayan Smagambet, Adil Rodionov, Gani Madi, Almash Tlespayeva, Almas Rakhimbayev, Amangeldi Kurmetuly.

Poland:
Jakub Barszczewski, Adrianna Drozdrowska, Krzysztof Gubański, Justyna Kościńska, Kamil Lipiński, Mikołaj Mierzejewski, Karolina Mikołajewska-Zając, Adam Müller, Zofia Penza, Teresa Teleżyńska, Anna Wandzel, Justyna Zielińska, Jacek Zych.

Romania:
Cosima Rughiniș, Corina Brăgaru, Costinel Anuța, Tatiana Cojocari, Andrei Dobre, Alexandra Isbășoiu, Rodica Liseanu, Mihai-Bogdan Marian, Anda-Olivia Marin, Ramona Marinache, Anca Mihai, Oana-Elena Negrea, Ion Daniel Popa, Diana Tihan, Elena Tudor, Cristian Constantin Vereș, Carmen Voinea, Irina Zamfirescu.

Russia:
Elena Zdravomyslova, Anna Kadnikova, Asja Voronkova, Lyubov' Chernyshova, Anastasija Golovneva.

Taiwan:
Jing-Mao Ho.

Turkey:
Gül Çorbacıoğlu, Irmak Evren.

Media Consultants: Gustavo Taniguti.

Editorial Consultant: Ana Villarreal.

> इस अंक में In This Issue

सम्पादकीय : 21वीं शताब्दी का लोकलुभावनवाद **2**

> दक्षिणपंथी प्रभुत्व

स्वयं के साथ युद्ध करता एक लोकतंत्र
नंदिनी सुन्दर, भारत **4**

तुर्की अधिनायकवाद : सांस्कृतिक जिज्ञासा के बजाय एक चलन
सिहान तुगल, यू.एस.ए. **7**

लूलीवाद का अंत और और ब्राजील के महल में तख्तापलट
रूअे ब्रागा, ब्राजील **10**

श्रम राजनीति और अर्जेन्टीना में नवउदारवाद की वापसी
रोडोल्फो एल्बर्ट, अर्जेन्टीना **13**

अमरीकी अधिकार : एक गहरी कहानी
अर्ली रसेल हाशचाइल्ड, यू.एस.ए. **15**

> विश्वविद्यालय और समाजशास्त्र

ब्रिटेन में कार्पोरेट विश्वविद्यालय का उदय
हूव बेनॉन, ब्रिटेन **18**

कनाडा में 'समाजशास्त्रीय युद्ध'
नील मेकलागलिन और **एंटनी पुड्डेफट, कनाडा** **22**

> स्मृतियों में

जॉन उरी एवं उनके कार्य को स्मरण करना
एंड्रयू सेअर, यू.के. **25**

जॉन उरी : भविष्य के समाजशास्त्री
स्कॉट लैश, यू.के. **27**

जॉन उरी : समाजशास्त्री से बड़े एक समाजशास्त्री
बॉब जेसप, यू.के. **29**

निकटता और गतिशीलता में : जॉन उरी का कीर्तिमान
मिमी शिलर, यू.एस.ए. **31**

> विशिष्ट स्तम्भ

यौन हिंसा के खिलाफ छात्र अभियान
एना विदु और टिंका शुबर्ट, स्पेन **33**

मानड्रेगन का तीसरा रास्ता : शररयन कास्मिर को जवाब
इग्नेसियो सांता क्रूज एयो और **इवा एलोन्सो, स्पेन** **35**

वैश्विक संवाद का रोमानियाई भाषा में अनुवाद
कॉस्टिनेल अनूता, कोरिना बगारू,अन्का मिहाई, ओआना नेगरिया, आयन डेनियल पोपा और **डायना तिहान, रोमानिया** **37**

> स्वयं के साथ युद्ध करता एक लोकतंत्र

नंदिनी सुन्दर, दिल्ली स्कूल ऑफ इकोनोमिक्स, भारत

सलवा जुडूम – सरकार द्वारा प्रायोजित सतर्कता
अज्ञात स्थानीय फोटोग्राफर द्वारा

नन्दिनी सुन्दर राजनैतिक हिंसा की जानी मानी समाजशास्त्री हैं। उन्होंने भारत के एक राज्य छत्तीसगढ़ में प्रचण्ड संघर्ष का क्षेत्र बस्तर के अध्ययन में 25 वर्षों से भी अधिक समय व्यतीत किया है। सबसे पहले वे अपने पी एच डी शोध ग्रन्थ, जो Subalterms and Sovereigns : An anthropological history of Bastar 1854-1966 (आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1977) शीर्षक से प्रकाशित हुआ, के शोध कार्य हेतु वहाँ रही थीं। उनकी नवीन और बहुप्रतीक्षित पुस्तक The Burning Forest : India's war in Bastar (जगरनॉट प्रेस, 2016), इस युद्ध क्षेत्र का क्या हुआ और यह किस प्रकार से बाह्य राजनैतिक शक्तियों द्वारा प्रभावित हुआ है, के बारे में वर्णन करती है। यह पुस्तक सर्वोच्च न्यायालय में मुकदमेबाजी के उनके अनुभव और मानवाधिकार उल्लंघन के पीड़ितों के लिए समाधान एवं अतिसतर्कता के विरूद्ध संवैधानिक निषेधाज्ञा की माँग की लगभग एक दशक पुरानी और अभी भी जारी कानूनी प्रक्रिया के विभिन्न चरणाों का भी वर्णन करती है। यद्यपि उन्हें और उनके सहकर्मियों को 2011 में एक शानदार निर्णय मिला, सरकार ने न्यायालय के आदेश को नजरअंदाज कर दिया और अपने उग्रवाद–विरोधी अभियान को जारी रखा। The Burning Forest भारतीय लोकतंत्र के निर्माण में संस्थागत विफलता, राज्य दण्ड से मुक्ति और राजकीय सार्वजनिक लचीलापन के मिश्रण को पकड़ने का प्रयास करती है।

> >

भारतीय लोकतंत्र मजबूत राय को आकर्षित करता है। भारतीय राजनेताओं, मुख्य धारा की मीडिया एवं देश के अभिजनों द्वारा मुखरित प्रभावी स्थिति उत्सवी है और तर्क देती है कि उत्तर–उपनिवेशी समाजों में, भारत अपने सार्वभौमिक मताधिकार, संघवाद, नागरिक शासन के अधीनस्थ सेना और स्वतन्त्र न्यायपालिका पर गर्व कर सकता है। दूसरी तरफ सक्रियकर्त्ता इस मत को खारिज करते हैं और बहस करते हैं कि भारतीय लोकतंत्र एक ''दिखावा'' है। ऐसा वे ''आपातकालीन'' कानूनों में औपनिवेशी नैरन्तर्य जैसे पूर्वोत्तर का सशस्त्र बल विशेष शक्तियाँ अधिनियम (AFSPA) जो सेना का सिर्फ संशय के आधार पर गोली चलाने की अनुमति देता है; अतिरिक्त न्यायिक हत्याओं, हिरासत में मौत, अत्याचार, बलात्कार और खो जाना; सत्ताधारी दल से जुड़ी संगठित नरहिंसा जो सिक्ख (दिल्ली, 1984) और मुस्लिम (गुजरात, 2002) जैसे अल्पसंख्यकों को निशाना बनाती है, की तरफ इशारा कर के कहते हैं।

भारतीय लोकतंत्र पर अकादमिक कार्य राजनीति विज्ञान में केन्द्रित है और मोटे तौर पर राजनैतिक दलों, चुनाव, संस्थागत ढाँचे और विकासात्मक व्यवस्था पर ध्यान केन्द्रित कर एक मध्यमार्गी दृष्टिकोण अपनाते हैं। इसके विपरीत, The Burning Forest : India's War in Bastar में, मैं सरकार द्वारा कथित ''वामपंथी उग्रवाद'' के खिलाफ जारी उग्रवाद–विरोधी अभियान का समाजशास्त्रीय परीक्षण का प्रयत्न करती हूँ और यह भारतीय लोकतंत्र के बारे में क्या दर्शाता है का अन्वेषण करती हूँ।

भारतीय कम्प्यूनिस्ट पार्टी (माओवादी) से सम्बद्ध माओवादी छापामारों जो लोकप्रिय रूप में नक्सलवादी कहलाते हैं–के खिलाफ भारत का वर्तमान आक्रमण अब एक दशक पुराना है। लेकिन जहाँ 1960 के दशक के अंत में प्रारम्भ होने वाले नक्सलवादी आंदोलन का पहला चरण जो 1970 के दशक में क्रूरता से कुचल दिया गया था, ने विद्वानों का ध्यान आकर्षित किया, उसके समकालीन चरण पर अभी भी बहुत कम विस्तृत पुस्तकें हैं। ऐसा इसलिए है कि ऐसे विवादास्पद और प्रतिभूतिकृत क्षेत्र पर शोध करना कठिन हो सकता है और इसलिए भी क्योंकि यह आंदोलन, पहले चरण के नक्सलवादी आंदोलन जिसमें मध्यम वर्ग, शहरी एवं छात्र समर्थक थे की तुलना में अब स्वदेशी लोग या ग्रामीण एवं जंगली इलाकों में अनुसूचित जनजातियों और अनुसूचित जातियों में संकेन्द्रित है। आज, संघर्ष का अधिकांश विवरण एक तरफ तो माओवादी के साथ यात्रा करने वाले पत्रकारों से आता है और दूसरी तरफ सुरक्षा थिंक टैंक की रिपोर्टों से।

यद्यपि माओवादी आंदोलन कई राज्यों में फैला हुआ है, युद्ध का अधिकेन्द्र बस्तर – एक छत्तीसगढ़ के केन्द्रीय भारतीय राज्य में 39,114 वर्ग किलोमीटर का एक क्षेत्र जो सघन वन, खनिज समृद्ध है। इस क्षेत्र में माओवादी सबसे पहले पडोसी राज्य आंध्र प्रदेश से, दमन से बचने के लिए एक शरणागाह स्थापित करने के इरादे से आये थे लेकिन स्थानीय लोगों ने अपनी माँगें रखनी शुरू कर दी। 1980 के दशक से प्रारंभ कर, माओवादीयों ने भूमि वितरण, सामूहिक कार्य समूहों की स्थापना, विवादों का निपटारा, ठेकेदार पर कल लगा, और अंतरंग सम्बन्धों में प्रवेश कर, लगभग एक सामानान्तर राज्य स्थापित कर लिया। जैसे जैसे ग्रामीणों ने माओवादी राज्य के निर्माण में भाग लिया, उस पर उन्होंने अपनी सांस्कृतिक परम्पराओं की छाप छोड़ी।

जून 2005 में भारत की केन्द्रीय और राज्य सरकारों ने दक्षिण एवं पश्चिम बस्तर में सलवा जुडुम (शाब्दिक अर्थ, शुद्धीकरण आखेट) नामक एक अनाकार सतर्कता संगठन का शुभारंभ किया और इसे नक्सलवादी हिंसा के खिलाफ सहज ''जनआंदोलन'' की संज्ञा दी। इस अभियान को क्षेत्र के अंतर्निहित वर्ग–विन्यासः स्वदेशी लोगों की तरफ आबादकार नस्लवाद राज्य का आधुनिकीकरण ड्राइव, जो स्वदेशी लोगों को खनन और उद्योग से विस्थापित करने पर आधारित है, के समर्थन से मदद मिली है। सलवा जुडुम के नेता अधिकतर गैर–स्वदेशी अप्रवासी या सत्ताधारी भारतीय जनता पार्टी (BJP) या कांग्रेस पार्टी के शक्तिशाली नेता जो उन माओवादी से खतरा महसूस करते हैं जो इस क्षेत्र में खनन और निवेश योजनाओं में मुख्य बाधा माना जाते हैं, के आसानी हैं।

2005 और 2007 के मध्य, सुरक्षा बलों के साथ सलवा जुडुम लड़ाकों ने घरों को जलाया, अनाज पशुधन और धन लूटा एवं ग्रामीणों का बलात्कार एवं हत्या की। माओवादियों ने सुरक्षा बलों पर आक्रमण कर जवाबी कार्यवाही की। लगभग 50,000 ग्रामीणों को जबरदस्ती ''राहत शिविरों'' में भेजा गया और उतनी ही संख्या में ग्रामीण जंगलों या पड़ोसी राज्यो में भाग गये। विस्थापित और विभाजित ग्रामीणों के लिए यह उनके जीवन की सबसे दर्दनाक घटना थी और यद्यपि 2007 के बाद लोग धीरे धीरे घर लौटने लगे, स्थिति अभी भी अस्थिर है।

आधिकारिक तौर पर, 2468 लोग–नागरिक, सुरक्षा बल एवं माओवादी कैडर 2005 से 2016 के मध्य छत्तीसगढ़ में मारे गये। वास्तविक संख्या निश्चित तौर पर अधिक होगी आपरेशन ग्रीन हण्ट, जब सरकार ने केन्द्रीय सेना से एक स्तर नीची ''केन्द्रीय सशस्त्र पुलिसबद्ध बल'' (CAPF) को मानवरहित ड्रोन, हेलिकॉप्टर और माईन–विरोधी टैंकों के साथ वहाँ भेजा।

2005–7 या 2009–11 में अधिकांश मौतों के साथ वास्तविक संख्या निश्चित तौर पर आपरेशन ग्रीन हण्ट के दौरान जब सरकार ने सेना से एक स्तर निम्न ''केन्द्रीय सशस्त्र पुलिस बल (CAPF) को मानवरहित ड्रोन, हेलिकाप्टर और सुरंग विरोधी टैंकों के साथ वहाँ भेजा, अधिक रही होगी।

प्रचलित उग्रवाद–विरोधी व्यवहार का अनुसरण करते हुए, सरकार ने आत्मसमर्पण करे हुए माओवादी को उनके पूर्व साथियों की पहचान करने के लिए और साथ ही स्थानीय युवाओं को जो सोच रहे थे कि वे पुलिस की नौकरी में भर्ती हो रहे थे, को नियुक्त किया। अपने गाँवों को लौटने में असमर्थ, ये विशेष पुलिस अधिकारी (SPO) अब पुलिस शिविरों में रहते हैं, हालांकि इन्हें नियमित पुलिस बल द्वारा हेय दृष्टि से देखा जाता है। जहाँ कुछ सुरक्षाकर्मी, ट्रिगर हैप्पी हैं और खुद के लिए या मेडल एवं पैसों के लिए मारने में आनंद महसूस करते हैं, अन्य अपने आप को इस संघर्ष में असहाय महसूस करते हैं। राजनेता एवं वरिष्ठ सुरक्षा अधिकारी मानवीय त्रासदी के सभी पक्षों के प्रति मुख्य रूप से उदासीन दिखाई देते हैं।

प्रत्येक पाँच से दस किलोमीटर पर कंटीलें तारों से लैस सुरक्षा शिविरों के साथ आज बस्तर देश का सर्वाधिक सैन्यीकृत क्षेत्र है। हालांकि इस बात की व्यापक रूप से मान्यता है कि बुनियादी स्वास्थ्य सेवाओं, शिक्षा का अभाव और शोषण माओवादियों के लोकप्रिय समर्थन के प्राथमिक कारक है, सरकार द्वारा सुरक्षा उपायों पर खर्चा कल्याण पर किये जाने वाले से कहीं अधिक है।

अन्य उग्रवाद–विरोधी अभियानों के साथ समानताओं को देखते हुए, यह पूछना उचित लगता है कि क्या इस बात से कोई फर्क पड़ता है यदि उग्रवाद–विरोधी अभियान सैन्य शासन या उपनिवेशी सरकार के बजाय लोकतंत्र में चलाया जाता है। राजनैतिक दलों

>>

और मानवाधिकार संगठनों से लेकर मीडिया एवं न्यायपालिका जैसी भिन्न संस्थाएँ और कर्त्ता ने क्या प्रतिक्रिया की?

संसदीय राजनीति युद्ध के लिए अप्रासांगिक है, चूँकि भारत की दोनों मुख्य दलों, काँग्रेस और भाजपा ने इसको प्रोत्साहित करने में सहयोग किया है। जहाँ स्थानीय संससदीय भारतीय कम्यूनिस्ट पार्टी ने, इस प्रक्रिया में गंभीर दमन के बावजूद, उत्कृष्ट भूमिका निभाई है, इसका राष्ट्रीय स्तर पर कोई विशेष महत्व नहीं है। राष्ट्रीय मानवा–धिकार आयोग जैसी वैधानिक संस्थाएँ न सिर्फ उदासीन अपितु सक्रिय रूप से संकट में रही हैं, जबकि नियमित चुनाव और समाधान करने वाली संस्थाओं की उपस्थिति, चाहे वे प्रभावी या लोकतांत्रिक है या नहीं, राज्य को वैधता प्रदान करती हैं।

जहाँ भारतीय मीडिया स्वतंत्र और उर्जावान दोनों हैं, मीडिया घरानों के व्यवसायिक हित और यह तथ्य कि वे सरकार को एक बिन्दु के आगे परेशान नहीं करना चाहते हैं; यह तथ्य कि उग्रवाद–विरोध गतिविधि अक्सर शहरी केन्द्रों से दूर होती है; यह कि वहाँ लगभग कोई भी स्वदेशी या निम्न जाति के संवाददाता नहीं है–का अर्थ है कि उग्रवाद–विरोध में होने वाले बड़े पैमाने के मानवाधिकार उल्लंघन बिल्कुल भी मुख्य राष्ट्रीय चिंताओं में नहीं है। बस्तर से रिपोर्ट पूर्ण उपेक्षा से लेकर अपेक्षाकृत भरपूर कवरेज तक रही हैं। लेकिन इसने भी सरकार की जवाबदेही सुनिश्चित नहीं की है। अंग्रेजी और हिन्दी मीडिया के मध्य संरचनात्मक अन्तर, जहाँ हिन्दी मीडिया अधिक गंभीर आर्थिक और राजनैतिक सीमाओं के तहत कार्य करता है, ने कवरेज को प्रभावित किया है।

दुर्व्यवहार को उजागर करने, बंधकों के लिए माओवादियों से बात चीत करना और राज्य एवं गुरिल्ला हिंसा के इर्द गिर्द बहस को तैयार करने में मानवाधिकार संगठनों ने केन्द्रीय भूमिका निभाई है। उसी समय, शहरी मानवाधिकार कार्यकर्त्ताओं की इंटरनेट पर बढ़ती निर्भरता ने महत्वपूर्ण जमीनी मुद्दों को अक्सर धुँधला कर देती है। छत्तीसगढ़ में अतिसतर्कता के लिए सरकारी समर्थन खुले आतंकवादी विरोधी कानून के लागू होने के साथ आया। इस कानून के अंतर्गत जाने–माने चिकित्सक और नागरिक अधिकार कार्यकर्त्ता की गिरफ्तारी ने मध्यम वर्ग के नेटवर्कों में चिंता को भड़काया। यद्यपि उनकी रिहाई के लिए चलाया जा रहा अभियान, किसी उचित प्रक्रिया की आशा के बिना, उन स्वदेशी नागरिकों जो उग्रवाद विरोधी प्रत्यक्ष हिंसा के निशाने पर रहे, के लिए लगभग अप्रासांगिक था।

Villagers walking long distances in protest against Salwa Judum. By unknown local photographer.

जहाँ स्थानीय अदालतें व्यवस्था के स्तर पर विफल हुई हैं जिससे साधारण ग्रामीणों की हिरासत की उच्च दर के साथ छत्तीसगढ़ की जेलों में भीड़भाड़ में वृद्धि हुई है, भारतीय सर्वोच्च न्यायालय ने बस्तर में बड़े पैमाने पर उल्लंघन को पहचानने में महत्व पूर्ण भूमिका निभाई है। हालांकि अत्यधिक देरी और स्थगनों और न्यायालय के आदेशों की अनदेखी करने की राज्य की क्षमता का अर्थ है कि न्यायालय के आदेश जमीनी स्तर पर न्याय में अनुवादित नहीं होता है। सलवा जुडुम जैसी सतर्कता संगठनों को बंद करने, उग्रवाद–विरोधी कार्यवाही में स्थानीय लोगों की भर्ती रोकने, संघर्ष के पीड़ितों को मुआवजा देने और उल्लंघन करने वालों को सजा देने के लिए 2011 में छत्तीसगढ़ राज्य को स्पष्ट निषेधाज्ञा देने के बावजूद सरकार अपने उल्लंघनों पर कायम है जैसे कि न्यायालय ने कुछ कहा ही नहीं हो।

2014 में जबसे मोदी सरकार सत्ता में आई, सलवा जुडुम के कई तत्व पुनर्जीवित हुए हैं; भाजपा के लिए राज्य समर्थित सतर्कतावाद देशभर में राजनीति का सामान्य स्वरूप है। हालांकि, नागरिक लोकतांत्रिक प्रोजेक्ट में विश्वास करना जारी रखते हैं और उसके लिए लड़ते हैं, चाहे मौजूदा वास्तविक लोकतंत्र बहुत कुछ वांछनीय को छोड़ देता है। ■

नन्दिनी सुंदर से पत्र व्यवहार हेतु पता <nandinisundar@yahoo.com>

> तुर्की अधिनायकवाद
सांस्कृतिक जिज्ञासा के बजाय एक चलन

सिहान तुगल, केलिफोर्निया विश्वविद्यालय, बर्कले, यू. एस. ए.

तुर्की सत्ताधारियों एवं कुर्दिस्तान वर्कर्स पार्टी (PKK) के मध्य कड़ी मेहनत से प्राप्त युद्ध विराम का 2015 की गर्मी में अंकारा द्वारा उल्लंघन किया गया।

तुर्की के तीव्र सत्तावादी झुकाव ने कई अवलोकनकर्ताओं को अचंभित किया है। कुछ समय पूर्व तक, अशांति से चिन्हित क्षेत्र में, तुर्की उदारवाद का एक अनुपम उदाहरण था। विश्लेषक राष्ट्रपति एरडोगन के व्यक्तित्व या तुर्की की विशिष्ट विशेषताओं में इस परिवर्तन का कारण ढूँढते हैं।

उदारवादी सफलता का स्वयं का विश्लेषण हमें कई सुराग (और लोकतांत्रिक पश्चिम के लिए पूर्वाभास) देता है। ''उदारवादी लोकतंत्र'' एक समय में मानवता की सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि के रूप में जाना जाता था, लेकिन यदि ''उदारवाद'' व्यक्तिगत सम्पत्ति और स्वतन्त्रता के गुणगान का सूचक है, जो हमारे युग में (नव) उदारीकरण (सम्पत्ति का निजीकरण, व्यक्तियों को आत्मनिर्भर और वित्तीयकरण करने के लिए कल्याण राज्य का पुनर्गठन) के साथ जाता है जो तुर्की का प्रकरण दर्शाता है कि उदारवाद और लोकतांत्रिकरण, राज्य की दमनकारी और निगमीय ताकत के साथ नागरिक और राजनीतिक क्षमता जैसे कारकों पर निर्भर होने से, थोड़े ही समय के लिए एक साथ चल सकते हैं।

तुर्की के हाल के अनुभवों में दुनिया के बाकी हिस्सों के लिए कई चेतावनियाँ हो सकती हैं। एक समय में, बुद्धिजीवियों का मानना था कि कम विकसित देश सबसे बलवान पूंजीवादी राष्ट्रों के अनुभवों में अपने भविष्य को देख सकते हैं। 1930 के दशक के विध्वंस के बाद, हालाँकि, कईयों ने सुझाव दिया कि इसका विपरीत भी सही हो सकता है। यूरोपीय लोगों ने अंततः उसका अनुभव किया, जिसे मूल निवासियों ने उपनिवेशवादी के दौरान जिया था। इतिहास के एक महत्वपूर्ण/नाजुक मोड़ (युद्ध के वर्ष) पर जन सशक्तीकरण और व्यक्तिगत सम्पत्ति/स्वतन्त्रता ने एक दूसरे को दुर्बल किया। क्या ये दोनों बड़े लक्ष्य एक दूसरे को एक बार फिर ध्वस्त कर सकते हैं?

> एक झूठा उदारवादी स्वर्ग

मध्य–पूर्व में तुर्की सबसे धर्मनिरपेक्ष और लोकतांत्रिक देश हुआ करता था। इसका भ्रामक अपवाद रूढ़िवादी दलों द्वारा ''केमलिस्ट'' पैकेज के लोकतांत्रीकरण पर आधारित था। 1950 के दशक से, कई मध्य दक्षिणपंथी दलों ने मुस्तफा कमाल द्वारा बीसवीं सदी के पहले अर्द्ध में निर्मित राष्ट्रवादी, निगमीय और धर्मनिरपेक्ष शासन को धीरे

> >

धीरे उदार बनाया। 2000 के दशक में, जस्टिस एवं डेवलेपमेंट पार्टी, एक नया राजनैतिक संगठन, ने देश के रूढ़िवादी और इस्लामी परम्पराओं के संयोजन से मध्य दक्षिणपंथी के एजेण्डा को अधिक लोकप्रिय बनाया। इस बदलाव ने, नवउदारवादी सुधारों, जिसने 1970 के दशक में पूरे क्षेत्र में या तो उदासीनता या स्पष्ट विरोध को पैदा किया, के लिए लोकप्रिय और बौद्धिक उत्साह को भड़काया।

हालाँकि, इस चमकदार सफलता की कहानी का एक काला पक्ष भी था। मुख्यधाराई वर्णन, जो अभी भी 2000 के दशक में तुर्की के उदारीकरण को एक ''मॉडल'' के रूप में प्रस्तुत करते हैं, सरकार के वर्णनों को चुनौती देने वाले Alevis, हड़ताली कर्मचारी, पर्या–वरणविद्, वामपंथी और कभी कभी कुर्द के समूहों के दमनीकरण को नजरअंदाज करते हैं। पश्चिमी दुनिया और तुर्की उदारवादी दोनों ही ने जस्टिस एण्ड डेवलेपमेंट पार्टी के साम्प्रदायिक और सांस्कृतिक एजेण्डा के महत्व को कम करने का चयन किया। उन्होंने पार्टी द्वारा अर्जित : उच्च वृद्धि दर और एक समय में प्रभावी केमलिस्त सेना को दरकिनार करना, के लिये दमन को एक बहुत छोटी कीमत के रूप में देखा। इन उपलब्धियों द्वारा उकसाये पर्यावरण विनाश, कर्मचारी मौतें, कम मजदूरी, गैर–राजनीतिकरण, गैर–सघीकरण, बढ़ती सुन्नी सांप्रदायिकता, पितृ सत्तात्मक हिंसा और नगरीय विस्थापन (कम से कम वे जो इनके साथ थे या उन्हें सुदृढ़ बना रहे थे) पर बहुत कम ध्यान दिया गया।

जस्टिस एण्ड डेवलेपमेंट पार्टी के पहले दो कार्यकालों के दौरान, राजनैतिक और आर्थिक उदारीकरण ने कई शिकायतों का पैदा किया और उनसे लड़ने के लिए स्थान खोले। 2013 की गर्मियों में, पर्यावरण और नगरीय आंदोलनों, जो अंदर ही उबल रहे थे, ने अपनी स्थानीय सीमाओं को तोड़ दिया। जब स्वाभाविक महिला आंदोलनों, Alevi और धर्मनिरपेक्ष लामबंदी उनसे जुड़े, तुर्की के इतिहास में सबसे विशाल नगरीय बगावत (गेजी विद्रोह) भड़क उठी। यद्यपि, कई लाखों नागरिकों ने इसमें भाग लिया, वे एक सामान्य राजनैतिक मँच का निर्माण नहीं कर सके। श्रमिक और कुर्द नेताओं ने गेजी विद्रोह को केवल सीमित समर्थन दिया, जबकि मुख्य वामपंथी समूहों ने, आधे मन से, विद्रोह को एक अधिक राजनैतिक दिशा में मोड़ने का प्रयास किया। तीनों शक्तियों को अनिच्छा, भ्रम और अक्षमता के अपने संयोजन के लिए आगामी वर्षों में भारी भुगतान करना पड़ा।

सरकार के तीव्र इस्लामिक झुकाव और सत्तावादी धमाकों से निराश हो कर 2013 में कई उदारवादियों ने विद्रोह का साथ दिया और उसे, बिना किसी सफलता के, एक उदारवादी दिशा में धकेलने का प्रयास किया। विद्रोह, तुर्की के सबसे केन्द्रीय शहरी पार्क, गेजी को विनाश से बचाने के विरोध प्रदर्शनों के प्रारंभिक लक्ष्य के आगे अपने एजेण्डा को ले जाने में असफल साबित हुआ।

>उदारवाद का अधिनायकवाद में उत्परिवर्तन

विद्रोह के टूटे फूटे चरित्र के बावजूद, सरकार साजिश के अपने वर्णन पर अटकी रही और विद्रोह पर हिंसक रूप से टूटी। उसके पश्चात्, शासकीय दल न केवल अधिक सत्तावादी बल्कि अधिक अधिनायकवादी भी हो गया और विपक्षी आवाजों के खिलाफ अपने आधार को लामबंद किया।

यह बदलाव क्यों हुआ? उदारवाद निगमवाद की प्रवृत्तियों के विपरीत सामाजिक तनाव को रोकने की बजाय, उसमें वृद्धि करता है। संरचनात्मक रूप से, मजबूत राजनीति उदारवाद को छेड़े बिना तनावों को रोक, अवशोषित और दबा सकती है; इसकी तुलना में कमजोर राज्य उदारवाद की सीमाओं के भीतर विस्फोटक तनाव से निपटने के लिए कम लैस होते हैं। विशेष तौर पर जब व्यवस्थाएँ कड़े विरोध का सामना करती हैं, स्थापित संस्थाएँ और दबाब शायद विरोध आंदोलनों को नियंत्रित करने के लिए पर्याप्त नहीं होते हैं। ऐसे संदर्भ में, कुलीन वर्ग अधिनायकवाद का आधार बिछाने हेतु जवाबी लामबंदी का सहारा ले सकते हैं। कुलीन वर्ग द्वारा आकार दिया गया यह मार्ग न सिर्फ कार्यवाही की अपितु प्रतिक्रिया करने का तत्पर राजनैतिक और नागरिक समूहों की उपस्थिति की माँग करता है।

1960 से लेकर 1990 के दशकों तक इस्लामी लामबंदी में पार्टी की जड़ों पर आधारित हो, तुर्की की जस्टिस एण्ड डेवलपमेंट पार्टी में इस तरह के नेटवर्क बहुतायत में उपलब्ध थे। 2013 के बाद, जिसे तुर्की शासन ने गहराता खतरा माना, के प्रत्युत्तर में, तुर्की शासन जिसे मैं ''नरम अधिनायकवाद'' कहता हूँ, से ''कठोर अधिनायकवाद'' में परिवर्तित हो गया और उसने Alevis, हड़ताली कर्मचारियों, पर्यावरणविदों एवं समाजवादियों और बाद में उदारवादियों के खिलाफ कार्यवाही की।

विडंबना है कि, 2013 के पश्चात के सबसे शक्तिशाली शुद्धीकरण ने, एक उदारवादी इस्लामिक समूह, गुलेन समुदाय, जो नरम अधिनायकवाद का अग्रणी थी, का निशाना बनाया, जिसने एक के बाद संस्थाओं में प्रवेश कर, पुराने शासन के व्यक्तियों, Alevis और वामपंथियों को हटा, उन्हें चुपके से खाली किया। समूह ने आज के व्यापक रूप से प्रचारित और अनुष्ठानिक शुद्धिकरण की तुलना में बिना किसी धूमधाम के शुद्धीकरण का प्रबंधन किया। सत्ता की लूट को साझा करने पर गुलेन समुदाय और पुराने इस्लामी कैडर के मध्य कुछ संघर्ष हुआ लेकिन नियंत्रण से बाहर नहीं निकले। ऐसा तब तक रहा जब तक इजराइल के साथ एरडोगन के सम्बन्धों में तनाव में वृद्धि हुई। गुलेन (अमरीकी पैरवी समूहों और अन्य पश्चिमी शक्ति के केन्द्रों के साथ गहरे संबंधों वाला एक मौलवी) एरडोगन के इजराइल विरोधी स्वर से पहले ही शंकित था। एरडोगन द्वारा समर्थित, तुर्की धर्मार्थ संघ द्वारा गाजा नाकाबंदी को तोड़ने के एक प्रयास ने खेल को पलट दिया। गुलेन ने वाशिंगटन पोस्ट को एक साक्षात्कार दिया और कार्यवाही को सत्ता की अवज्ञा करने के आधार पर गैर–इस्लामी घोषित की। उसके बाद, ''प्रथम'' जस्टिस एण्ड डेवलपमेंट पार्टी शासन के दो घटक धीरे धीरे विभाजित हो गये। इस घटनाक्रम के कारण शासन को बड़ी कीमत चुकानी पड़ी, चूंकि उसके पास संस्थाओं में भर्ती करने के लिए उच्च गुणवत्ता वाले कार्यकर्त्ता नहीं थे। इसने जन लामबंदी और कट्टरता पर शासन की निर्भरता और स्वाद में वृद्धि की।

अधिनायकवाद के प्रति इस राष्ट्रीय झुकाव में, एक अधिक प्रादेशिक लेकिन अभी भी आकस्मिक, गतिक जोड़ा गया : अरब बगावत ने तुर्की के अभी तक निष्क्रिय इस्लामिक समुदाय के मध्य नई आशा का संचार किया। बाँयें तरफ उदारवादी और दाहिनी तरफ अतिवादियों के छोटे हलकों के अलावा, तुर्की इस्लामियों ने हमेशा ऑटोमान साम्राज्य को पुनर्जीवित करने का स्वप्न देखा था। जस्टिस एण्ड डेवलपमेंट पार्टी के नेताओं ने राजनैतिक व्यवहारिकता और नई आर्थिक एवं राजनीतिक लूट की संभावना के संयोजन से निकल पूर्ववर्ती दशक में अपने उग्रवाद को नरम किया। लेकिन, 2011 और 2013 के मध्य, पार्टी की साम्राज्यवादी महत्वाकांक्षा, जो छुप नहीं पा रही थी, को बल मिला और अंततः नियन्त्रण से बाहर हो गई।

जस्टिस एण्ड डेवलेपमेंट पार्टी के उदार और पश्चिमी समर्थकों को उम्मीद थी कि पार्टी को लम्बे समय से आ रही साम्राज्यवादी आकांक्षाओं को ''साफ्ट पावर'' उपागम से संस्थागत किया जा

>>

एरडोगन के हाथों में खेला गया 16 जुलाई 2016 का तुर्की का विफर सैन्य तख्तापलट, अधिनायकवाद को गहराने व मजबूत बनाने में सफल

सकेगा। यह एक ऐसा परिणाम था जो पूर्व शैक्षणिक, विदेश मंत्री और तत्कालीन प्रधानमंत्री अहमद दावुतोग्लू के दो सिद्धान्तों (''पड़ोसियों के साथ शून्य समस्या'' और ''रणनीतिक गहराई'') के द्वारा वादा किया गया था। प्रारम्भ में अरब बगावतें दावुतोग्लू के प्रयासों की और अधिक मोर्चाबंदी करती प्रतीत हुई, परन्तु उसे 2016 में निर्दोष करार कर दिया गया। क्यों? क्या एरडोगान के व्यक्तित्व के कारण जरूरी नहीं। यदि शासन अरब बगावत को भुनाने में सफल होता, जैसा कि आशा थी, उसे साफ्ट पावर उपागम को परित्याग करने की आवश्यकता नहीं पड़ती। अन्य कई विस्तृत होती पूंजीवादी शक्तियों की तरह, तुर्की में व्यापार–सरकार गठजोड़/सातत्य ने विदेशी बाजारों में अपनी हिस्सेदारी को बढ़ाने का प्रयास किया। लेकिन श्रमिक अशांति, राजनैतिक विखंडन और अंततः नागरिक युद्ध एवं सैन्य हस्तक्षेपों के कारण, तुर्की पूंजीपतियों के संभावित अरब केन्द्र–मिस्र, लीबिया और सीरिया–अब व्यापार के लिए उतने आकर्षक नहीं लग रहे थे। एक संकुचित होते विश्व बाजार के साथ इन भू–राजनैतिक–सामाजिक आर्थिक बाधाओं ने व्यापार के विस्तारवाद को सीमित किया। शासन व्यवस्था के पास अपने बेस के मध्य पुनर्वितरित करने के लिए बहुत कम नकदी थी–जिसने तुर्की की पहले से ही विस्तृत होते व्यापार वर्ग और उसके कल्याण कार्यक्रम, जिसने शहरी निर्धन से सहमति क्रय की थी, दोनों के लिए नई समस्याएँ पैदा की। आर्थिक मुनाफे से कम सहारा मिलने के कारण शासन व्यवस्था ने अपने इस्लामी साख को पैना करा।

सीरिया में, तुर्की में धीमें से असद को हटा कर अधिक व्यापार–अनुकूल इस्लामी सरकार के लिए मार्ग खोलने के प्रारंभिक आर्थिक–तार्किक प्रयास, किसी भी कीमत पर सुन्नी राज्य के सृजन के कट्टरवादी प्रयासों से पिछड गये। तुर्की गलत अनुमानों ने ISIS, जो पहले कुर्द के खिलाफ अच्छा प्रतिभार प्रतीत हो रहा था, लेकिन जिसने पश्चिम और दक्षिण तुर्की में भी स्थिरता, पर्यटन और व्यापार की संभावनाओं को कमतर आँका, के जन्म में योगदान दिया। इसके अलावा, असद–विरोधी जिहादीयों और मध्य पूर्व के एकमात्र लोकतंत्र के मध्य कथित सहयोग ने इस्लाम के लोकतंत्र के साथ असंगति के पश्चिमी विवरणों को अधिक स्पष्ट किया।

इन रूझानों के परिणामों के वैश्विक प्रभाव हैं। तुर्की के दुस्साहस ने सीरिया को नष्ट कर दिया, यूरोप के लिए आव्रजन की एक ऐतिहासिक लहर और इस तरह विश्व युद्ध के पश्चात महाद्वीप पर दक्षिणपंथी लामबंदी की सबसे मजबूत लहर का नेतृत्व किया। आतंकवादी इस्लामवाद के भय से आंशिक रूप से प्रेरित, यूरोप के दक्षिणपंथीयों के उदय ने तुर्की को बहुत स्पष्ट संकेत दिया : यूरोपीय संघ की पूर्ण सदस्यता की अब कोई संभावना नहीं है। यह 2006 के बाद स्पष्ट हो गया था लेकिन इसके अहसास ने शासकीय दल के एजेण्डा को 2010 के दशक, जब यूरोपीय परिग्रहण में आशा की विफलता ने उदारीकरण को कम आँकने वाली अन्य गतिकी से अंतक्रिया की, तब मौलिक रूप से पुनः आकारित नहीं किया था। स्वतन्त्रता की पुकार (एक ऐसी तड़प जिसे तुर्की वुलीन वर्ग अपने व्यापार और साम्राज्यवादी आकांक्षाओं के लिए तोड़ मरोड़ने की आशा रखते थे) के साथ जब अरब उदित हुए, तुर्की इस्लामवादियों ने यूरोप में उनकी लंबे समय से चली आ रूचि को खो दिया।

> तुर्की का मार्ग अन्यत्र कैसे दोहराया जा सकता है?

यद्यपि, इन गतिशीलताओं में से कुछ तुर्की के लिए विशिष्ट है, दुनिया भर में उदारवाद को कमतर करने वाले समस्त संरचनाएँ तुर्की जैसे अन्य मामलें–विशेष रूप से चूंकि इनमें से कई प्रकार की गतिकी क्षेत्रों और राष्ट्रों के बीच अंतक्रिया के साथ साथ राष्ट्रीय एवं वैश्विक प्रक्रियाओं के मध्य (और अंतर्गत) अंतक्रियाओं के साथ जुड़ी है, को पैदा कर सकती हैं। सबसे महत्वपूर्ण बात है कि इस्लामी हलकों में तीव्र, विश्वव्यापी दक्षिणपंथी झुकाव ने पूरे पश्चिम में झटके की लहर भेजी है और जिसने न केवल सरकारी प्रतिभूतिकरण अपितु दक्षिणपंथी लामबंदी को भी उकसाया है। इस प्रक्रियात्मक दुष्चक्र के, और भी, अधिक वैश्विक संरचनात्मक आधार हैं।

आधुनिक इतिहास के उदारीकरण के दो महान चक्र वैश्विक स्तर पर प्रारम्भ हुए। दोनों अवधियों में विघटन वैश्विक के साथ साथ स्थानीय था/है। 1920 के दशक के बाद, शास्त्रीय उदारवाद के असफल होने से अमेरिका और पश्चिमी यूरोप और अत्यन्त दमनकारी राज्यों या पूर्व के जन–आधारित अधिनायकवाद में उदारवाद सन्निहित हो गया। क्षीण सामाजिक क्षमताओं और दुनिया भर में बढ़ते प्रतिभूतिकरण के कारण से, आज के मँडराते ध्वँस के बाद सन्निहित उदारवाद की संभावना कम ही दिखाई देती है।

जब तक बुद्धिजीवी, राजनेता और कार्यकर्त्ता एक सशक्त वैश्विक विकल्प जुटाने में सफल नहीं होंगे, बड़े पैमाने पर लामबंदी आने वाले समय में, पश्चिम में भी, अधिक टिकाऊ अधिनायकवादी राज्यों का सृजन कर सकती है। तुर्की के अनुभव हक सब के लिए चेतावनी के रूप में हैं : विफल क्रांतियाँ अक्सर अधिक भयानक शासन व्यवस्था को पैदा करती हैं। विशेष तौर पर, वर्तमान संदर्भ में, यदि ठोस एजेण्डा और राजनैतिक संगठन गेजी कब्जा करो और इंडिग्नाडोस के नये संस्करणों के बाद ठोस आकार नहीं लेते हैं तो हम सब के लिए यह बड़ी कीमत हो सकती है। ■

सिहान तुगल से पत्र व्यवहार हेतु पता <ctugal@berkeley.edu>

> लूलीवाद का अंत

और ब्राजील के महल में तख्तापलट

रूअे ब्रागा, साओ पाओलो विश्वविद्यालय एवं सदस्य श्रम आंदोलनों पर आई. एस. ए. की शोध समिति (RC44)

ब्राजील में संसदीय तख्तापलट जब निचले सदन ने राष्ट्रपति राउसेफ पर महाभियोग चलाने के लिए मतदान किया।

सामान्य तौर पर, ब्राजील के मौजूदा राजनैतिक और आर्थिक संकट का विश्लेषण, वर्कर पार्टी (PT) के राष्ट्रपति डिल्मा राउसेफ को अपने पूर्ववर्त्ती लुइज इनासियो लूला दा सिल्वा से विरासत में मिली सरकार की आर्थिक नीतियों की त्रुटियों पर जोर देता है। जहाँ यह सच है कि कुछ संघीय नीतिगत फैसलों ने ब्राजील के वितरणात्मक संघर्ष की गतिशीलता में दखल दिया है, वर्तमान संकट की जटिलता पर प्रकाश/रोशनी डालने के लिए राजनैतिक विनियम पर फोकस काफी संकुचित है। ये स्पष्टीकरण लूला युग (2002–2010) के दौरान वर्ग संरचना में होने वाले परिवर्तनों को अस्पष्ट/धुँधला करते हैं और अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक संकट के प्रभाव को अनदेखा करते हैं। दरअसल, इस तरह के विश्लेषण न सिर्फ राजनैतिक विनियम और आर्थिक संग्रहण के मध्य सम्बन्धों की व्याख्या करने में असफल रहे हैं अपितु उन्होंने इन्हें और उग्र कर दिया।

> हड़ताल का चक्र

काम की दुनिया में, अधीनस्थ और प्रमुख वर्गों के मध्य किसी भी युद्धविराम की समाप्ति अक्सर हड़ताल की एक लहर के रूप में आती है। सांख्यिकी और सामाजिक–आर्थिक अध्ययन के इंटर–यूनियन विभाग (SAG-DIEESE) के हड़ताल ट्रेकिंग सिस्टम के नवीनतम आँकड़ों के अनुसार, ब्राजील के कामगारों ने 2013 में अभूतपूर्व ऐतिहासिक हड़ताल की लहर का मंचन किया। कुल 2050 हड़तालों–पिछले वर्ष की तुलना में 134% वृद्धि के साथ कुल 2050 हड़ताल कर के श्रमिकों ने ऐतिहासिक रिकार्ड बनाया। अतः देश ने पिछले दो दशकों के दौरान हड़तालों में भारी गिरावट की स्थिति को पलट दिया और श्रम संघ आंदोलन ने अपने राजनैतिक वेग के कम से कम एक हिस्से को पुनः प्राप्त किया। कई राजधानी शहरों में बैंक कर्मचारियों की हड़तालें आम हो गई हैं। 2003 और 2015 के मध्य शिक्षकों, सरकारी कर्मचारियों, स्टील कामगारों, निर्माण श्रमिकों, बस एवं ट्रेन चालकों और किराये लेने वालों ने भी अपने संघों की लामबंदी में वृद्धि की। समान रूप से, 2012 के बाद से निजी क्षेत्र के कामगारों द्वारा हड़तालों में महत्वपूर्ण वृद्धि हुई है।

2013 में, निजी क्षेत्र की हड़तालें कुल हड़तालों की 54% थी। यहाँ यह विशेष रूप से ध्यान देने की बात हैं कि सेवा क्षेत्र में नौकरियों का उछाल अकुशल और अर्द्धकुशल कामगारों से जुड़ी नौकरियों में आया। इनमें से कई बाह्य ठेके पर और कम वेतन वाली थी और जिनमें अनिश्चित कार्य अनुबंध और पारंपरिक श्रमिक अधिकारों का अभाव था। बैंक कर्मचारियों द्वारा आठ राष्ट्रीय हड़तालों के अलावा, पर्यटन, सफाई, निजी स्वास्थ्य, सुरक्षा, शिक्षा और संचार के कामगार परिवहन कामगारों के समान विशेष रूप से सक्रिय थे।

सामान्य तौर पर, संघ की गतिविधियाँ, श्रमिक आतंकवाद में केन्द्रीय भूमिका निभाते दिखाई देते हुए पारंपरिक श्रेणी के कर्मचारियों के बाहर फैल गई हैं। सार्वजनिक क्षेत्र में भी, सरकारी प्रशासन में अधिक अनिश्चित कामगार, नगर निगम कर्मचारियों में हड़ताल की गतिविधियाँ बढ़ गई। कुल मिलाकर दोनों निजी और सार्वजनिक क्षेत्रों में हड़ताल की गतिविधियाँ, शहरी Precariat की बढ़ती लामबंदी के साथ ''केन्द्र से छोर'' की ओर बढ़ी।

हड़ताल चक्र के विस्तार को देखते हुए, शायद यह मौजूदा राजनैतिक संकट की सर्वाधिक कम आँका गयी व्याख्या है। सत्ता धारी वर्गों को ऐसी संघ की नौकरशाही नहीं चाहिए जो अपने कामगारों को नियन्त्रित करने में असमर्थ साबित हुई है। इस दृष्टिकोण से केवल विश्वसनीय शासकीय प्रोजेक्ट वह होगा जिसमें पूंजीवादी संग्रहण की बहाली सम्मिलित होगी। ऐसा कामगारों के अधिकारों पर हमलों के माध्यम से सामाजिक बेदखली को मजबूत बनाने से होगा।

>>

वर्तमान हड़ताल चक्र और ब्राजील के अधीनस्थ वर्ग द्वारा अपने अनिश्चित जीवन शैली में उलटफेर/परिवर्तन का सामना करना दोनों ही लूलिस्ता प्रोजेक्ट की सीमाओं और अन्तर्निहित अस्पष्टता को दर्शाता है। इस प्रोजेक्ट के अंतर्विरोधों को समझने के लिए पिछले तेरह वर्षों से PT की अनिश्चित आधिपत्य/प्राधान्य की सीमा का विश्लेषण सम्मिलित है।

>अनिश्चित प्राधान्य

वर्ग संघर्ष के नियमन की एक विधा के रूप से समझा, प्राधान्य सामाजिक सम्बन्ध के रूप में लूलीवाद सहमति के दो भिन्न परन्तु पूरक स्वरूपों की अभिव्यक्ति पर आधारित था, जिसने मिलकर देश में आपेक्षित सामाजिक शांति के एक दशक का निर्माण किया। ब्राजील के अधीनस्थ वर्गों ने श्रम संघ नौकरशाही के नेतृत्व में एक सरकारी परियोजना को निष्क्रिय सहमति दी जिसने आर्थिक विस्तार की अवधि के दौरान कामगारों के लिए मामूली लेकिन प्रभावी रियायतें सुनिश्चित की।

अर्द्ध–ग्रामीण उपसर्वहारा वर्ग को बोल्सा फैमिलिया प्रोग्राम (पारिवारिक कोष) से लाभ पहुँचा और वे अत्यधिक गरीबी से आधिकारिक गरीबी की रेखा तक पहुँचे। शहरी Precariat भी मुद्रास्फीति की दर के पार न्यूनतम मजदूरी के साथ साथ श्रम बाजार और रोजगार सृजनकी औपचारिकता द्वारा लुभाये गये। संघ से जुड़े श्रमिकों को तेजी से बढ़ते श्रम बाजार से लाभ हुआ और सामूहिक सौदेबाजी के माध्यम से नये वेतन और लाभ प्राप्त किये।1

कम से कम 2014 के राष्ट्रपति पद के चुनाव तक, PT ने पुनर्वितरण नीतियों, औपचारिक रोजगार सृजन और ऋण तक लोकप्रिय पहुँच को जोड़ कर राष्ट्रीय आय वितरण में मामूली विकेन्द्रीकरण को प्रोत्साहित किया। सामाजिक असमानताओं के लिये विख्यात देश में, यह इस छोटी सी अगुवाई लूलिस्ता विनियमन की राजनीति के प्रति अधीनस्थ वर्ग की सहमति प्राप्त करने के लिए पर्याप्त थी।

उसी समय, PT सरकार ने श्रम संघ नौकरशाहों, सामाजिक आंदोलनों के नेताओं और बौद्धिक मध्यम वर्ग के हितों को जोड़कर, राज्य तंत्र के इर्द गिर्द आयोजित लूलीवाद के लिए सक्रिय सहमति की नींव को रखा। संघ के हजारों सदस्य संसदीय सलाहकार कार्यो, मंत्रालयों और राज्य की कम्पनियों में नियुक्त हुए;, कुछ श्रम संघ नौकरशाही, राज्य द्वारा निवेश कोष के रूप में संचालित वृहद/विशाल पेंशन कोष के बोर्ड पर सामरिक पदों पर काबिज हुए। PT सदस्य और समर्थकों का भी तीन मुख्य राष्ट्रीय बैंक : राष्ट्रीय विकास बैंक (BNDES), बैंक ऑफ ब्राजील और कायक्सा इकोनिमिका फैडरल के प्रबंधकीय पदों पर मनोनयन हुआ।

इस प्रकार, लूलीस्ता संघवाद न केवल बुजुर्आ राज्य का एक कुशल प्रशासक अपितु देश में पूंजीवादी निवेश को दिशा दिखाने वाला प्रमुख कर्ता बन गया है। चूंकि इस राजनीतिक–प्रशासनिक शक्ति में पूंजी का निजी स्वामित्व सम्मिलित नहीं है, श्रम संघ नौकरशाही की विशेषाधिकार प्राप्त सामाजिक स्थिति राजनैतिक तंत्र के नियंत्रण पर निर्भर थी और इस नियन्त्रण को पुनः उत्पन्न करने के लिए इसके दोनों ऐतिहासिक सहयोगियों–नौकरशाही के मध्यम स्तर और छोटे बौद्धिक बुर्जुआ और इसके ऐतिहासिक शत्रु–शत्रुतापूर्ण नौकरशाही की परतें एवं निगमीय हितों के साथ सम्प्रदायवादी समूह–को राज्य तंत्र के भीतर समायोजित करना चाहिए।

यद्यपि यह रणनीति PT सरकार द्वारा ब्राजील के चुनावी खेल लोकतंत्र–विरोधी नियमों की स्वीकृति से जटिल हो गई। इसमें प्रथम लूला सरकार के दौरान संसदीय समर्थन को सीधे खरीदने की कोशिश सम्मिलित थी। 2014 तक लूलिस्ता प्राधान्य को आम जनता की निष्क्रिय सहमति और संघ एवं सामाजिक आंदोलन के नेताओं की सक्रिय सहमति दोनों के पुनरूत्पादन में उल्लेखनीय सफलता मिली।

>लूलीवाद के विरोधाभास

फिर भी, वर्तमान संकट का पूर्वाभास होते हुए, 2003 और 2014 के दौरान आर्थिक विस्तार में सामाजिक विरोधाभास पहले से ही स्पष्ट थे। औपचारिक वैतनिक कार्य में प्रभावशाली वृद्धि के बावजूद, शासन में पीटी के पहले दशक के दौरान सृजित नौकरियों में से 94% में केवल न्यूनतम मासिक मजदूरी का 1.5 (मोटे तौर पर 250 अमरीकी डालर प्रति माह) या उससे भी कम का भुगतान हुआ। 2014 तक, अर्थव्यवस्था के धीमी होने के साथ, नये रोजगार का 97.5% इसी श्रेणी में था और अधिकांशतः महिलाओं, युवा लोगों और अश्वेतों द्वारा कब्जा किये गये थे–अर्थात् उन कामगारों द्वारा जो पारंपरिक रूप से कम कमाते हैं और जिनके साथ अधिक भेदभाव होता है।

उसी समय, वर्ष दर वर्ष, रोजगार के टर्नआवर की दर में वृद्धि के साथ कार्यस्थल पर होने वाली दुर्घटनाओं और मौतों की संख्या में वृद्धि होती गई। ये दोनों पैटर्न स्पष्ट रूप से काम की गुणवत्ता में कुछ गिरावट का संकेत देते हैं। 2014 में स्थापित, डिल्मा राउसेफ के द्वितीय शासन के दौरान गहराते आर्थिक संकट और मित्तव्यत्तता की नीतियों के तरफ झुकाव ने इस प्रतिगामी प्रवृत्तियों को मजबूत किया और यूनियन के कार्यकर्त्ताओं को हड़ताली कार्यवाही के लिए उकसाया।

यद्यपि इसने प्रारम्भ से ही लड़खड़ाना शुरू कर दिया था, अनिश्चित सर्वहारा वर्ग के समर्थन ने 2014 के संसदीय चुनाव के द्वितीय चक्र में डिल्मा राउसेफ की जीत को सुनिश्चित किया लेकिन इस समर्थन ने माना कि PT सरकार औपचारिक (यद्यपि निम्न गुणवत्ता वाले और कम भुगतान वाले) रोजगार बनाये रखेगी। लेकिन खर्चों पर संघीय कटौती द्वारा संचालित संकुचन ने शहरी Precariat और संगठित मजदूर वर्ग के मध्य बेरोजगारी में वृद्धि की है। नवीनतम शोध के अनुसार, ब्राजील की बेरोजगारी दर पिछले बारह महीनों में 7.9% से 10.2% तक बढ़ गई है।

दूसरी तरफ, पारंपरिक मध्यम वर्ग एक स्पष्ट रूप में दक्षिणपंथी आर्थिक एजेण्डा और राजनीति की दिशा में विकसित हुए हैं–जिसमें वे लोग भी सम्मिलित हैं जो PT और मुख्य श्रम संघ फैडरेशन CUT के साथ कम से कम 2005 के ''मेन्सालाओ'' नामक वोट के लिए रिश्वत घोटाले तक, सम्बद्ध थे। ऐसा क्यों था कि कल्पना करना मुश्किल नहीं है। घरेलू कामगारों के रोजगार के नियमनिष्ठ होने में प्रगति से नौकरानियों के वेतन में वृद्धि हुई जबकि गर्माये श्रम बाजार ने सामान्य रूप से सेवाओं की कीमतों में वृद्धि की–जिसका तत्काल प्रभाव मध्यमवर्गीय जीवन शैली पर पड़ा। इसके साथ बड़े पैमाने पर गरीब परिवारों के लिए अधिक मजदूरी से जुड़े खपत में वृद्धि का मतलब है कि श्रमिकों ने पूर्व में पारंपरिक मध्यम वर्ग के लिए आरक्षित स्थान जैसे शॉपिंग मॉल और हवाई अड्डों पर ''कब्जा'' कर लिया है।

अंत में, श्रमिकों के बच्चों के लिए कम गुणवत्ता वाले निजी विश्वविद्यालयों में बढ़ती रिक्तियों ने केवल मध्यम वर्ग के बच्चों के लिए पूर्व में उपलब्ध नौकरियों में प्रतिस्पर्धा को बढ़ाया है। जब राजकीय पेट्रोलियम कम्पनी पेट्रोबास में रिश्वत और हवाले से जुड़ा

>>

"Petrolao" घोटाला सामने आया तो मध्यम वर्ग की असन्तुष्टता विरोध की एक विशाल लहर, जो प्रतिक्रियावादी राजनैतिक एजेण्डा से प्रेरित थी, के रूप में फूटा।

अतः कांग्रेस में राउसेफ सरकार के समर्थन में ह्रास एक जैविक/सावयवी संकट, जिसकी जड़े गहरी मंदी में डूबे देश की सामाजिक संरचना में पाई जाती हैं, का सबसे दृष्टिगोचर चेहरा है। अनिश्चित रोजगार के सृजन और आय–वितरण के वि–संकेद्रण के आधारित ब्राजील का विकास का मॉडल अधीनस्थ वर्गों की सहमति को आकर्षित करने को तो छोड़ अब निगमीय/कार्पोरेट लाभ की गारण्टी देने में भी असमर्थ है।

>महल में तख्तापलट

बिगड़ते अंतर्राष्ट्रीय संकट का सामना कर रहे, निजी बैंकों की अगुवाई में ब्राजील के व्यापार के मुख्य प्रतिनिधियों ने सरकार से मित्तव्यत्तता के उपायों को और गहरा करने की माँग की। बड़ी कम्पनियों के लिए, मंदी के समायोजन को गहराने वाली, बेरोजगारी में वृद्धि और वर्तमान हड़ताली चक्र को रोकतने वाली नतियाँ अलोकप्रिय सुधारों जैसे सामाजिक सुरक्षा और श्रमि अधिकारों में कटौती की एक श्रंखला को लागू करने की ओर एक आवश्यक कदम लगती है।

यह प्रोजेक्ट वर्तमान पीढ़ी सरकार की वापसी से पोषित हुआ है। डिल्मा के द्वितीय जनादेश के प्रारम्भ में लागू राजकोषीय समायोजन ने 53 लाख मतदाताओं, जो उसके रोजगार, सामाजिक कार्यक्रम और श्रम अधिकारों को बनाये रखने के चुनावी वादों से आकर्षित हुए थे, की उम्मीदों को धोखा दिया। द्वितीय राउसेफ सरकार की परिणामी अलोकप्रियता सामाजिक वर्गों के मध्य असमानताओं में कमी के उपर मध्यम वर्ग की असन्तुष्टता से और भड़की। जब संघीय पुलिस के ऑपरेशन लावा जातो ने विशेष रूप से पेट्रोबास भ्रष्टाचार योजनाओं में शामिल पी टी राजनेताओं पर ध्यान

ब्राजील पर तेरह वर्षों तक शासन करने वाली वर्कर्स पार्टी के नेता, पूर्व राष्ट्रपति लूला और महाभियोग वाली राष्ट्रपति राउसेफ

केन्द्रित करने का निर्णय लिया, ब्राजीलियाई सड़कों पर उतर आये और सरकार को गिराने की माँग करने लगे।

इस लामबंदी ने 2014 में हारे हुए राजनैतिक दलों का महाभियोग की प्रक्रिया प्रारम्भ करने के लिए प्रोत्साहित किया। ब्राजील सामाजिक लोकतंत्र दल (PSBD) और ब्राजील डेमोक्रेटिक मूवमेंट दल (PMBD) के मध्य बातचीत तेज हो गई और PMBD के चुनावी घोषणापत्र "A bridge to the future" पर अभिमुखित हुई। यह घोषणा पत्र वास्तविक रूप में शिक्षा, स्वास्थ्य और सामाजिक कार्यक्रमों पर खर्चे की कीमत पर बैंकों को सरकारी ऋण की चुकौती सुनिश्चित करने का एक वादा था।

सबसे महत्वपूर्ण, रूढ़िवादी राजनैतिक ताकतें ब्राजील की सरकार को इसलिए नहीं गिराने की कोशिश कर रही थी कि राउसेफ ने लोकप्रिय क्षेत्रों को क्या दिया है बल्कि उन चीजों के लिए जो वह उद्यमियों को देने में असफल रहीं जैसे एक और अतिवादी राजकोषीय समायोजन जिसके लिए संविधान को बदलने की आवश्यकता होगी, सामाजिक सुरक्षा में सुधार करना और मुख्य श्रम सुरक्षा उपयों को वापिस लेना। लेकिन दूसरी तरफ, अधिकांशतः पी टी द्वारा नियंत्रित श्रम संघ अभी भी ऐतिहासिक हड़ताली चक्र में फँसे हुए हैं।

अतः वर्तमान में ब्राजील गतिरोध की स्थिति में है। तख्तापलट ने मजबूत लोकप्रिय प्रतिरोध जिसके गहराने की उम्मीद है, का सामना किया। ऐसा कांग्रेस द्वारा अवैध सरकार द्वारा अपनाये गये प्रतिगामी उपायों को अपनाने के बावजूद दिखाई देता है और अप्रत्याशित सामाजिक संघर्ष का काल अपरिहार्य प्रतीत होता है। ■

रूये ब्रागो से पत्र व्यवहार हेतु पता
<ruy.braga@uol.com.br>

[1] On the activities of these three fractions of the Brazilian subaltern classes in the last decade see: André Singer, *Os sentidos do lulismo: reforma gradual e pacto conservador* (São Paulo, Companhia das Letras, 2012); Ruy Braga, *A política do precariado: do populismo à hegemonia lulista* (São Paulo: Boitempo, 2012); and Roberto Véras de Oliveira, Maria Aparecida Bridi and Marcos Ferraz, *O sindicalismo na Era Lula: paradoxos, perspectivas e olhares* (Belo Horizonte, Fino Traço, 2014).

> श्रम राजनीति एवं अर्जेन्टीना में नवउदारवाद की वापसी

रोडोल्फो एल्बर्ट, कॉनिसेट और ब्योनर्स आयर्स विश्वविद्यालय, अर्जेन्टीना और आई एस ए की श्रम आंदोलन की शोध समिति (RC44) के सदस्य

उत्तरी ग्रान ब्यूनस आयर्स में स्थित औद्योगिक उद्यमों में छंटनी के खिलाफ प्रदर्शन करते हुए श्रमिक सेबेस्टियन लिनेरोस द्वारा फोटो

22 नवम्बर 2015 को अर्जेन्टीना के नागरिकों ने मौरिसियो माकरी को 2015–19 के कार्यकाल के लिए, तीन प्रतिशत से भी कम अंतर से राष्ट्रपति निर्वाचित किया। पेरिनोस्ता उम्मीदवार डेनियल सियोली की माकरी द्वारा हार ने लंबे किरच्नेरिस्ता दशक 2003–2015 के अंत को चिन्हित किया। अर्थव्यवस्था में बढ़ते हस्तक्षेप और सीमित धन पुनर्वितरण के काल के बाद भ्रष्टाचार विरोधी विमर्श के साथ मध्यमार्गी दक्षिणपंथी उम्मीदवार अब अर्जेन्टीना को नेतृत्व प्रदान कर रहा है।

इस जीत की व्याख्याओं ने शहरी मध्यम वर्ग की लोकाधिकार –विरोधी लामबंदी और अर्जेन्टीना की गतिहीन अर्थव्यवस्था पर फोकस किया है, लेकिन हार की किसी भी व्याख्या में औद्योगिक श्रमिकों की बदलती राजनीति पर कुछ चर्चा भी शामिल होनी चाहिए। किरच्नेरिस्ता शासन के संकट के बीज प्रगतिशील धन वितरण और लगातार श्रमिक विखण्डन के विरोधाभासी मेल में जरूर पाये जायेंगे। किरच्नेर के साथ अपने गठबंधन के द्वारा अर्जेन्टीना की पुरानी ट्रेड यूनियन नौकरशाही ने खण्डित औद्योगिक नागरिकता के निर्माण में मदद की है जबकि वामपंथी अभिमुखन वाली जमीनी/आधारिक यूनियनों ने दीर्घस्थायी असमानताओं के प्रति विरोध जुटाने में मदद की। एक बार जब गतिहीन अर्थव्यवस्था ने सरकार के सीमित पुनर्वितरण के कार्यक्रमों के आधार को नष्ट कर दिया, रूये ब्रागा द्वारा ''अनिश्चित प्राधान्य'' कहलाने वाले सामाजिक विखण्डन ने चुनावी हार में योगदान दिया। आने वाले नवउदारवाद के आक्रामक प्रतिरोध को उन्हीं जमीनी यूनियनों की आवश्यकता है जिन्होंने किरच्नेरिस्ता सरकार के दौरान आर्थिक असुरक्षा से लड़ाई की थी।

2000 के दशक के अंत में, जैसे ही अधिकांश दुनिया 2008 के वित्तीय संकट से उबरने लगी थी, अर्जेन्टीना ने एक भिन्न प्रकार के पुनर्जन्म का अनुभव किया : एक नया "sindi calisneo de base" (जमीनी स्तर पर लोकतांत्रिक संघवाद) आंदोलन अर्जेन्टीना के 2001–2002 के आर्थिक संकट जिसने देश के गर्वित श्रमिक संघ आंदोलन का सूत्रपात/अंत किया के दस वर्षों पश्चात श्रम के आश्चर्यपूर्ण पुनरोद्धार का पूर्वाभास देता प्रतीत हो रहा है। उत्तरी ग्रान ब्योनस आयर्स के एक दरिद्र इलाके लोस तिलोस में सहवासियों ने बेहतर बुनियादी सुविधाओं और आवास की माँग और इस बात पर अड़ने के लिए कि कम्पनियाँ पास की नदी को प्रदूषित करना बंद करें, भूमि अधिग्रहण का संयोजन किया। एक औद्योगिक क्षेत्र के नजदीक होने के बावजूद, इस इलाके के अधिकांश निवासी बेरोजगार थे या ''अनौपचारिक अर्थव्यवस्था'' में कार्यरत थे।

हैरानी की बात है कि लोस तिलोस के 2010 के विरोध प्रदर्शन को आसपास के औद्योगिक उद्यमों में कार्यरत औपचारिक कार्यश्रेत्र के कामगारों का प्रतिनिधित्व करने वाले श्रम संघों से मजबूत समर्थन मिला। श्रम के पुनरोद्धार की प्रक्रिया के रूप में, उत्तरी ग्रान ब्योनर्स आयर्स के कई औद्योगिक उद्यमों में सक्रियवाद जमीनी स्तर के लोकतांत्रिक संघों के नेतृत्व में पनपा है। लेकिन फिर भी, अधिकांश

> >

राष्ट्रीय संघ अभी भी 2003 में सत्ता में आने वाली किरच्नेरिस्ता सरकार के सहयोगी, पारंपरिक नौकरशाह नेताओं द्वारा आगे बढ़ाये गये। आम तौर पर, इन नौकरशाही संघों ने अपवर्जनात्मक रणनीति का अनुकरण किया और शहरी निर्धन की आजीविका के संघर्ष के साथ कदाचित ही एकजुटता दिखाई और अक्सर नियोक्ता को कमजोर कामगारों को अनिश्चित शर्तों पर, कार्य पर रखने की अनुमति दी, जब तक कि मुख्य कामगारों को उच्चतर वेतन मिले।

परन्तु 2000 के दशक के अंत में उभरने वाला जमीन स्तर का श्रम आंदोलन भिन्न था : वामपंथी झुकाव वाले संघों ने अनिश्चित और गैर–अनिश्चित कामगारों के संघर्षों को कार्यस्थल के अंदर ही एकजुट करने, अनिश्चित ठेकों को खत्म करने और सभी कामगारों को समान अधिकार देने की कोशिश की।

इस आश्चर्यजनक श्रमिक वृद्धि के पीछे क्या था? विरोधाभास यह है कि अर्जेन्टीना की उत्तर–उदारवादी राजनैतिक अर्थव्यवस्था ने नौकरशाही संघों द्वारा पोषित एक असामान्य रूप से विखण्डित औद्योगिक नागरिकता का निर्माण किया। 2001–2002 के विनाशकारी आर्थिक और सामाजिक संकट के बाद, अर्जेन्टीना के मुख्य निर्यातओं की कीमतों में वृद्धि के साथ अर्जेन्टीना की अर्थव्यवस्था भी बढ़ने लगी। तीव्र वृद्धि के संदर्भ में, परोनिस्ता सरकार ने कृषि निर्यातों पर करों में वृद्धि की, घरेलू बाजार का विस्तार कर रोजगार सृजन को बढ़ावा दिया और स्थापित श्रमिक संघों की सामूहिक सौदेबाजी के समझौतों को समर्थन दिया। जनोपयोगी सेवाओं के लिए बढ़ते अनुदान और निर्धनतम नागरिकों की तरफ निर्देशित नई सामाजिक नीतियों के साथ बेरोजगारी में भारी कमी और वास्तविक मजदूरी में वृद्धि का परिणाम जनसाधारण में उपभोग में विस्तार में हुआ। व्यवसायिक संरचना के संदर्भ में आर्थिक वृद्धि के इस पैटर्न ने कुल कार्यबल में वेतनभोगी औद्योगिक कामगारों का अपेक्षित भार बढ़ा दिया।

हालाँकि, इस पुनर्वितरण की नीति की अपनी सीमाएँ थीं। अर्थव्यवस्था के विस्तार के साथ पूँजी उत्तरोत्तर संकेन्द्रित हो गई जबकि बड़े राष्ट्रीय और बहुराष्ट्रीय निगमों ने अपने मुनाफे की दर में वृद्धि की। दूसरी तरफ श्रमिकों को उच्च स्तर की श्रम औपचारिकता और नौकरी की अनश्चितता का सामना करना पड़ा। लेतिन अमरीका और कैरिबियन के सामाजिक–आर्थिक डाटाबेस (http://sedlac.econo.unlp.edu.ar), के अनुसार 2010 तक अर्जेन्टीना के कार्यशील श्रम बल का 45.5 प्रतिशत अनौपचारिक रूप से कार्यरत था। यह एक दशक के पूर्व के आर्थिक संकट की पराकाष्ठा से बेहतर था लेकिन निम्न आय वाले परिवारों के लिए नौकरी और आय की असुरक्षा का महत्वपूर्ण स्त्रोत था।

2010 में क्रिस्टीना किरच्नेर की सरकार धन के अभी भी सीमित पुनर्वितरण और कामगार वर्ग के निरन्तर विखण्डन के मेल से अर्जेन्टीना के नवउदारवादी ध्वँस से बाहर निकलने का मार्ग ढूँढ़ रही थी। लेकिन कुछ ही सालों में, अर्जेन्टीना की अर्थव्यवस्था वैश्विक संकट के पूरे प्रभाव का अनुभव करने लगी। वैश्विक वस्तुओं की कीमतें गिर गई और सरकार अपने सीमित पुनर्वितरण के कार्यक्रमों को चालू रखने के लिए संघर्ष करने लगीं। 2011 में पेरोनिस्ता राजनैतिक कुलीन ने CGT (General Confederation of Labour) के राष्ट्रीय सचिव की राजनैतिक महत्वकांक्षा को सहन करने से मना करते हुए नौकरशाही संघों के एक खण्ड के साथ अपने राजनैतिक गठबंधन को छोड़ दिया। एक दशक पूर्व के संकट से उभरा आर्थिक और राजनैतिक गठबंधन अब कम प्रभावशाली होने लगा।

2014 तक, अर्जेन्टीना के पेसों के अवमूल्यन और मुद्रास्फीति के दबाबों ने निर्विवाद रूप से गरीबी में वृद्धि और वास्तविक मजदूरी में गिरावट को पैदा किया। सरकार के अनिश्चित प्राधान्य के क्षरण के साथ, पेरोनिस्ता उम्मीदवार डैनियल सियोली दक्षिणपंथी उम्मीदवार मौरेसियो माकरी से 2015 का राष्ट्रपति चुनाव हार गये।

कार्यालय में अपने पहले छः महीनों में, माकरी के उपागम को अर्जेन्टीना के नवउदारवादी वापसी की कोशिश के रूप में वर्णित किया जा सकता है। सरकार सरकारी संस्थाओं से बड़े पैमाने पर छँटनी और महत्वपूर्ण जनोपयोगी सेवाओं, जैसे बिजली और जल की आपूर्ति पर पहले लागू, अनुदान में कटौती जैसे कई बाजार–समर्थक सुधारों को लागू किया। पेसों के अवमूल्यन का अर्थ है कि अधिकांश मजदूरी साधारण उपभोक्ता वस्तुओं की मुद्रास्फीति के साथ तालमेल नहीं रख पाईं और (2014 की तरह) गरीबी में जबर्दस्त वृद्धि हुई। आक्रामक नये श्रम–विरोधी उपायों को पारित करने के साथ, सरकार ने कृषि और खनन निर्यातों पर करों में कटौती की। 29 अप्रेल को छँटनी के खिलाफ एक राष्ट्रीय विरोध हुआ लेकिन उसके बाद से कोई और राष्ट्रव्यापी कार्यवाही नहीं हुई है।

हालाँकि, सरकार के स्पष्ट श्रमिक–विरोधी अभिमुखन के बावजूद, राष्ट्रीय श्रमिक नेता अपने संघों की संस्थागत शक्ति को बनाये रखने और श्रमिकों के श्रम अधिकारों की रक्षा करने की बजाय भ्रष्टाचार के व्यक्तिगत जाँच से बचाव के प्रति अधिक चिंतित हैं।

किरच्नेरिस्ता काल के दौरान अनौपचारिकता और अनिश्चितता का सामना करने वाले अभी भी नवजात जमीनी स्तर के संघों का क्या होगा? क्या यह संभव है कि कामगार वर्ग का अधिकांश हिस्सा निकट भविष्य में अनौपचारिक और अनिश्चित श्रमिकों के साथ एकजुटता की रणनीति का समर्थन करता है? यह अभी नहीं कहा जा सकता है लेकिन हाल के अतीत पर नजर डालना इसमें शायद मदद कर सकता है। 2000 के दशक के अंत में निम्नीकृत कार्य के प्रतिकूल वातावरण और नौकरशारही संघों में भी, अर्जेन्टीना के कुछ जमीनी संघों ने कामगार वर्ग के विभिन्न भागों के साथ सफल गठबंधन बनाने में कामयाबी हासिल की है। यद्यपि जब इन संघों ने राष्ट्रीयस्तर पर एकजुटता को बढ़ाने का प्रयास किया तो इन्हें अधिक चुनौतियों का सामना करना पड़ा, यह स्पष्ट लगता है कि नवउदारवाद की वापसी का सामना करने की श्रमिक आंदोलन की क्षमता इस प्रकार की रणनीति पर निर्भर होगी। इसका विकल्प बाजार सुधारों के समर्थन के नये चक्र को मानने को उत्सुक श्रमिक नेता हो सकते हैं। यह ऐसा अनुपालन है जो अर्जेन्टीना कामगारों की अधिक बिगड़ती निर्धनता की कीमत पर ही हो सकता है। ■

रोडोल्फो एल्बर्ट से पत्र व्यवहार हेतु पता <elbert.rodolfo@gmail.com>

> अमरीकी अधिकार : एक गहरी कहानी

अर्ली रसेल हॉशचाइल्ड, केलिफोर्निया विश्वविद्यालय, बर्कले, यू.एस.ए.

चुनावी अभियान के दौरान डोनाल्ड ट्रम्प

काफी यूरोप, भारत, चीन एवं एशिया की तरह अमरीकी राजनैतिक दक्षिणपंथ भी गतिशील है। कुछ तरीकों से, अमरीका का वामपंथी सांस्कृतिक झुकाव–प्रथम अश्वेत राष्ट्रपति, एक संभावित महिला राष्ट्रपति, समलैंगिक विवाह–इस उभार को अस्पष्ट कर सकता है। लेकिन यह यहाँ है। पिछले कुछ दशकों से, रूढ़िवादी आवाजें मुखर हो गई हैं : सबसे लोकप्रिय केबल टी. वी. चैनल और सर्वाधिक लोकप्रिय दैनिक रेडियो वार्ता स्पष्ट दक्षिण पंथ झुकाव दर्शाते हैं। वाशिंगटन डी. सी. में फैडरल कांग्रेस के दोनों सदन रिपब्लिकनों के हाथ में हैं। रिपब्लिकन डेमोक्रेट से कहीं अधिक राज्य विधायीका चैम्बर और कई राज्य गवर्नरों पर कब्जा किये हुए हैं। देश के 50 राज्यों में से 23 में, रिपब्लिकन का राज्य विधायिका के दोनों सदन और गर्वनरशिप पर नियंत्रण है और इसके समानान्तर डेमोक्रेट की संख्या 7 है। अमरिकियों का कुछ 20 प्रतिशत – 45 लाख लोग अब बंकर विरोधी चार्य पार्टी आंदोलन का उत्सुकतापूर्वक समर्थन करते हैं और हाल ही के महीनों में राष्ट्रपति पद का लोकप्रिय देशी रिपब्लिकन उम्मीदवार डोनाल्ड ट्रम्प ने इतिहास में सबसे अधिक रिपब्लिकन प्राइमरी मत जीते।

अमरीकी दक्षिणपंथ को उसके अन्यत्र समकक्षों से जो भिन्न करता है वह है फैडरल रकार की नफरत। दक्षिणपंथ सरकारी लाभों : बेरोजगारी बीमा, चिकित्सा सहायता, कॉलेज वित्तीय सहायता, स्कूल में दिन का भोजन और कहीं अधिक, में कटौती करने को कहता है। प्रमुख रिपब्लिकन नेताओं ने फैडरल सरकार के समूचे विभाग–शिक्षा, ऊर्जा, वाणिज्य और आंतरिक के निर्मूलन का आह्वान किया है। 2015 में सदने के 58 रिपब्लिकन सदस्यों ने आंतरिक राजस्व सेवा को समाप्त करने के लिए मतदान किया। कुछ ने तो सभी पब्लिक स्कूलों को बन्द करने का भी आह्वान किया।

इन नेताओं के जमीनी समर्थकों में सरकार के प्रति कुंठा और गुस्से का भाव है। वह बड़ा प्रश्न, जिसने मुझे अमरीकी दक्षिणपंथ के गढ़–लुइसियाना में एक पंच वर्षीय नृवंश विज्ञानी अध्ययन प्रारम्भ करने के लिए प्रेरित किया, था क्यों? मेरी पुस्तक, "strangers in their own land : Anger and Mourning on the American Right" के लिए जैसे ही मैंने साक्षात्कार प्रारम्भ किये, पहेली और भी उलझ गई। देश के दूसरा सबसे गरीब राज्य, लुइसियाना में अन्य किसी राज्य की अनुपात में अधिक नाकाम रहने वाले विद्यालय, अधिक बीमार और मोटे निवासी थे। अतः इसे फैडरल मदद की आवश्यकता थी और उसे मिली; राज्य बजट का 44 प्रतिशत फैडरल सरकार से आया था। तो, मैंने सोचा, इतने सारे चाय पार्टी

> >

समर्थक नाराज क्यों थे? और यह गुस्सा या कोई अन्य मनोभाव राजनीति को कैसे स्थापित कर सकता है?

जहाँ कई विश्लेषक दक्षिणपंथी व्यक्तियों के निजी अनुभवों के बाहर से इन प्रश्नों को संबोधित करते हैं, मैं उस अनुभव को अंदर से अनुभव करना चाहता था। इसलिए मैंने दक्षिण–पश्चिम लुइसियाना की रिपब्लिकन महिलाओं, चर्च सेवाओं और राजनैतिक अभियान रैलियों की बैठकों में भाग लिया। मैंने लोगों को उनके बड़े होने वाले स्थान, जहाँ वे स्कूल गये, जहाँ उनके माँ–बाप दफनाए गये, दिखाने को कहा। मैंने अपने नये लुइसियाना मित्रों की हाई–स्कूल वार्षिक–पत्रिका को देखा, ताश खेली और मैं उनके साथ मछली पकड़ने गया। कुल मिलाकर, मैंने 60 लोगों का साक्षात्कार किया–उसमें से 40 श्वेत, अकि उम्र के, चाय पार्टी के ईसाई समर्थक थे। मैंने 4600 पृष्ठों के लिखित साक्षात्कार एवं क्षेत्र टिप्पणियाँ एकत्रित की।

मैंने एक पद्धति भी तैयार की। पहले, मैंने सुना। फिर मैंने उनके अनुभव का, राय और तथ्यों से खाली एक रूपक वर्णन, एक जैसा महसूसस करो वर्णन, जिसे मैं ''गहन कहानी'' कहता हूँ, का चित्रण किया। मुझे विश्वास है हमारी सभी राजनैतिक मान्यताओं के अंतर्निहित एक ऐसी कहानी है। इस मामले में, यह इस प्रकार हैं :

आप पहाड़ी पर जाने वाली एक लम्बी पंक्ति, जैसा कि तीर्थ पर होता है, के मध्य धैर्य से खड़े हैं। आपके पास खड़े दूसरे लोग आप जैसे ही–श्वेत, अधिक उम्र के, ईसाई, मुख्य रूप से पुरूष, दिखाई देते हैं। पहाड़ी के शीर्ष पर, पंक्ति में खड़े सब का लक्ष्य, अमरीकी सपना है। फिर देखिये! अचानक आप लोगों को आपके आगे से पंक्ति तोड़ते हुए देखते हैं। जैसे वे लाइन तोड़ते हैं, आप पीछे जाते लगते हैं। वे ऐसा कैसे कर सकते हैं? वे कौन हैं?

कई अश्वेत हैं। संघीय सकरात्मक योजनाओं से, इन्हें कॉलेजों एवं विश्वविद्यालयों में सीट, प्रशिक्षुता, नौकरियों, कल्याण लाभ और दोपहर के मुफ्त भोजन में प्राथमिकता दी जाती है। दूसरे लोग पूर्व में केवल पुरूष नौकरियों की इच्छुक घमंडी महिलाएँ, अप्रवासी, शरणार्थी और आपके कर डालरों से भुगतान पाने वाले विस्तृत होते उच्च आय वाले सार्वजनिक क्षेत्र के कामगार, भी आगे जा रहे हैं। यह कहाँ खत्म होगा?

इस रूकी हुई लाइन में इंतजार करते हुए, आपसे इन सब के लिए दुख प्रकट करने के लिए कहा जाता है। लोग नस्लवाद, भेदभाव, लैंगिकवाद की शिकायत करते हैं। आप उत्पीड़ित अश्वेतों, दबाई गई महिलाओं, थके हुए अप्रवासी, गुप्त समलैंगिक, हताश शरणार्थियों की कहानियाँ सुनते हो। लेकिन किसी बिन्दु पर स्वयं से कहते हैं–आपको मानवीय सहानुभूति के लिए सीमाएँ बद करनी पड़ेगी विशेष तौर पर जब यदि उन में से कुछ ऐसे हैं जो नुकसान कर सकते हैं।

आप एक दयालु इंसान हैं। लेकिन अब आपको आपके आगे जाने वाले व्यक्तियों के प्रति सहानुभूति रखने कहो कहा जा रहा है। आपने स्वयं भी काफी सहा है, लेकिन आप इसके बारे में शिकायत नहीं कर रहे हैं, या मदद माँग रहे हैं। ऐसा आप गर्व से कह रहे हैं। आप समान अधिकार में विश्वास करते हैं। लेकिन आपके अपने अधिकारों के बारे में क्या है? क्या उनका कोई अर्थ नहीं? यह अनुचित है।

फिर आप एक अश्वेत राष्ट्रपति, जिसका मध्य नाम हुसैन है, को पंक्ति तोड़ने वालों की तरफ हाथ हिलाते हुए देखते हैं। वह उनकी तरफ है न कि आपकी तरफ। वह उनका राष्ट्रपति है, आपका नहीं। और क्या वह भी पंक्ति तोड़ने वाला नहीं है? एक संघर्ष करने वाली एकल माँ का पुत्र कैसे कोलम्बिया एवं हार्वर्ड की फीस चुका पाया? शायद कुछ गुपचुप हुआ है। और क्या राष्ट्रपति एवं उनके उदारवादी समर्थक आपके पैसे का इस्तेमाल स्वयं की मदद करने के लिए नहीं कर रहे हैं? आप फैडरल सरकार की मशीन को बंद करना चाहते हैं जिसे वह और उदारवादी आपको लाइन में वापिस धकेलने के लिए काम में ले रहे हैं।

मैं अपने उत्तरदाताओं के पास यह पूछने के लिए कि, क्या यह गहन कहानी उनकी भावनाओं का वर्णन करती है, वापिस लौटा। जहाँ कुछ ने कहानी में यहाँ या वहाँ बदलाव किया (''तो हम अन्य पंक्ति में चले जाते हैं.....'' या ''यह हमारे पैसे हैं जिसे यह बाँट रहे हैं.....''), सभी ने दावा किया कि यह कहानी उनकी है। एक ने मुझसे कहा, ''मैं आपका रूपक जीता हूँ।'' दूसरे ने कहा, ''आपने मेरा मन पढ़ लिया।''

इस कहानी को सच साबित करने के लिए क्या हुआ? एक शब्द में, प्रतिष्ठा में कमी। चाय पार्टी के समर्थक जिन्हें मैं मिला, वे आम तौर पर गरीब नहीं थे, लेकिन कई गरीबीं में पले–बढ़े थे और जिन्होंने परिवारों और मित्रों को गरीबी में डूबते हुए देखा था। लेकिन धन ही सुख और प्रतिष्ठा का एकमात्र स्त्रोत नहीं था। श्वेत, विषमलिंगी ईसाइयों के रूप में कईयों ने जनसांख्यिकीय गिरावट (एक महिला ने मुझे बताया ''हमारे जैसे बहुत कम लोग हैं'') का भय, या फिर धार्मिक अल्पसंख्यक (''लोग अब चर्च नहीं जाते'', आप शुभ बड़ा दिन नहीं कह सकते, आप शुभ छुट्टियाँ कहना पड़ेगा'') बनने का भय था। कुछ ने सांस्कृतिक अल्पसंख्यकों की तरह महसूस किया। हम स्वच्छता से रहने वाले लोग हैं, लोग जो नियमों से चलते हैं लेकिन हमें लैंगिकवादी, होमोफोबिक, नस्लवादी, अज्ञानी के रूप में देखा जाता है–वे सब लेबल जिसे उदारवादी हमारे लिए काम में लेते हैं'')। यदि वे सम्मान के लिए, अक्सर ग्रामीण मध्य–पश्चिम या दक्षिण में, अपने प्रिय घर की ओर मुड़ते हैं तो कुछ लोग ''रेडनेक'' की तरह अपमानित महसूस करते हैं। तब, गहरी कहानी के पीछे जगहों से उनके सम्मान में कमी–एक सम्मान सिकुड़न थी।

एक गहरी कहानी दर्द (दूसरे आप के आगे तोड़ कर निकलते हैं) का वर्णन करती है। वह दोष (एक दुष्ट इरादों वाली सरकार) का वर्णन है और वह उससे बचाव (चाय पार्टी राजनीति) की तरफ इशारा करती है। वह एक भावनात्मक उत्तरदायी व्यवस्था भी प्रदान करती है जो यह स्थापित करती है कि जो पंक्ति में इंतजार कर रहे है या जिन्होंने लाइन तोड़ी है, के लिए कितनी सहानुभूति होनी चाहिए, सरकार के प्रति कितना अविश्वास है या सरकारी लाभार्थियों को कितना शर्मिन्दा किया जाना चाहिए। यह व्यवस्था नियमों को महसूस करने के लिए बुनियाद बनाती है–जो यह स्थापित करती है कि हमें क्या ''महसूस करना या नहीं करना चाहिए।'' यह अब गर्माये राजनैतिक संग्राम का मुख्य निशाना है। स्पष्ट रूप से या परोक्ष रूप से, अधिकाश सेवा नौकरियाँ कर्मचारियों से अपेक्षा करती हैं कि वे नियमों के अनुसार रहें (''उपभोक्ताओं पर नाराजा होना गलत है, वह हमेशा सही होता है'')। प्रशिक्षण के दौरान कर्मचारी अपने भावनाओं का प्रबंधन करना सीखते हैं और पर्यवेक्षक इस बात की निगरानी करते हैं कि वे ऐसा कितना अच्छी तरह करते हैं। इसी तरह, राजनैतिक विचारधाराएँ नियमों को महसूस करती हैं। नेता सहानुभूति, संदेह, दोष, शर्म का निरीक्षण करते हैं और रेडियो वार्ता मेजबान एवं समाचारवाचक इसे फैलाते हैं जिसे स्थानीय और इलेक्ट्रॉनिक समुदाय अपनी समीक्षा द्वारा जाँचते हैं।

वाम एवं दक्षिण नियमों के अधिक विपरीत सेट के अनुसार नियमों का पालन करते हैं। सामान्य तौर पर, वामपंथ अल्पसुविधा प्राप्त समूह, जो सरकारी सहायता प्राप्त करने के लायक माने जाते हैं, के प्रति सहानुभूति की माँग करता है; दक्षिणपंथ ऐसा नहीं

>>

फीनिक्स में भीड़ को अपने पसंदीदा विषयों में से एक–आव्रजन पर डोनाल्ड ट्रम्प सम्बोधित करते हुए

करता है। वामपंथ सरकार के इस हिस्से में विश्वास के लिये कहता है, दक्षिणपंथ इस पर संदेह करता है और इसे धिक्कारता है। वामपंथ सरकारी सहायता प्राप्ति के साथ गरिमा और पात्रता को जोड़ता है, दक्षिणपंथ इसके साथ शर्मिन्दगी को जोड़ता है।

इन दो आचारों के मध्य सांस्कृतिक युद्ध में, मेरे द्वारा अध्ययन किये गये चाय पार्टी समर्थकों पर वामपंथ के भावना नियमों का प्रभुत्व था और जिसे उन्होंने बहुत जोर से नापसन्द किया। ''हमने पर्याप्त पी. सी. (राजनैतिक सत्यता) कर लिया है।'' डोनाल्ड ट्रम्प अक्सर चिल्लाए और उन्होंने दक्षिणपंथीयों द्वारा दृढ़ता से पकड़ी गई भावना की गूँजाया। एक आदमी ने मुझे कहा, ''उदारवादी हमें अप्रवासियों और शरणार्थियों के लिए खेद महसूस कराना चाहते हैं। लेकिन ज्यादातर मैंने लोगों के झुँड को मैं गरीब, मैं गरीब, मैं गरीब कहते हुए देखा है....''। दूसरे ने कहा, ''उदारवादियों को सरकार की ओर से कुछ मिलता है और हमें नहीं–और मुझे हर्ष है कि मैं नहीं लेता यदि मुझे जरूरत नहीं है। लेकिन वे चाहते हैं कि हम उन्हें जो मिल रहा है कि लिए आभारी हो।'' और कई ने सरकारी मदद लेने में अत्यधिक शर्मिन्दगी को जोड़ा और धोखा देने वालों के लिए घृणा महसूस की। ''मैं ऐसे लोगों को जानता हूं जिन्होंने शिकार के मौसम में बेरोजगारी के लिए आवेदन किया।'' या, ''उस ट्रेलर पार्क में कई लोगों ने दौरे पड़ने का दावा कर विकलांगता सहायता ली है। मैं नहीं जानता वे अपना सिर ऊँचा कैसे रखते हैं। लेकिन वे करते हैं, और सरकार इसे प्रोत्साहित करती है।'' अधिकांश चाय पार्टी समर्थक इस विचार को नकारते हैं कि किसी को लाइन तोड़ने वालों से सहानुभूति सरकार की ओर आभार, या ''सरकारी मदद'' प्राप्ति की शर्म से मुक्ति महसूस करनी चाहिए।

परन्तु सब लोग जिनसे मैंने बात की, वे सहमत नहीं थे। वास्तव में, ऐसा लगा कि मेरे द्वारा साक्षात्कार किये दो धड़ों ने गहरी कहानी के भिन्न अंत सुने। पारम्परिक चाय पार्टी समर्थक लाइन तोड़ने के व्यवहार और ऐसा करने के लिए सरकार द्वारा पुरूस्कार, दोनों को काटना चाहते थे। दूसरी तरफ, डोनाल्ड ट्रम्प के अनुयायी सरकारी लाभों को रखना चाहते थे और उन्हें प्राप्त करने के साथ जुड़ी शर्मिन्दगी को हटाना चाहते थे। लेकिन वे इन लाभों को अप्रत्यक्ष रूप से मूल अमरीकियों, अच्छा हो कि वे श्वेत हों, तक ही सीमित करना चाहते हैं।

ट्रम्प की घोषणाएँ अस्पष्ट और बदलती रही हैं, लेकिन पंडितों ने देखा कि उन्होंने चिकित्सा सहायता में कटौती की माँग नहीं की है। बल्कि, वह कहते हैं कि वे ओबामा केयर जो अबीमाकृत को चिकित्सा कवरेज प्रदान करती है, को एक नये प्रोग्राम जो ''बहुत बढ़िया'' होगा से बदलने की योजना बना रहे हैं। ट्रम्प का शर्म का वितरण भी विशिष्ट महत्व का है। यद्यपि उन्होंने पूर्व युद्ध–बंदी (POW) हीरो जान मेक केन, एक विकलांग पत्रकार, फाक्स न्यूज टीकाकार एक महिला, मेक्सिकन, मेक्सिकन विरासत के अमरीकी जन्मे न्यायाधीश, सभी मुस्लिम और अपने सभी रिपब्लिकन विरोधियों की निंदा की है, उन्होंने चिकित्सा सहायता वाले या भोजन सहायता प्राप्त करने वालों को कभी शर्मिंदा नहीं किया।

लेकिन श्वेत लोगों के लिए कल्याण को वैधता प्रदान करने के लिए, ट्रम्प को इसे प्राप्त करने की क्रिया को मर्दाना बनाना पड़ा। यह ट्रम्प की अपील का एक गुप्त और शक्तिशाली स्त्रोत हो सकता है। वह उन पुरूषों की जो झगड़ा करते हैं, बंदूक रखते हैं, गुण्डे है और मर्दाना व्यवहार करते हैं, की प्रशंसा करते हैं। अधिकांश कल्याण प्राप्तकर्त्ता महिलाएँ, बच्चे और अश्वेत हैं। लेकिन वहाँ कई गरीब, या लगभग गरीब या गरीब होने से डरते श्वेत पुरूष हैं। ट्रम्प इशारा करते हैं कि सरकारी लाभ प्राप्त करना पुरूषों का कार्य भी हो सकता है। ट्रम्प बतलाते हैं कि आप अपनी पिक–अप पर बंदूक मार कर, झगड़ा शुरू कर सकते हो, माचो बन सकते हो और बेरोजगारी या भोजन सहायता के लिए कलंक मुक्त हो आवेदन कर सकते हो।

महत्वपूर्ण रूप से, ट्रम्प के कई श्वेत पुरूष अंत्यावसायी अनुयायी अश्वेतों द्वारा पहले भुगता समान गंभीर आर्थिक भाग्य : गायब होती नौकरियां, कम मजदूरी, निराशा के साक्ष्य, का सामना कर रहे हैं। ऐसे पुरूषों में उनके अमीर श्वेत पुरूष समकक्षों के बीच की तुलना में आनुपातिक तौर पर अधिक एकल पिता हैं, अधिक टूटे हुए विवाह, अधिक संतान और अधिक कठिन समय है। यदि अभी वे चिकित्सा सहायता पर नहीं हैं, तो भविष्य में हो सकते हैं–और इस तरह वे उसी सरकार मदद की जरूरत का विरोधाभास का सामना कर सकते हैं, जिसकी दक्षिणपंथी और वे स्वयं काफी समय से निंदा कर रहे थे। कल्याा से निर्लिप्तता प्रस्थिति का एक मुख्य सूचक था जो ''असली मर्द'' को ''असली नीचे'' से भिन्न करता था। लुइसियाना ट्रम्प समर्थकों के साथ मेरे साक्षात्कारों में, सरकारी लाभों के प्रति उनके समर्थन पर बात नहीं उठी, कम से कम पहले तो नहीं। परन्तु, ''नियमित लोगों'' के लिए सुरक्षा तंत्र के बारे में उसके विचारों के बारे में पूछने पर, एक ऑटो मैकेनिक ने कहा, ''ट्रम्प उसके खिलाफ नहीं है। यदि आप खाद्य–स्टेम्प का उपयोग इसलिए करते हो क्योंकि तुम एक कम–वेतन नौकरी कर रहे हो, आप नहीं चाहते कि कोई आप को असम्मान की दृष्टि से देखें।''

ट्रम्प चतुराई से अंत्यावसायियों को शर्म से मुक्त करते हैं लेकिन गैर–देशी या अश्वेत पुरूषों को नहीं। वास्तव में, गहरी कहानी का जवाब देते हुए, ट्रम्प ने अप्रवासी–विरोधी लेकिन ग्रेट ब्रिटेन, जर्मनी, फ्राँस, आस्ट्रिया और अधिकांश पूर्वी यूरोप में उभार पर कल्याण राज्य समर्थित दक्षिण पंथी लोकलुभावनवाद आंदोलन का निर्माण किया है। मेरा विश्वास है कि ये सभी दक्षिण पंथी आंदोलन गहन कहानी के रूपांतरों, जो भावनाएँ वे जगाते हैं और जिन विश्वासों की रक्षा करते हैं, पर आधारित हैं। ■

अर्ली हॉकशाइल्ड से पत्र व्यवहार हेतु पता <ahochsch@berkeley.edu>

[1] Hochschild, A. (2016) *Strangers in Their Own Land: Anger and Mourning on the American Right*. New York: New Press.

[2] See Hochschild, A. (1983) *The Managed Heart: Commercialization of Human Feeling*. Berkeley and Los Angeles: The University of California Press.

> ब्रिटेन में कार्पोरेट विश्वविद्यालय का उदय

हूव बेनोन, कारडिफ विश्वविद्यालय, यू. के.

यू. के. रिसर्च एक्सलेंस फ्रेमवर्क 2014 को भेजे गये शोध का सारांश

ब्रिटिश विश्वविद्यालय इतने बुनियादी तरीकों से बदल रहे हैं कि यह अनुमान लगाना कठिन है कि इसका अन्त कहाँ होगा। निश्चित तौर पर, यहाँ पर आज विश्वविद्यालय में कार्य एवं पाठन करना एक दशक पूर्व के अनुभव से काफी भिन्न है। स्टेफन कोलिनी ने हाल ही में कहा कि ''जिन्हें हम अभी भी विश्वविद्यालय कहते हैं, वे प्रायोगिक दक्षता और व्यावसायिक प्रशिक्षण के केन्द्र, जो समाज की ''आर्थिक रणनीति के अधीनस्थ हैं, के रूप में पुनः आकारित हो रहे हैं। इस सारांश में ब्रिटिश समाजशास्त्रीय संघ के अध्यक्ष के रूप में 2014 में जॉन हाल्मवुड के विदाई संदेश की प्रतिध्वनि सुनाई देती है। उन्होंने निष्कर्ष दिया कि ब्रिटिश विश्वविद्यालय व्यवस्था अब ''एक नवीकृत वंशवाद पूंजीवाद और उसकी हमेशा व्यापक होती असमानताओं'' की सेवा करती है। एक विषय के रूप में समाजशास्त्र पर परिवर्तनों का प्रभाव अभी तक पूर्ण रूप से स्पष्ट नहीं है, लेकिन यहाँ कुछ चिंताग्रस्त संकेत हैं।

> अनुदान : केन्द्रीय अनुदान से छात्र शुल्क

ऐतिहासिक रूप से–अर्थात् थैचर एवं ब्लेयर सरकारों से पहले–ब्रिटिश विश्वविद्यालय अर्द्ध–स्वतन्त्र धर्मार्थ संगठन थे। छात्रों की संख्या राष्ट्रीय स्तर पर तय होती थी, एवं प्रत्येक विश्वविद्यालय को, विभिन्न फार्मूलों पर आधारित, उचित अनुदान प्राप्त होता था। सामान्यतः इसे एक ''कुलीन'' व्यवस्था में देखा जाता था : केवल 10 प्रतिशत उच्च शिक्षा प्राप्त करने जाते थे जबकि ज्यादातर युवा तकनीकी एवं व्यावसायिक शिक्षा, प्रशिक्षुता एवं ''काम पर'' प्रशिक्षण की जटिल व्यवस्था से गुजरते हैं।

थैचर सरकार के अन्तर्गत, हालांकि, ब्रिटिश निर्माण क्षेत्र के ह्रास ने ''ज्ञान अर्थव्यवस्था'' द्वारा पुनर्जागरण की बातचीत को जगाया, जिसने ब्लेयर को यह तर्क देते कि ब्रिटेन के 50 प्रतिशत बच्चों को विश्वविद्यालय जाना चाहिए, ''शिक्षा, शिक्षा, शिक्षा'' पर जोर डालने के लिए प्रेरित किया। इस तरह और तेज गति से, विश्वविद्यालय सरकार की आर्थिक रणनीति का अहम् हिस्सा बने। यह ऐसा बदलाव था जो उच्च शिक्षा की जिम्मेदारी का दायित्व व्यापार एवं उद्योग विभाग में जाने से स्पष्ट हुआ। आज, यह उत्तरदायित्व व्यापार, नवाचार, और कौशल विभाग के पास है, जिसका नवीनतम नीति श्वेत पत्र–एक ज्ञान अर्थव्यवस्था के रूप में सफलता : उत्कृष्टता शिक्षण, सामाजिक गतिशीलता और छात्र चयन/चुनाव दिखाता है कि एक समय में काल्पनिक विचार कैसे प्रतिक्रियावादी परिवर्तन के लिए वैचारिक मंच प्रदान कर सकता है।

यह रणनीतिक परिवर्तन ब्रिटिश विश्वविद्यालयों के अनुदान में परिवर्तन जिसमें केन्द्रीय सरकार अनुदान से पूर्ण रूप से छात्र शुल्क आधारित व्यवस्था में परिवर्तन सम्मिलित था, ने आसान बनाया। 1998 में, नई लेबर सरकार द्वारा छात्रों की फीस रू. 3000 प्रतिवर्ष पर तय की गई; तब से छात्र फीस रू. 9000 तक बढ़ गई है और अभी और वृद्धि अनुमानित है। उत्तर आयरलैंड, स्कॉटलैंड और वेल्सस के न्यागत प्रशासन में महत्वपूर्ण भिन्नता हैं, लेकिन इंग्लैंड में, उच्च शिक्षा छात्र ऋण के संचय जो एक जटिल ऋण प्रणाली के माध्यम से सुगम बना, से विस्तृत हुआ है।

नई वित्त पोषण व्यवस्था परिवर्तन का एक महत्वपूर्ण चालक रही है। विश्वविद्यालय छात्रों के लिए एक दूसरे के साथ महत्व पूर्ण शैक्षणिक परिणामों के साथ प्रतिस्पर्धा करते हैं : विद्यार्थियों या प्रशिक्षुओं की तरह देखे जाने के बजाय, छात्र आज उपभोक्ता हैं। शायद विडंबना यह है कि छात्रों के लिए ''बाजार'' की शुरूआत राज्य निगरानी के विभिन्न स्वरूपों के साथ की गई है।

2005 में ब्लेयर सरकार ने गुणवत्ता मूल्यांकन की श्रम–प्रधान प्रणाली (जिसने निरीक्षण और मानकीकृत कक्षा प्रक्रियाओं के अधिरोपण द्वारा शिक्षण में सुधार का प्रयास किया था) को राष्ट्रीय

>>

छात्र सर्वेक्षण (NSS)- एक उपभोक्ता जाँच की तरह जो सभी पाठ्यक्रमों और डिग्रीयों का छात्रों द्वारा मूल्यांकन को एकत्रित और प्रकाशन करता है, के द्वारा बदल दिया। ये आँकड़े (जिसमें प्रथम श्रेणी की डिग्री पाने वाले छात्रों का अनुपात शामिल था) तेजी से ''श्रेष्ठ'' विश्वविद्यालयों के लीग तालिका, जो राष्ट्रीय समाचार पत्रों द्वारा एकत्रित एवं प्रकाशित की जाती है, में सम्मिलित हो गये।

वर्तमान में सरकार इस मूल्यांकन प्रणाली को बेहतर बनाने के लिए शिक्षण उत्कृष्टता फ्रेमवर्क (TEF) को दर्शाने वाला अधिक जटिल प्रश्नों का एक सेट, जो छात्र प्रतिधारण और स्नातक रोजगार के साथ छात्र आकलन पर भी ध्यान देता है, को प्रारम्भ करने की योजना बना रही है। यद्यपि, इन उपायों में से प्रत्येक दोषक्षम दर्शाये गये हैं, सरकार एक नये TEF ग्रेडिंग प्रणाली का निर्माण करने की योजना बना रही है जिससके आधार पर ''हम फीस में अंतर में वृद्धि की अपेक्षा करेंगे।''

> अनुसंधान मूल्यांकन से अनुसंधान उत्कृष्टता की तरफ

''पुरानी'' धन प्रणाली के तहत, विश्वविद्यालय शिक्षकों से शिक्षण और शोध को 3 : 2 के अनुपात में करने की अपेक्षा की जाती थी। सरकार द्वारा वित्त पोषित, अकादमिक कर्मचारियों से लैस शोध परिषदों ने एक प्रतिस्पर्धी बोली प्रक्रिया के माध्यम से अतिरिक्त अनुसंधान फण्ड उपलब्ध कराया। पहले से ही परिसर में कट्टरपंथी और महत्वपूर्ण स्वरों से चिंतित, थैचर सरकार ने सोशल साईन्ससेज रिसर्च काउंसिसल को नाम इकोनोमिक एण्ड सोशल रिसर्च काउंसिल (ESRC) रखने पर जोर दिया; समय के साथ यह संगठन अधिकतर यू. के. की अर्थव्यवस्था की जरूरतों के अनुरूप है। इससे भी महत्वपूर्ण है कि शायद, विश्वविद्यालयों के विभागों में शोध गतिविधि की एक नियमित (सामान्यतः पंच वर्षीय) समीक्षा को प्रारंभ किया गया : शोध मूल्यांकन प्रयोग काफी अनौपचारिक रूप से 1980 के दशक में प्रारम्भ हुआ, लेकिन 1990 से भावी शोध अनुदान से कार्य–निष्पादन को जोड़ दिया गया और इसने पुराने अनुदान–आधारित व्यवस्था की कड़ी को तोड़ दिया।

आगामी पुनरावृत्तियों ने इस आकलन प्रक्रिया के विस्तार को देखा है। 2015 में, शोध उत्कृष्टता फ्रेमवर्क (REF) नाम परिवर्तन में एक और अतिवादी प्रस्थान शामिल था–प्रकाशित शोध के ''प्रभाव'' का आकलन करने के लिए नये प्रयासों और मौटे तौर पर ''व्यापक अर्थव्यवस्था एवं समाज पर होने वाले ''प्रदर्शनीय लाभ'' (बनाये गये)। विशेषज्ञ पैनल ''उचित सूचकों द्वारा समर्थित विवरण साक्ष्य की समीक्षा करेंगे और प्रत्येक प्रस्तुति के लिए ग्रेडेड प्रभाव उप–प्रोफाइल की रचना करेंगे।'' ये प्रोफाइल ''विश्व अग्रणी'' (4*) से ''अंतराष्ट्रीय उत्कृष्ट'' (3*), से ''अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मान्य'' (2*) और (राष्ट्रीय स्तर पर मान्य) (1*) के स्कल पर ग्रेड किये जायेंगे।

समय के साथ, फिर, विश्वविद्यालयों के भीतर, बाह्य आकलन प्रक्रिया शोध रणनीतियों के विमर्श में छोर से केन्द्र में आ गई है। शैक्षणिक विमर्श के केन्द्र में ''स्टार'' जैसे शब्दों का अन्य मजबूत शब्द जैसे ''उत्कृष्टता'', ''स्वस्थ'', ''परिशुद्ध'' एवं ''पारदर्शी'' के उभार ने कदाचित एक निर्विवाद वृत्तान्त, जिससका कई समाजशास्त्रियों को बेहतर पता होना चाहिए, को स्वीकार किया गया। इस तरह बोलने के रूप में, 'Ref' "Refable", "Ref-ready" और ऐसे अन्य के साथ विश्वविद्यालय विभागों में एक शक्तिशाली संज्ञा के रूप में उभरा है।

> कार्पोरेट विश्वविद्यालय

ये परिवर्तन, एक शक्तिशाली नवउदारवादी रणनीति जिसने ब्रिटेन के सार्वजनिक क्षेत्र को रूपांतरित किा, का हिस्सा है। उच्च शिक्षा में होने वाले परिवर्तन देश की स्वास्थ्य सेवा, कर संग्रह, पुलिस एवं सामान्य तौर पर शिक्षा को पुनः आकार देने वालों के समानांतर हैं। विश्वविद्यालय छात्रों, जो अब उनकी आय के मुख्य स्त्रोत हैं–के लिए एक दूसरे से स्पर्धा करते हैं और विभिन्न लीग तालिकाओं में स्थान के लिए प्रतिस्पर्धा करते हुए–धर्मार्थ संगठनों की बजाय अधिकाधिक लाभ की माँग वाले कार्पोरेट की तरह व्यवहार किया है।

विश्वविद्यालय मुखिया (कुलपति) अब अपने आपको समान/बराबर के मध्य प्रथम के रूप में नहीं बल्कि मुख्य कार्यकारी अधिकारी के रूप में देखते हैं जिन्हें स्वयं की पेंशन योजना के तदनुसार भुगतान किया जाता है। जब वर्तमान कंजरवेटिव सरकार ने छात्रों की संख्या की ''उच्चतम सीमा'' को हटाया तो संभावित वृहद अधिशेष की संभावना–2011 में नकद भंडार रू. 6.5 करोड़ था–ने यू. के. के विश्वविद्यालयों को मुद्रा बाजार में बाँड बिक्री के अमरीका के उदाहरण का अनुसरण करने को प्रेरित किया। इस बिक्री को नई अचल संपत्ति में भारी निवेश को फंड करने के लिए काम में लिया। प्रबंधकीय अभिजात वर्ग में कई इन नई इमारतों को अपनी सफलता के सांकेतिक प्रतिनिधि के रूप में देखते हैं। अधिक छात्रों (उर्फ नकदी) की खोज में, विदेशी छात्रों पर वीजा प्रतिबंधों से कुंठित विश्वविद्यालयों ने विदेशों में वृहद् परिसर खोले हैं जिसमें वे कर्मचारियों को कैरियर बदलाव के अवससर प्रदान करते हैं जो वे मना नहीं कर पाते है। जहाँ कुछ उपक्रम सफल रहे है, अन्य कम रहे हैं। 2015 के अंत में, ऐबरिस्टविद विश्वविद्यालय ने ब्रिटिश एवं अंतर्राष्ट्रीय, छात्रों के लिए मारीशस में परिसर खोलने के लिए 0.50 लाख पाउण्ड खर्च किये। उन्होंने ''छात्रों को गुणवत्ता वाली शिक्षा तक पहुँच के नये अवसर उपलब्ध कराने, वे छात्र जो अन्यथा इस प्रकार के पाठ्यक्रमों तक पहुँच नहीं पाते'', के लिए ऐसा किया। लेकिन 2016 तक, 2000 छात्रों के लिए बनाये गये परिसर में सिर्फ 40 छात्रों ने दाखिला लिया। विश्वविद्यालय के एक पूर्व अध्यक्ष ने आलोचनात्मक रूप से टिप्पणी की। ''यह उपक्रम पागलपन है।'' ज्यादा अच्छा होता यदि वे अपने संसाधनों को उच्च गुणवत्ता वाले स्टाफ और ज्यादा घरेलू छात्रों को आकर्षित करने में केन्द्रित करते।''

यह सब तनावपूर्ण परिवर्तन का अनुभव करने वाले क्षेत्र जिसका वास्तविक प्रभाव शिक्षाविदों के कार्यशील जीवन पर पड़ता है के बारे में है। प्रत्येक नव नियुक्त कुलपति, जो नई व्यवस्था के अंतर्गत उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए प्रशासनिक स्टाफ की संख्या में वृद्धि से समर्पित शीर्ष–पाद संरचना की स्थापना करते हैं, के द्व ारा नये कार्पोरेट विश्वविद्यालय और अधिक केन्द्रीकृत हो जाते हैं। पूर्व में स्कूलों, विभागों और शोध केन्द्रों में कार्यरत परन्तु अब किसी केन्द्रीय कार्यालय की तरफ पलायन करते तकनीकी और वित्तीय ''सहयोगी स्टाफ'' से नये प्रशासनिक पदानुक्रम उभरते हैं। अधिकाधिक, संचार वैयक्तिक संपर्क के बजाय ईमेल द्वारा किया जाता है और एक समय में सरल कार्य, एक बैठक का आयोजन या कमरा बुकिंग अब कम्प्यूटर प्रोग्राम के लिये प्रशिक्षण एवं पहुँच की माँग करता है। ''मेट्रिक्सस'' के एक आवश्यक प्रबंधन उपकरण बनते ही, वे मानकीकरण के लिए दबाव बनाते हैं जो कई विश्वविद्यालयों में नये प्रदर्शन प्रबंधन प्रणाली से जुड़े हुए हैं। प्रदर्शन संबंधित भुगतान के साथ और अधिक महत्वपूर्ण रूप से, अकादमिक स्टाफ को नये

>>

और सिर्फ–शिक्षण अनुबंधों की तरफ ले जाने के प्रयास, भी एजेण डे पर प्रतीत होते हैं।

एल्विन गोल्डनर द्वारा बहुत पहले वर्णित नियम–शासित संरचना में ''लाल फीताशाही'' और ''लक्ष्य–विस्थापन'' की नौकरशाही विकृतियाँ अब ब्रिटिश विश्वविद्यालयों, विशेष रूप से शिक्षण एवं शोध मूल्यांकन स्कीम में, स्पष्ट दिखाई देती हैं। ऐसा इस हद तक होता है कि कई विश्वविद्यालय अब छात्रों को चेतावनी देते हैं कि अपनी डिग्री के उनके खराब आकलन श्रम बाजार में उनके मूल्यों को प्रभावित कर सकते हैं। ''शीर्ष पर अधिक लचक'' को प्रोत्साहन के साथ प्रथम श्रेणी प्रदान करने के अनुपात पर निगरानी रखी जाती है। यह देख कि छात्र खराब ''फीडबैक'' से लगातार पाठ्यक्रमों की आलोचना करते हैं, कुछ विश्वविद्यालय छात्रों को यह समझाने के लिए कि ''फीडबैक'' क्या है और वे इसे कब प्राप्त करेंगे, विशेष सत्रों का आयोजन करते हैं। यहाँ तक कि, कुछ विश्वविद्यालयों ने ''फीडबैक के एसोसियेट डीन'' नियुक्त किये हैं, और स्टाफ के कुछ सदस्यों को ''फीडबैक चैम्पियन'' के रूप में पहचाना गया।

यह ''द्यूत'' गतिविधि शोध मूल्यांकन के सम्बन्ध में काफी उन्नत रही है। 2014 में कई विश्वविद्यालय शोध मूल्यांकन में सभी स्टाफ के सम्मिलित होने की परम्परा को छोड़ कर, सिर्फ उन्हीं स्टाफ जिनके उच्च रैंक वाले प्रकाशन एवं इम्पैक्ट केस स्टडीज थी, को सम्मिलित करने लगे। इसके परिणाम में–जिसने कुछ विश्वविद्यालयों पर ''धोखे'' का आरोप लगाया–में कई आंतरिक मूल्यांकन प्रणालियाँ जो अक्सर द्वेषजनक और शायद ही सहशासित थी। आज, 2020 के शोध मूल्यांकन प्रक्रिया तक जाने वाली प्रक्रिया में, कई विश्वविद्यालयों ने प्रकाशनों (ref. बोलते हैं आउटपुट) की निगरानी हेतु ''रिसर्च इम्पैक्ट–मैनेजर''–जो स्वयं की ''सेल्फ रेफरेनशियल एवं पेचीदी भाषा में सभी प्रलेखन का उत्पादन करते हैं–की व्यवस्था की है।

इन क्षेत्रों में निरपवाद रूप से निर्णय उच्च स्तरीय समितियों द्वारा लिये जाते हैं और शिक्षात्मक ई मेल या ''टाउन हाल'' की परामर्शदात्री बैठकों के माध्यम से सूचित किये जाते हैं। इन घटनाक्रमों पर टिप्पणी करते हुए ससेक्स विश्वविद्यालय की प्रोफेसर बेन मार्टिन ने ''नाराजगी'', निराशावाद, खिन्न चित्त रजामंदी'' के उभार को नोट किया। इस मत की नवीनतम टाइम्स यूनिवर्सिटी वर्कप्लेस सर्वे द्वारा भी पुष्टि की गई जिसने पाया कि जहाँ शिक्षाविद सामान्यतः अपनी नौकरियों को लाभदायक समझते हैं, इनमें से तीन–चौथाई विश्वविद्यालयों की भावी योजनाओं और वरिष्ठ नेतृत्व से गहन रूप से भ्रम–निवृत्त हैं। सर्वेक्षा ने यह भी पाया कि आधे शैक्षणिक उत्तरदाता मेट्रिक–आधारित प्रदर्शन उपायों से संबंधित अतिरेक के बारे में चिंतित थे। शायद, ज्यादा चिंतित करने वाला था, आधे उत्तरदाताओं का मानना था कि उनकी संस्थानों ने छात्रों के लिए स्पर्धा करने की कोशिशों में स्नातक प्रवेश मानकों के साथ समझौता किया है और वैयक्तिक रूप से, वे उच्च अंक देने के लिए दबाब महसूसस करते हैं।

इसी सिलसिले में, वारविक विश्वविद्यालय में समाजशास्त्र के एसोसियेट प्रोफेसर चार्ल्स टर्नर ने हाल ही में ''विश्वविद्यालयों को वास्तव में खत्म करने वाली समस्याओं'' की सूची बनाई है : पुस्तकालय भंडार पर खर्च होने वाले वृहद संसाधनों को अनावश्यक और खराब डिजाइन वाले नये भवनों के लिए देने की प्रतिबद्धता ; उन छात्रों, जो 20 वर्ष पूर्व निम्न सैकेण्ड पाने के लिए भी संघर्ष करते, को प्रथम और अपर सैकेण्ड क्लास डिग्री प्रदान करना; शिक्षण शास्त्र के विषयों पर मुख्य निर्णय लेने के लिए प्रकाशकों की मदद; कुछ डिग्री पाठ्यक्रमों को व्यावसायिक दिखाने, जबकि वे नहीं है और हो भी नहीं सकते, की हताश कोशिशें; और प्रकाशनों का अंतहीन ज्वार जिसे कोई समझदार न तो पढ़ना चाहेगा और न ही लिखना (द गार्जियन, 1 जून 2016)।

> समाजशास्त्र का बदलता स्थान

ब्रिटिश विश्वविद्यालयों में एक डिग्री विषय के रूप में समाजशास्त्र काफी देर से उभरा : 1960 के दशक में केवल तीन विकासक्षम केन्द्र विद्यमान थे। तदनंतर, विभागों और छात्रों की संख्या में उल्लेखनीय एवं तीव्र उभार। वृद्धि से समाजशास्त्र आज विश्वविद्यालयों के अंदर एक मजबूत स्थिति में है। इस तीव्र वृद्धि में विषय के चारों तरफ ठोस पेशेवर सीमाओं का स्थापित करने की बहुत कम कोशिशों के साथ ''खुलेपन'' की उच्च डिग्री सम्मिलित थी। यह ऐसा खुलापन था जिसने कई भिन्न क्षेत्रों में समाजशास्त्रीय चिन्तन को घुसने की अनुमति दी। हालांकि, इस खुलेपन का एक परिणाम कुछ विशेषज्ञता का अन्य क्षेत्रों में प्रवाह रहा है; इसके अच्छे उदाहरण ''कार्य का समाजशास्त्र'' और ''शिक्षा का समाजशास्त्र'' हैं, जो पूर्व के दो स्तंभ थे जो आज बिजनेस स्कूलों एवं शिक्षा के स्कूलों में पढ़ाये जा रहे हैं।

समाजशास्त्र अन्य तरीकों में भी बदला है। 1960 और 1970 के दशकों में विचलन के क्षेत्र में आमूलचूल महत्वपूर्ण सफलताओं के बाद, यह विशेषज्ञता अब अपराधशास्त्र, एक उच्च माँग वाला विषय जो अक्सर सामाजिक नीति और विधि अध्ययन सहित बहु–वैषयिक संदर्भों में पढ़ाया जाता है, के रूप में फ्रेम किया गया है। स्वास्थ्य और पर्यावरण भी वे क्षेत्र है जहाँ समाजशास्त्र छात्रों की उच्च माँग वाले व्यावहारिक पाठ्यक्रमों को विकसित कर पाया है। विषय के केन्द्र की अर्थपूर्ण उपागम एवं पहचान के मुद्दों के प्रति बदलाव के साथ इन परिवर्तनों से कुछ लोगों ने यह सुझाव दिया कि भौतिक संरचनाओं और बाधाओं की शक्ति को कम आँका जा रहा है जिससे समाजशास्त्र की वर्तमान घटनाओं पर संगतपूर्ण प्रतिक्रिया करने की क्षमता कमजोर हो रही है।

इसी तरह के सवाल विश्वविद्यालयों के वर्तमान शोध एजेण्डे और REF के संचालन द्वारा उठाये जाते हैं। मूल्यांकन चक्र की मशीनी रूपी रगड़ और ''चार 3*/4* आउटपुट'' की जरूरत ने शिक्षाविद मोनोग्राफ की बजाय अधिकाधिक शोध पत्रिका आलेख को चुन रहे हैं और वे मूल्यांकन प्रक्रिया की जरूरत के अनुसार क्षेत्र कार्य को संक्षिप्त कर रहे हैं। कुछ विद्वानों ने इस प्रक्रिया के साथ अपनी आकांक्षाओं को समायोजित किया है, अन्य हार मान रहे हैं। कइयों ने नृजातिविज्ञान संबंधी कार्य या फिर समुदायों के साथ लंबी अवधि के संपर्क का निर्माण करने वाले अन्य शोध कार्य पर इसके परिणामों पर टिप्पणी की हैं। अधिक आम तौर पर REF में किसी विशेष विषय का ''प्रदर्शन'' उसकी सम्पूर्ण स्थिति एवं प्रत्येक विश्वविद्यालय में वह जिस प्रकार से देखा जाता है, को परिवर्तित या प्रभावित कर सकता है। इस प्रकार, 2014 में प्रस्तुतिकरणों की संख्या में कमी को देखकर बड़ी घबराहट हुई। 704 स्टाफ वाले केवल 29 विभागों ने ''समाजशास्त्र'' शीर्षक (अब तक का न्यून) पर लिखा। इसकी तुलना में 1302 स्टाफ द्वारा 62 प्रस्तुतियाँ ''सामाजिक नीति'' के शीर्षक में दर्ज की गई। जमीन पर संख्या के विपरीत, इन अनुपातों ने कुछ समाजशास्त्रियों की अधिक व्यावहारिक क्षेत्रों में शोध प्राथमिकताओं के परिवर्तन को और केन्द्रीकृत विश्वविद्यालय समितियों के रणनीतिक चयन को दर्शाया। परिणामस्वरूप, पैनल को यह रिपोर्ट करने पर मजबूर होना पड़ा कि वह केवल विषय के आंशिक प्रतिनिधित्व'' की पेशकश कर सकता है।

>>

निश्चित रूप से ''इम्पैक्ट'' इस क्रिया के केन्द्र में था : चूंकि यह मेट्रिक शोधकर्ताओं को बाह्य एजेन्सियों के साथ कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करता है, कई शिक्षाविदों का मानना है कि विवेचनात्मक कार्य को बाहर कर दिया जायेगा या निम्न रेटिंग दी जायेगी। जहाँ अभी भी विवेचनात्मक कार्य के लिए कुछ जगह हो सकती है (उदाहरण के लिए, पर्यावरणीय मुद्दों के सम्बन्ध में), समाज विज्ञान में ''इम्पैक्ट'' का मापन लघु स्तरीय नीति परिवर्तन की तरफ शक्तिशाली पूर्वाग्रह को सूचित करता है जो विश्वविद्यालयों को सक्रिय रूप से अपने शोधकर्ताओं को सुरक्षित खेलने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए मार्गदर्शन करता है। शोध परिषद (ESRC) जो स्वयं कड़ी सरकारी जाँच के अन्तर्गत है–अपनी निधियन को अक्सर अखिल–विश्वविद्यालय टीमों को शामिल करने वाले जटिल प्रोजेक्ट के लिए मुख्य अवार्ड की तरफ उद्देश्यपूर्ण ढंग से बढ़ रहा है। यह नीति तेजी से छोटे प्रोजेक्टों को मझधार में छोड़ सकती है।

ये परिवर्तन पिछले 30 वर्षों में उभरे हैं। आज हम, सरकारी विश्वविद्यालयों के विवचेनात्मक और वैज्ञानिक व्यस्तता के केन्द्र के विचार के बारे में सवाल उठा कर, एक संकट की स्थिति में प्रतीत होते हैं। वर्तमान सरकारी नीति में नये निजी विश्वविद्यालयों के सृजन की संभावना कम नजर आती है और इससे विस्तृत तृतीयक शिक्षा क्षेत्र में प्रतिस्पर्धी दबाब और तीव्र होगा।

यह सब विश्वविद्यालयों और उनके अन्दर समाजशास्त्र की स्थिति, दोनों के उद्देश्य और भविष्य के बारे में मुश्किल सवाल उठाता है। गौरतलब है कि यू. के. में सरकारी विश्वविद्यालयों को पुनः प्राप्त करने के उद्देश्य वाले समूह का नेतृत्व कर रहे जॉन होल्मवुड के साथ समाजशास्त्री इन परिवर्तनों का विरोध करने में मजबूती से चित्रित हुए हैं। द आल्टरनेटिव व्हाइट पेपर फॉर हायर एजुकेशन, उसका स्वयं का वैकल्पिक नीति एजेण्डा जून में लंदन में एक प्रमुख बैठक में लॉच किया गया। यह उच्च शिक्षा के क्षेत्र में लाभ के लिए सेवा प्रदाताओं के प्रवेश द्वारा छात्रों एवं महत्वपूर्ण शोध के लिए उत्पन्न होने वाले खतरों की तरफ इशारा करता है। यह अंत में 1988 के मैग्ना कार्ट यूनिवर्सिटेटम, जो दुनिया भर के 802 विश्वविद्यालयों द्वारा हस्ताक्षरित किया गया था, से लिए गये एक उद्धरण से समाप्त करता है : विश्वविद्यालय ''स्वायत्त संस्थाएँ'', हैं जो ''सभी राजनैतिक सत्ता और आर्थिक शक्ति से नैतिक और बौद्धिक रूप से स्वतन्त्र होनी चाहिए''–एक उद्देश्य, जो जितना वह पीछे हटता है, अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है। ■

हूव बेयनोन से पत्र व्यवहार हेतु पता <beynonh@Cardiff.ac.uk>

> कनाडा में 'समाजशास्त्रीय युद्ध'

नील मेकलागलिन, मेकमास्टर विश्वविद्यालय, कनाडा और **एंटनी पुड्डेफट,** लेकहेड विश्वविद्यालय, कनाडा

यह 'समाजशास्त्र के लिए प्रतिबद्ध' होने का समय नहीं है, कनाडा के प्रधानमंत्री स्टीफन हार्पर की इस घोषणा के बाद घूमते हुए बटन। वे आतंकवाद के कारणों का अध्ययन करने के बजाय आतंकवादियों के साथ कठोर होने की आवश्यकता के संदर्भ में यह बात कह रहे थे।

21 वीं शताब्दी के प्रारम्भ में, कई वरिष्ठ विद्वानों ने कनाड़ियाई समाजशास्त्र की स्थिति के विषय में खतरे की घंटी बजाई। ब्रूस कर्टिस एवं लोरना वियर ने तर्क दिया कि अंग्रेजी कनाडियाई समाजशास्त्र ''विशिष्ट ज्ञान, कौशल तथा एक सार्वजनिक पेशे के साथ एक शिल्प के रूप में समाजशास्त्र की कमजोर चेतना से ग्रस्त है''; वे विषय के भविष्य के बारे में चिंतित थे चूंकि कनाड़ा के संस्थापक समाजशास्त्री सेवानिवृत्ति के करीब थे।[1] राबर्ट ब्रिम ने कनाडियाई समाजशास्त्रीय संघ की गिरती सदस्यता के बारे में चिंता जाहिर कर कनाड़ा में विषय के सामान्य स्वास्थ्य के बारे में आशंका जताई।[2] नील मैकलागलिन ने कुछ व्यापक संस्थागत कारकों का अन्वेषण किया, कनाडियाई समाजशास्त्र में ''आने वाली विपदा'' के बारे में चेतावनी दे[3] कर जवाब दिया। वे आशावान थे कि ऐसा कर वे एक पूर्ववर्ती क्षण पैदा करेंगे, एक संवाद को प्रारम्भ करेंगे जो शायद ज्ञानपूर्ण संस्थागत रणनीतियों और एक व्यापक बौद्धिक दृष्टि को प्रोत्साहित करेगा। इन लेखों के अक्सर भावनात्मक और विवादात्मक प्रत्युत्तरों की बौछार ने कनाड़ा में, जिसे हम ''समाजशास्त्र युद्ध'' कहते हैं कि शुरूआत की, जो एक दशक बाद अभी भी उग्र हैं।

पैट ओ' मेली एवं एलन हंट ने कुछ प्रारंभिक बौछार प्रदान की और तर्क दिया कि कर्टिस और वियर की कमजोर होते विषय के बारे में चिंताये, उन समाजशास्त्रियों का नियंत्रित करने के लिए जो लाइन के बाहर जा सकते हैं, के लिए कठोर अनुशासनात्मक मानको की स्थापना के साथ, ''विच हंट'' के बराबर थी।[4] मेकलागलिन के ''संकटग्रस्त'' लेख ने आलोचनात्मक प्रत्युत्तरों के एक अन्य सेट को उकसाया जिसने उन्हें दोनों प्रामाणिक और अनुभवजन्य आधार पर चुनौती दी।[5] जहाँ, इस बहस ने कनाडियाई समाजशास्त्र की वास्तविकताओं को संदर्भ प्रदान करने में मदद की है, इसका स्वर अक्सर सख्त था। एक तरफ 2018 में टोरन्टो में अंतर्राष्ट्रीय समाजशास्त्रीय संघ की विश्व कांग्रेस की मेजबानी की तैयारी में कनाडियाई समाजशास्त्री लगे हैं, हम उठाई गई कुछ मुख्य चिंताओं पर विमर्श करते हैं और आशा करते हैं कि हम कुछ उन मुद्दों को उजागर करेंगे जो अन्य राष्ट्रो के समाजशास्त्र, विशेष तौर पर संयुक्त राज्य अमरीका के बाहर के, के लिए उपयोगी एवं प्रासंगिक हो सकते हैं।

कनाड़ियाई समाजशास्त्र की स्थिति के संबंध में काफी चिंता घटती सदस्यता और हमारे राष्ट्रीय संघ की बैठकों में उपस्थिति पर केन्द्रित थी। समाज विज्ञान और मानविकी की एक अंतः वैषयिक कांग्रेस के भाग के रूप में अंग्रेजी भाषी कनाडियाई समाजशास्त्र की वार्षिक बैठक, देश भर के विभिन्न विश्वविद्यालयों में आयोजित होती है। कनाडियाई समाजशास्त्र की बैठकें कम उपस्थिति, विशेष तौर पर शीर्ष समाजशास्त्रियों की, से ग्रस्त हैं। क्या यह वैषयित पतन का संकेत था? जीन–फिलिप वॉरेन ने हमें याद दिलाया कि कई अन्य राष्ट्रीय एवं वैश्विक मनीषी संघ इसी प्रकार की गिरावट का सामना कर रहे हैं।[6] राबर्ट पुटगाम की "Bowling Alone" थीसिसस पर आधार कर, वे सुझाव देते हैं कि इंटरनेट संचार प्रौद्योगिकी के उभार ने व्यापक भौगोलिक दूरी पर अनौपचारिक मनीषी नेटवर्किंग को संभव बनाया है ताकि विद्वान पारंपरिक, औपचारिक रूप से आयोजित बैठकों के बाहर ''अकेले सामाजिक'' हो सकें।

> >

फिर भी 2000 के दशक के प्रारम्भ में, जैसे समाजशास्त्र की सामान्य तौर पर विश्वविद्यालय और समाज दोनों में ही लगातार निम्न प्रस्थिति रही, कमजोरी के अन्य लक्षण भी थे। इनमें से कई मुद्दें आज प्रासंगिक हैं और शायद अन्य राष्ट्रों के समाजशास्त्र में भी समान हैं लेकिन हमारे अनूठे इतिहास और संयुक्त राज्य, ब्रिटेन एवं फ्राँस के साथ भिन्न सम्बन्धों के कारण, वे कनाड़ा में विशिष्ट रूप से उभरते हैं।

अमरीकी विद्वानों के वर्चस्व की चिंताओं ने 1970 एवं 1980 के दशकों में कनाडियाईकरण आंदोलन का नेतृत्व किया। अधिक कनाडियाई अन्तर्वस्तु और घरेलू प्रशिक्षितों की भर्ती कर समाजशास्त्रियों ने अधिक स्वायत्त कनाडियाई समाजशास्त्र के निर्माण की कोशिश की। हालांकि, इसी आंदोलन ने निस्संदेह अमरीकी समाजशास्त्र के खिलाफ नकारात्मक भावनाओं को प्रबल किया जिसमें एक प्रकार की आत्मसन्तुष्टि जो हमें अमरीका पर प्रहार करने और अपने स्वयं के दोषों को अनदेखा करना सम्मिलित है।[7]

फिर भी, हमारे अपने राष्ट्रीय अन्तर्वस्तु की बढ़ती कमजोरी एक मुद्दा जिसका निस्संदेह अन्य देशों के समाजशास्त्री भी सामना करते हैं, के बारे में चिंता करना अकारणीय नहीं है। कनाडियाई समाजशास्त्रियों को ज्यादातर यू. एस. ए. से प्रशिक्षण मिलेगा और उनके जॉन पोर्टर या वालेस क्लेमेंट जैसे कनाडियाई मिसालों की बजाय अधिक वैश्विक रूप से विख्यात सिद्धान्तकारों की तरफ मुड़ना अधिक संभावना है।[8] जो कनाड़ा की अनूठी परम्परा हुआ करती थी, वो अब वैश्विक (पढ़े : अमरीकी और यूरोकेन्द्रित) विषय में सिर्फ एक प्रतिभागी के रूप में तनुकृत होती जा रही है।

शल्फ मैथ्यूज ने कनाडियाई समाज के महत्वपूर्ण प्रारंभिक सिद्धान्तकार हेरोल्ड इनिस[9] के ''स्टेपल्स सिद्धान्त'' का कलेवर बदल एक अधिक अनूठी कनाडियाई परम्परा को पुनः स्थापित करने का प्रयास किया है। इनिस ने तर्क दिया था कि कनाड़ा के शहरों का भौगोलिक विकास हमारे प्राकृतिक संसाधन अर्थव्यवस्था के व्यापार मार्गों से निकटता से बंधा था और जिसने विविध सांस्कृतिक निशानों के साथ व्यापक रूप से भिन्न भौगोलिक क्षेत्रों का निर्माण किया। इसी फ्रेम का जीवाश्म ईंधन उद्योग, अपने प्राकृतिक पर्यावरण के लिए सुरक्षा, और प्रथम राष्ट्र अधिकारों जैसी नई समकालीन चिताओं पर विस्तार कर, हमें हम राष्ट्र और समाजशास्त्रीय परंपरा में अद्वितीय कैसे है, के बारे में अंतदृष्टि मिलती है। यद्यपि, जो कनाड़ा के लिए ''अद्वितीय'' प्रतीत हो सकता है, दूसरे देश, जो स्थानीय संदर्भ और मुद्दों के साथ अंतक्रिया करते समान वैश्विक ताकतों का सामना करते हैं, के लिए भी तुलना के मूल्यवान बिन्दु के रूप में कार्य कर सकता है।

एक अपेक्षाकृत नवीन विषय जो 1960 और 1970 के दशकों में पूर्ण रूप संस्थागत हुआ, कनाडियाई समाजशास्त्र एक विशिष्ट मार्क्सवादी–प्रेरित कट्टरवाद द्वारा चिन्हित था, क्योंकि अधिकांश मुख्य भर्तियाँ सामाजिक और राजनैतिक संघर्ष के समय हुई थी। हमारे विषय में यह अत्यधिक ''विवेचनात्मक'' अभिमुखन आज भी प्रभावी है जिससे अधिक नीतिगत और राजनैतिक गतिविधियाँ होती है। ऐसा रूढ़िवादी राजनेताओं की मर्जी के खिलाफ होता है। उदाहरण के लिए, आतंकवाद को बेहतर तरीके से रोकने के लिए उसके मूल कारण पर अधिक अन्वेषण के लिए आह्वान को मना कर, कनाड़ा के रूढ़िवादी पूर्व प्रधान मंत्री स्टीफन हार्पर ने कुख्यात रूप से कहा कि ''यह समाजशास्त्र के प्रति समर्पित होने का समय नहीं है।'' कनाडियाई समाजशास्त्रियों के लिए इस कथन ने समाजशास्त्रीय अनुसंधान के महत्व को चुनौती दी, जिसने कनाडियाई समाजशास्त्रीय संघ को 2015 में ''समाजशास्त्र को समर्पित हो'' के नारे वाले टी–शर्ट बेचने पर बल डाला।

कनाडियाई समाजशास्त्र के इस पुराने विवेचनात्मक तत्व ने सार्वजनिक समाजशास्त्र की माइकल बुरावे की माँग के लिए ग्रहणशील श्रोताओं का सृजन किया।[10] कई कनाडियाई समाजशास्त्रियों ने उनका समर्थन किया या फिर यह दावा किया कि सार्वजनिक अभिमुखन शोध को सशक्त बनाने के लिए बुरावे बहुत आगे तक नहीं गये।[11] कुछ कनाडियाईयों ने सार्वजनिक समाजशास्त्र के मूल विचार को, पेशेवर केन्द्र के महत्व पर जोर देते हुए, खारिज कर दिया। स्कॉट डेविस ने एक तरफ जिन्हें उचित समाज वैज्ञानिक और दूसरी तरफ हठधर्मी विवेचनात्मक सिद्धान्तकार के रूप में देखा के मध्य एक बार और फिर हमेशा के लिए ''वैषयिक–तलाक'' की माँग की।[12] कनाड़ा की नारीवादियों ने तर्क दिया कि बुरावे के आह्वान ने संभावित निजी और राज्य–प्रायोजित साझेदारी, जो हमें महत्व पूर्ण सामाजिक मुद्दों को हल करने में जनता के साथ काम करने में मदद कर सकती है, की उपेक्षा की।[13]

और वास्तव में, जैसे ही हम हार्पर सरकार के अत्यधिक रूढ़िवादी एजेण्डें से जस्टिन ट्रूड्यू के उदारवाद की तरफ मुड़ते हैं, जन मुद्दों से निपटने के लिए अधिक फैडरल कार्यवाही की संभावना–विशेष रूप से जो First Nations लोगों को प्रभावित करती है–स्पष्ट हैं। समाजशास्त्री कनाड़ा में एक मजबूत समाजशास्त्र, जो महत्वपूर्ण साझेदारियों एवं राज्य के साथ अविरत संवाद में विद्यमान रहता है, की आशा कर सकते हैं।

आज समाजशास्त्र युद्ध के जारी रहते हुए, विषय की प्रस्थिति के बारे में प्रारंभिक चिताएँ अग्रणी हैं। विलियम कैरोल ने हाल ही में तर्क दिया कि समाज विज्ञानों के अन्य विषयों के साथ, समाजशास्त्र को विवेचनात्मक यथार्थवाद से एकजुट एक पार–वैषयिक गठजोड़ के लिए मार्ग छोड़ना चाहिए।[14] 2015 में इस लेख को कनेडियन रिव्यू ऑफ सोशियोलोजी का सर्वश्रेष्ठ लेख पुरूस्कार मिलना अंतर्निहित सांस्कृतिक धाराओं को दर्शाता है क्योंकि कनाड़ा में कई समाजशास्त्री अपनी वैषयिक पहचान और प्रतिबद्धताओं को नकारना पसन्द करते हैं।

यह उनके लिए गंभीर बाधा प्रस्तुत करता है जो अपेक्षाकृत खुली प्रकार की विद्वता की माँग करते हैं लेकिन वे वैषयिक फायदों/लाभों को छोड़ना नहीं चाहते हैं। कई यह तर्क देंगे कि सबसे अच्छी विद्व ता लोकप्रिय दावों कि विषय सिर्फ बौद्धिक सिलोस के रूप में कार्य करते हैं को ध्वस्त करती है। विषय वास्तव में ज्ञान को उल्लेखनीय कुशलता से साझा करते हैं।[15] फिर भी, सिलोस के रूप में विषयों की थकी हुए लफ्फाजी जो सिर्फ बुद्धिजीवियों को ''पुलिस'' करने के लिए है, को मारना कठिन है।[16] और जहाँ विषय वास्तव में ज्ञान के उत्पादन को दबा सकते हैं, हम इस सबूत को कि वे उसे बढ़ाने के लिए काफी कार्य करते हैं, नजरअंदाज नहीं कर सकते हैं। अकेले विषयों (जो अतिश्योक्तिपूर्ण है) और पूर्ण पार–वैषयिकता (जो काल्पनिक है) के मध्य के एक विकल्प को चुनने पर जोर डालने की बजाय, शायद इन आदर्शों के बीच काम करना सबसे अच्छा होगा। इस तरह हम दुविधा को पहचानने और दोनों छोरों के दोषों से बच जायेंगे।[17]

जहाँ विषय पर चिन्तन करना लाभदायक हो सकता है, वह बयानबाजी और वैचारिक रूप से संचालित तर्कों में पतित हो सकते हैं, जो ''समर्पित'' वास्तविक अनुभवजन्य समाजशास्त्र के अधिक महत्वपूर्ण कार्य से हमारा ध्यान भंग कर सकता है। लेकिन विद्वता के ज्ञान पुंज ने कनाडियाई समाजशास्त्र की संरचना के

>>

बार में आनुभाविक और ऐतिहासिक अन्तर्दृष्टि प्रदान की है। रिक हेल्मस हेस ने हाल ही में प्रारंभिक बीसवीं शताब्दी के धर्मशास्त्र[18] में कनाडियाई समाजशास्त्र की जड़ों का प्रलेखन किया है और ब्रूस कर्टिस ने और भी पीछे जाकर समाज विज्ञान के विकास को 19वीं सदी के ''राज्य–निर्माण'' के साथ जोड़ा है।[19]

नये सांख्यिकीय अध्ययन हमारे काम पर रखने की विदेशी और घरेलू पद्धतियों और हमारे कार्य[20] का आलेखन करती हैं और हमारी अद्भुत ज्ञान मीमांसीय विविधता[21] को और समय के साथ हमारे सैद्धान्तिक उपागमों में परिवर्तन होता है को दर्शाते हैं। पिछले दशक के दौरान पियरे बोर्दियू, एक विचारक और शोधकर्ता जिन्होंने हमारी अंग्रेजी और फ्रेंच भाषायी शाखाओं[22] के मध्य सेतु बनाने में मदद की, के कार्य के चारों तरफ सैद्धान्तिक अभिसरण होता प्रतीत होता है। भविष्य की ओर देखते हुए, ''समाजशास्त्र के समाजशास्त्र'' के लिए अनुभवजन्य आधारित, बहस, जो संस्थागत परावर्तकता के स्वरूपों के लिए आत्मप्रशंसनीय कम और अनुभवजन्य अधिक स्वागत योग्य है।

जहाँ कनाडियाई ''समाजशास्त्र युद्ध'' विवादास्पद रहे हैं और उनसे कुछ अहम् चोटिल हुए हैं, कुल मिलाकर वे रचनात्मक रहे हैं। स्थापित विद्वान पुनः सम्मिलित हुए हैं जिसने समाजशास्त्रियों की एक नई पीढ़ी को सकारात्मक दृष्टि से समाजीकृत करने में मदद करी है। हमारी बैठकों में उपस्थिति, आंशिक रूप से आई. एस. ए. द्वारा प्रेरित शोध समूहों के सृजन से, बढ़ी है। हमारी बैठकों में अधिक फ्रेंच भाषा के सत्र होते हैं और कनेडियन रिव्यू ऑफ सोशियोलोजी के संपादक डॉ. फ्रॉस्वा डेपेलतू फ्रांसीसी भाषायी हैं। संघ एक पुनर्जीवित नारीवादी समाजशास्त्र, जो काफी हद तक डोरोथी स्मिथ और कनाडियाई समाजवादी–नारीवादियों से प्रेरित हैं, की डींग हाँक सकता है। इसके अतिरिक्त, वि–औपनिवेशीकरण और फर्स्ट नेशनस के देशज लोगों के साथ सुलह पर जोर देने वाला नया शोध एजेण्डा कई ऐसे मुद्दों तक फैला है जहाँ लोक जन प्रासंगिक है और उनकी आवश्यकता है।

कनाडियाई समाजशास्त्र संघ 2018 में टोरोन्टो में होने वाली आई. एस. ए. विश्व कांग्रेस में दुनिया भर से आने वाले समाजशास्त्रियों का स्वागत करने का आतुर है। हम अपनी विविध राष्ट्रीय समाजशास्त्रों को कैसे बेहतर समझा जाये और उन पर चिंतन किया जाये पर व्यापक तुलनात्मक संदर्भ के अन्तर्गत एक दूसरे से सीखने के लिए बातचीत को आगे बढ़ाने को तत्पर हैं। ■

नील मेकलागलिन से पत्र व्यवहार हेतु पता <ngmclaughlin@gmail.com>

[1] Curtis, B. and Weir, L. (2002) "The Succession Question in English Canadian Sociology." *Society/Société*, 26, 3.

[2] Brym, R. (2003) "The Decline of the Canadian Sociology and Anthropology Association." *Canadian Journal of Sociology*, 28(3): 411-416.

[3] McLaughlin, N. (2005) "Canada's Impossible Science: Historical and Institutional Origins of the Coming Crisis in Anglo-Canadian Sociology." *Canadian Journal of Sociology*, 30(1): 1-40.

[4] O'Malley, P. and Hunt, A. (2013) "Does Sociology Need to be Disciplined?" *Society/Société*, 27(1).

[5] See volumes 30(4) and 31(1) in the *Canadian Journal of Sociology* for the main comments on McLaughlin's "crisis" article, and his reply (2005-06).

[6] Warren, J-P (2006) "Sociologizing Alone? Is Anglo-Canadian Sociology really Facing a Crisis?" *Canadian Journal of Sociology*, 31(3): 91-105.

[7] Cormier, J. (2002) "Nationalism, Activism, and Canadian Sociology." *The American Sociologist*, 33(1): 12-41.

[8] Warren, J-P (2014) "The end of National Sociological Traditions? The Fates of Sociology in English Canada and French Quebec in a Globalized Field of Science." *International Journal of Canadian Studies*, 50: 87-108.

[9] Mathews, R. (2014) "Committing Canadian Sociology: Developing a Canadian Sociology and a Sociology of Canada." *Canadian Review of Sociology*, 51(2): 107-127.

[10] Burawoy, M. (2005) "2004 Presidential Address: For Public Sociology." *American Sociological Review*, 70: 4-28.

[11] See a special issue on this, edited by Rick Helmes-Hayes, and Neil McLaughlin (2009) "Public Sociology in Canada: Debates, Research, and Historical Context." *Canadian Journal of Sociology*, 34(3): 573-600.

[12] Davies, S. (2009) "Drifting Apart? The Institutional Dynamics awaiting Public Sociology in Canada." *Canadian Journal of Sociology*, 34(3): 623-654.

[13] Creese, G., McLaren, A. and Pulkingham, J. (2009) "Re-thinking Burawoy: Reflections from Canadian Feminist Sociology." *Canadian Journal of Sociology*, 34(3): 601-622.

[14] Carroll, W. (2013)"Discipline, Field, Nexus: Re-visioning Sociology." *Canadian Review of Sociology*, 50(1): 1-26.

[15] Jacobs, J. (2013) *In Defense of Disciplines*. Chicago, IL: University of Chicago Press.

[16] Curtis, B. (2016) "The Missing Memory of Canadian Sociology: Reflexive Government and the Social Science." *Canadian Review of Sociology*, 53(2): 203-225.

[17] Puddephatt, A. and McLaughlin, N. (2015) "Critical Nexus or Pluralist Discipline? Institutional Ambivalence and the Future of Canadian Sociology." *Canadian Review of Sociology*, 52(3): 310-332.

[18] Helmes-Hayes, R. (2016) "Building the New Jerusalem in Canada's Green and Pleasant Land: The Social Gospel and the Roots of English-Language Academic Sociology in Canada, 1889-1921." *Canadian Journal of Sociology*, 41(1): 1-52.

[19] Curtis, B. (2016), *ibid*.

[20] Warren, J-P (2014), *ibid*.

[21] See Joseph Michalski, "The Epistemological Diversity of Canadian Sociology." Forthcoming in *Canadian Journal of Sociology*.

[22] Stokes, A. and McLevey, J. (2016) "From Porter to Bourdieu: The Evolving Specialist Structure of English Canadian Sociology." *Canadian Review of Sociology*, 53(2): 176-202.

> जॉन उरी एवं उनके कार्य को स्मरण करना

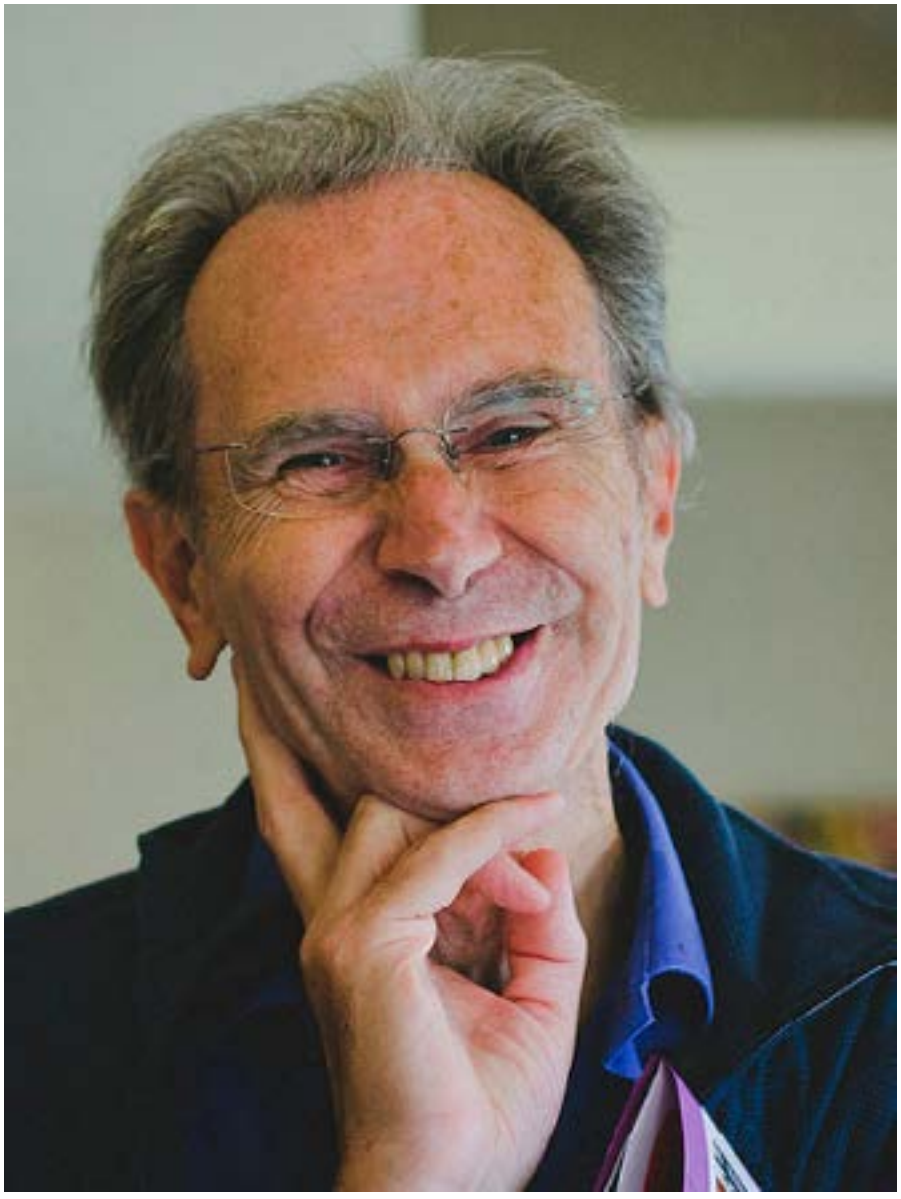

जॉन उरी

जब आप किसी को एक लंबे समय से जानते हैं, तो उन्हें उनके काम से अलग करना कठित होता है और संभवतः यह सही भी होगा कि ऐसा करने की कोशिश न की जाये। जॉन उरी ने न केवल प्रकाशन द्वारा अपितु अपने ढंग से अकादमिक क्षेत्र में भी अनेक माध्यमों से समाज विज्ञान में योगदान दिया।

उन्होंने दिखा दिया कि एक प्रभावी अनुसंधानकर्त्ता या शिक्षक बनने के लिए, एक 'दुर्जेय' व्यक्तित्व विकसित करने या कठोर लेखन शैली अपनाने की कोशिश करने की जरूरत नहीं होती। वह ढोंग करने या अपनी प्रस्थिति के विषय में चिंतन करने से पूर्णतः मुक्त थे। अपने शांत व हंसमुख व्यवहार के बावजूद वे एक तीव्र आलोचक मस्तिष्क एवं कार्य करने की असाधारण इच्छा के स्वामी थे। वे विनाश के बजाय सृजन में अधिक रूचि लेते थे, वह कटु–आलोचना किये बिना ही आलोचक हो सकते थे : वे एक सहमतिपूर्ण ढंग से असहमत हो सकते थे और वे अपने लेखन में तथा अन्य लोगों के साथ सम्बंधों में हमेशा स्पष्टवादी रहते थे। वे युवा अनुसंधानकर्त्ताओं को अपनी बौद्धिक मात्रा में शामिल होने और उन्हें उनकी रूचि अनुसार नई दिशाओं में आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करने व तैयार करने में विशेष योगदान करते थे।

जॉन को सीखने से प्यार था, नये विषयों और चिंतन के तरीकों को समाजशास्त्र में शुरू करने पर उन्हें एक बहुत स्पष्ट बौद्धिक खुशी मिलती थी–चाहे वह स्पेस, समय, विखण्डित पूंजीवादी, पर्यटन, प्रकृति, गतिशीलता, जलवायु परिवर्तन या अधिक विशिष्ट वस्तुएं जैसे त्रि–आयामी (3–डी) प्रिंटिंग के सामाजिक प्रभाव जैसे विषय क्यों न हो। उनकी समाजशास्त्र के संस्थापनों के प्रति निष्ठा व्यक्त करने में कोई रूचि नहीं

> >

थी, परंतु उनसे सम्बद्ध कोई भी सैद्धांतिक अवधारणा जिस विषय विशेष पर प्रकाश डालती थी, उसके उद्‌गम की परवाह किये बिना, वे उस पर चर्चा करते थे। उनकी नजर सामाजिक विकास पर केन्द्रित थी जबकि अन्य समाजशास्त्री मुख्यधारा के एजेंडे से अधिक बंधे थे, और जिन्होंने पर्यटन, गतिशीलता या ऑफशोरिंग जैसे विषय खो दिये। उनके लिए सामाजिक–सिद्धांत का प्रयोग किया जा रहा था और नये विषयों पर इसके प्रयोग के द्वारा इसे सुधारा जा सकता था।

मैं इतने छोटे से टुकड़े में अथवा इतने सीमित शब्दों में उनके योगदान की चर्चा शुरू नहीं कर सकता, इसलिए में सिर्फ दो अवधियों पर टिप्पणी करूंगा–पहली, उनके कैरियर की शुरूआत पर तथा दूसरी, अंतिम पड़ाव पर। मैं पहली बार 1970 के मध्य में उनके कार्य से परिचित हुआ जब हमारी रूचि क्रिटिकल यथार्थवाद, राजनीतिक अर्थवाद, तथा सामाजिक सिद्धांत एवं स्पेस (अंतरिक्ष) अभिसरण में थीं। मानव भूगोल की पृष्ठभूमि से आने वाले अनेक लोगों की तरह मैं भी सामाजिक सिद्धांत के साथ सम्बद्ध होने की तरीके खोज रहा था। जबकि, जॉन विपरीत दिशा से आगे बढ़ रहा था, वह भूगोल के साथ सम्बंध बना रहा था। ग्रेगरी एवं उरी के ''सोशल रिलेशनस एंड स्पशियल स्ट्रक्चरस्'' (Social Relations and Spatial Structures) ने इस सम्बंध के सैद्धांतिक प्रभावों को उजागर किया, तथा अपने कैरियर के बाद की अवधि में,–विशेष रूप से स्थानों, गतिशीलताओं एवं ऑफशोरिंग से सम्बद्ध अपने कार्य में–जॉन निरन्तर अंतरिक्ष (स्पेस) एवं समाज के मध्य सम्बंध पर पुनः चिंतन करते रहे।

70 के दशक के उत्तरार्द्ध व 80 के दशक के प्रारम्भ में ब्रिटिश समाज विज्ञान का बहुत–सा हिस्सा मार्क्सवाद द्वारा रेडीक्लाइज्ड हो गया था तथा जॉन उनमें से एक था जो इस प्रयास में खुले, गैर सैद्धांतिक व उपयुक्त तरीके से संलग्न थे। उस समय, समाजवादी अर्थशास्त्रियों का सम्मेलन रेडीकल रिसर्च पर ध्यान केन्द्रित कर रहा था और विषयों की एक व्यापक श्रृंखला पर चर्चा करने के लिए समग्र देश से आये अनुसंधानकर्त्ताओं व कार्यकर्त्ताओं के साथ नियमित रूप से सप्ताहांत में कार्यशाला आयोजित कर रहा था। CSE क्षेत्रवाद समूह–यह उनमें सक एक था, जहाँ मैं जॉन से पहली बार मिला था। ''लेंकेस्टर क्षेत्रवाद समूह''–ब्रिटेन में अनेक अनुसंधान समूहों में से एक था जो रेडीकल सिद्धांत पर ध्यान आकर्षित करता था। यह खोजने के लिए कि विशिष्ट स्थानों पर क्या हो रहा था। ये 'क्षेत्रीय–अध्ययन' (Locality Studies) जारी विवादों की पृष्ठभूमि के विरूद्ध आयोजित किये गये थे कि कैसे पूंजीवाद बदल रहा था, उनमें से कई ''उत्तर–फोर्डवादी'' के रूप में नये युग को प्रस्तुत कर रहे थे। जबकि अब हम देख सकते हैं कि बाद में वित्तीयकरण (Financialization) एवं नव–उदारवाद के विकास की अधिक महत्वपूर्ण घटनाओं से एक विकर्षण था, जॉन और उसके सहकर्मी स्कॉट लैश ने पूंजीवाद के बदलते चेहरे पर एक भिन्न और मूल रूपरेखा को प्रस्तुत करने के लिए The End of Organized Capitalism and Economics of Signs and Space शीर्षक से संयुक्त सैद्धांतिक व आनुभाविक अनुसंधान का आयोजन किया।

अपने अंतिम 5 वर्षों में उन्होंने, अन्य चीजों के अलावा, जलवायु परिवर्तन, संसाधनों एवं समाज से सम्बद्ध समस्याओं के समुच्चय को उजागर करने वाली 3 पुस्तकें प्रकाशित की Climate Change and Society, Societies Beyond Oil and Offshoring। स्कॉट लैस के नोट्स के अनुसार, जॉन हमेशा सामाजिक भविष्य में विशेष रूचि लेत थे तथा लैंकेस्टर विश्वविद्यालय में अभी हाल ही में उन्होंने इंस्टीटयूट फॉर सोशल फ्यूचर्स (सामाजिक भविष्य हेतु एक संस्था) की स्थापना में सहायता की थी।

इसमें कोई संदेह नहीं कि जलवायु परिवर्तन मानव समाज के सम्मुख सबसे बड़ी चुनौती है जिसका वह सामना करता है। यद्यपि पूंजीवाद के भविष्य एवं समाज से सम्बद्ध हाल के अनेक वृहद् ग्रंथ मुश्किल से ही वैश्विक तापमान की चर्चा करते हैं, जॉन पहले एक ऐसे समाजवैज्ञानिक थे जो आधुनिकता के विकास में जीवाश्म ईंधन के महत्व को पहचानते थे और प्रतिदिन के जीवन पर जलवायु परिवर्तन के प्रभावों के बारे में सोचते थे। जबकि हममें से अनेक, अतीत का अध्ययन करते हुए, अपने शोध को पश्चदर्शी दर्पण में देखते हुए आगे बढ़ा देते हैं, जॉन ने भी आगे देखा। दूसरे विश्वों–अच्छे या बुरे–में भी संभव है और जैसा कि उन्होंने दिखाया, समाजवैज्ञानिक इनके माध्यम से सोच सकते हैं और सोचना चाहिए एवं उन तक पहुँच सकते हैं। इस संकटपूर्ण समय में, मैं उम्मीद करता हूँ कि अधिक लोग उनके द्वारा तय किये गये उदाहरणों का पालन करेंगे। ■

– एंड्रयू सेअर, लैंकेस्टर विश्वविद्यालय, ब्रिटेन।

> जॉन उरी
भविष्य के समाजशास्त्री

इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल फ्यूचर्स, लैंकेस्टर के निदेशकों की बैठक, 2015

जॉन उरी, जिनका हाल ही में निधन हुआ है, ब्रिटेन के सबसे उल्लेखनीय समाजशास्त्रियों में से एक थे, इन्होंने लगभग 20 पुस्तकें लिखी इनमें से कई बहुत प्रभावशाली थीं। कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से स्नातक करने के बाद, जॉन ने अपना संपूर्ण जीवन लैंकेस्टर विश्वविद्यालय में व्यतीत किया, जहाँ हम दोनों 1997–1998 तक सहकर्मी रहे। हमने दो पुस्तकें साथ मिलकर लिखीं, The End of Organised Capitalism (1987) एवं Economics of Signs and Space (1994)। दोनों पुस्तकें भविष्य के बारे में बताती हैं, कई मायनों में, जॉन एक भविष्यवक्ता (Futurologist) थे।

एक पी एच डी विद्यार्थी के रूप में, जॉन एवं बॉब जेसप कैम्ब्रिज में क्रांतियों पर आयोजित जॉन डन की संगोष्ठी में सम्मिलित हुए थे, यह संगोष्ठी क्वेंटिन स्किनर से भी प्रभावित थी, जो संभवतः दुनिया के सबसे प्रख्यात विद्वान हॉब्स के विद्यार्थी थे। अपने पारलौकिक आयामों के साथ क्रांतियाँ हमेशा किसी न किसी तरह भविष्य से जुड़ी होती हैं, हॉब्स राज्य शक्ति के बारे में बहुत अधिक लिखते थे। संभवतः 'क्रांतियों एवं राज्य' से सम्बद्ध उनके इन प्रभावों ने जॉन को राज्य की शक्ति की वास्तविकताओं के बारे में अनुभव करवाया।

1975 में, जॉन एवं रसेल कीट ने 'Social Theory as Science' शीर्षक से एक पुस्तक लिखी जो समाजशास्त्रीय ज्ञानमीमांसा को एक निश्चित 'यथार्थवाद' के प्रारूप में सम्बोधित करती है। 'यथार्थ' वो नहीं था जिसका सामना सामाजिक कर्त्ताओं (सोशल एजेंटस) को करना पड़ता था, अपितु यथार्थ गहन संरचनाएं थी जिन्होंने आनुभविक सामाजिक सम्बंधों को निर्धारित किया। यह समाजशास्त्रीय संरचनाबाद था जो लुईस आल्थुजन के 1970 के मार्क्सवादी संरचनावाद से प्रभावित था। परंतु जहाँ मार्क्सवादी संरचनावाद हमेशा आर्थिक आधार से निर्धारित होता था, वहीं उरी का संरचनावाद सामाजिक संरचनाओं का एक अत्यधिक सामान्य समुच्चय था, जिसमें संरचनात्मक कार्य–कारण सम्बंध की एक अवधारणा सम्मिलित है जो कि न केवल प्रतिदिन के आनुभाविक अनुभवों से निर्धारित है अपितु इसमें अनेक प्रकार के सामाजिक परिवर्तनों तथा भविष्य के सामाजिक सम्बंधों को उजागर किया है।

"The End of Organised Capitalism" एवं "Economics of Signs and Space" पुस्तकों की प्रशंसनीय एवं ढंग से समीक्षा की गई और बहुत अधिक चर्चित भी हुई, तथा डेविड हार्वे एवं मैनुअल कैसेल को प्रभावित किया (तथा उनसे प्रभावित भी थी)। The End of Organised Capitalism में पूंजी के संचयन पर चर्चा की गई है परंतु तर्क दिया गया है कि पूंजीवाद के नये चरण को अब सामाजिक और संस्थागत संगठन द्वारा और अधिक नियंत्रित नहीं किया जा सकता, इसके बजाय सामाजिक विखण्डन द्वारा किया जा सकता है। जॉन एवं मैं कुछ हद तक अलग–अलग परिप्रेक्ष्य से इस तर्क तक पहुँचे थे।

मैंने केन्द्रीय (श्रमिक संघ और नियोक्ता संघ) सामूहिक सौदेबाजी के विघटन के आधार पर ही पूंजीवाद के विघटन को स्वीकार किया था। जॉन ने पूंजीवाद के 1980 के बाद के चरण को आंदोलन एवं प्रवाह तथा समय के संदर्भ अधिक देखा, उनका अभिमुखन न तो वर्तमान के प्रति था और न ही अतीत के प्रति अपितु भविष्य के प्रति था। अतः पुस्तक में जॉन ने समय पर एवं पर्यटन के क्षेत्र में लोगों की आवाजाही पर अध्यायों को सम्मिलित किया है–एक तर्क जो बाद में जॉन की पूरी पुस्तक 'The Tourist Gaze' में विकसित किया जायेगा,

> >

एक मायने में जिससे पर्यटन के समाजशास्त्र की स्थापना हुई।

1980 के उत्तरार्द्ध में जॉन ने डेरेक ग्रेगरी के साथ मिलकर Social Relations and Spatial Structures पुस्तक का संपादन किया। इस प्रोजेक्ट में डोरीन मैसी और 'पुर्नसंरचना' पर उनके विचार महत्वपूर्ण बिंदु थे, जो 'मूल्य श्रृंखला' (Value Chains) में परिवर्तन से सम्बद्ध है। कहते हैं कि एक मूल्य श्रृंखला दक्षिण अमेरिकी प्राथमिक सामग्री को एक वस्तु की सोर्सिंग का पता लगायेगी, तथा कहते हैं कि मैक्सिकों के एक कारखाने में इसके परिवर्तन को देखो तथा यूरोप या अमेरिका में इसके विपणन व वितरण को देखो। इन 'मूल्य श्रृंखलाओं' का 'विस्तार' हो रहा था, वे दूर के स्थानों को समय तथा स्थान से जोड़ रही थी। वे हमें आनुभाविक अवधारणाएं/क्षण देते हैं जिसे गिडिंस ने 'स्थान–समय पृथक्करण' (Spcae-time distantiation) एवं हार्वे ने 'स्थान–समय संपीडन' (Space-time Compression) की संज्ञा दी।

यह वैश्विक प्रवाहों के पूर्ण समाजशास्त्र से पहले उपस्थित था, जिसे जॉन और मैंने Economics of Signs and Space में सम्बोधित किया था। कैसेल ने पहले से ही संरचनाओं के पिछले समाज से 'प्रवाहों' के नये वैश्विक समाज की ओर शिफ्ट/परिवर्तन को सम्बोधित करना शुरू कर दिया था, जिसमें प्रवाहों की एक संपूर्ण श्रृंखला शामिल थी–पूंजी का प्रवाह, श्रम–गतिशीलता का प्रवाह, वस्तुओं और माल का प्रवाह, पर्यावरणीय विषय या 'क्षय' बना और सूचना एवं संचार में प्रवाह का।

जॉन ने इसे 'गतिशीलताओं के समाजशास्त्र' में विकसित किया, जोकि 1990 के उत्तरार्द्ध से अंत तक उसके शोध एवं लेखन का मुख्य आधार बन गया। इनकी रूचि मुख्यतः इस बात में थी कि कैसे लोग पर्यटन में एक स्थान से दूसरे स्थान पर गमन करते हैं, परंतु गतिशीलताओं पर केन्द्रित उनकी हरेक पुस्तक में 'स्वतः गतिशीलता' (auto-mobilities) पर एक अध्याय सम्मिलित है जो आवश्यक है, और पढ़ने के लिए बाध्य करता है। यह हम विश्व को तकनीकी रूप से समझने के लिए एक कार के प्रिज्म से देखने का प्रयास करते हैं।

तब जॉन ने जलवायु परिवर्तन पर पुस्तकों की एक श्रृंखला लिखी, दोषों के प्रवाह या गतिशीलताओं के विषय पर लौटने के लिए–यह एक ऐसा मोड़ था जिस समय पर लॉन राजनीति में वामपंथ की ओर उल्लेखनीय कदम बढ़ा रहे थे। मैं हमेशा से ही वामपंथ में जॉन के साथ था, परंतु लगभग 2010 से वे पूंजीवाद के कड़े आलोचक थे। उदाहरण के लिए उनकी हाल की पुस्तक 'offshoring' को देखा जा सकता है। मुझे याद है ब्रिटेन का एक अनुसंधान परिषद सम्मेलन जिसकी शंघाई में मैंने उनके साथ मिलकर मेजबानी की थी, जिसमें समाजशास्त्रियों एवं अनेक अर्थशास्त्रियों को आमंत्रित किया गया था। एक प्रख्यात्, बल्कि नव उदारवादी और यहाँ तक कि जलवायु–नास्तिक, फ्रांसीसी अर्थशास्त्री उपस्थित थे, जॉन पहले से ही अपने 60 के मध्य दशक में थे, एक 25 वर्षीय व्यक्ति के जनूनू के साथ उनसे भिड़ गये।

जॉन भविष्य के एक समाजशास्त्री थे। मैं उनसे मिला, जब हम दोनों तीस वर्ष की आयु के थे, हम दोनों अगले 21 वर्षों तक सहकर्मी रहे तथा बाकी समय हम घनिष्ठ मित्र रहे। सिल्विया बाल्वी, उन सभी वर्षों में जॉन की साथी थी, ने कहा कि जॉन ने मुझे एक स्वाभाविक बुद्धिजीवी की तरह देखा, वे मुझे हमेशा नियंत्रण से बाहर रहने के लिए प्रेरित करते थे। इस अनियंत्रित ऊर्जा पर अपनी कुछ संरचना डालने के लिए मैं उनकी आभारी हूँ, उनका यह ऋण कभी नहीं चुका सकती। मैं उन्हें याद करती हूँ। हम उन्हें याद करते रहेंगे। ■

–स्कॉट जैश, गोल्डस्मिथ, लंदन विश्वविद्यालय, लंदन।

> जॉन उरी : समाजशास्त्री से बड़े एक समाजशास्त्री

लो–कार्बन इनोवेशन संगोष्ठी, शेन्जेन, चीन, 2016

जॉन उरी की आकस्मिक मृत्यु से उनका परिवार, मित्र एवं सहकर्मी स्तब्ध रह गये। मैं उनसे पहली बार 1967–1970 में कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में पोस्टग्रेजुएट विद्यार्थी के रूप में मिला था, हम साथ–साथ सुपरवाइजर एवं रूचियों को साझा करते थे, साथ ही समाजवादी अर्थशास्त्रियों (सोशलिस्ट इकनॉमिस्ट) के सम्मेलन एवं समाजशास्त्र की गुप्त सभाओं में भी भाग लेते थे और उसके बाद 1990 में हम पुनः सहकर्मी बने जब मुझे लैंकेस्टर विश्वविद्यालय में समाजशास्त्र विभाग में नियुक्ति प्राप्त हुई।

जॉन उरी को इसके साथ–साथ कैम्ब्रिज के क्राइस्ट कॉलेज में इकनॉमिक्स एंड पॉलिटिक्स विभाग में, अन्यों के बीच, जहाँ उन्हें एक अर्थशास्त्री जेम्स मीड के निरीक्षण में काम करना था, जोकि बाद में नोबेल पुरस्कार से भी सम्मानित हुए, भी नियुक्ति प्राप्त हुई। यह वो समय था जब जॉन मेनार्ड लींस के कार्य को कैम्ब्रिज में अभी भी गंभीरता से लिया जाता था और जहाँ अभी भी राजनीतिक अर्थवाद में विधर्मिक अर्थशास्त्र को स्थान प्राप्त था। तब जॉन ने ब्रिटिश सोशल साइंस रिसर्च काउंसिल (ब्रिटिश समाज विज्ञान अनु–संधान परिषद) द्वारा प्रायोजित रिसर्च फैलोशिप के अंतर्गत 'सापेक्षिक वंचन एवं क्रांति' (रिलेटिव डेपरीवेशन एंड रिवोल्यूशन) विषय पर इकनॉमिक्स एंड पॉलिटिक्स संकाय में पी एच डी प्रारम्भ की (इस स्तर पर, कैम्ब्रिज में समाज विज्ञान एवं राजनीति विज्ञान में कोई संकाय सदस्य नहीं था)। यह सर कीथ जोसेफ से पहले किया गया था, जो श्रीमती थ्रैचर के शिक्षा एवं विज्ञान के एक तेजतर्रार राज्य सचिव थे, उन्होंने परिवार निर्धनता के चक्रीय सांस्कृतिक वंचन के सिद्धांत को अस्वीकृत करते हुए रोष व्यक्त किया और इस बात से इंकार किया कि समाजशास्त्र एक विज्ञान है एवं SSRC का नाम बदलकर 'इकनॉमिक एंड सोशल रिसर्च काउंसिल' करने का प्रस्ताव दिया। कुछ वर्षों बाद, (1989–92) जॉन ने समाजशास्त्र समूह के प्रोफेसर एवं विभाग की राष्ट्रीय अध्यक्ष के रूप में सेवा की तथा समान माँग के विरूद्ध समाजविज्ञान की रक्षा करने के लिए उसमें भारी सहभागिता की। 1999 में उन्होंने ब्रिटेन के शिक्षाविदों, शिक्षित समितियों एवं समाजविज्ञानों के बुद्धिजीवियों/विद्वानों की राष्ट्रीय अकादमी (बाद में इसका नाम समाज विज्ञान अकादमी हो गया) की स्थापना में सहायता की।

1970 में, अपनी पी एच डी पूरी करने से पहले, जॉन ने लैंकेस्टर विश्वविद्यालय में समाजशास्त्र में अध्यापन कार्य की शुरूआत की। 46 वर्ष की निरन्तर सेवा के दौरान उन्होंने अपने विभाग में, व्यापक रूप से विश्वविद्यालय में अपने कार्य और संस्था–निर्माण दोनों के माध्यम से एक मजबूत और लचीली अनुसंधान प्रवृत्ति विकसित करने में बहुत महत्वपूर्ण योगदान दिया। 'तकनीकी क्रांति की तीव्र उत्तेजना' के विस्तार एवं 1970 के दशक में वामपंथी विचार धारा के प्रभाव के उतावले दिनों के बाद से विश्वविद्यालयों में काफी बदलाव आया है और शिक्षाविदों एवं विद्वानों की माँग भी बहुत बढ़ गई है। फिर भी जॉन ने शिक्षण के प्रति अपने प्यार, सामाजिक परिवर्तन के विषय में अपनी जिज्ञासा, नवीन विषयों एवं चिंतन के तरीकों पर गहन शोध करने में स्वतः स्पष्ट बौद्धिक खुशी को बनाये रखा चाहे फिर वह शक्ति हो, सामाजिक सिद्धांत, अंतरिक्ष, समय, स्थानीयता एवं क्षेत्रवाद, असंगठित पूंजीवाद, अवकाश एवं पर्यटन, प्रकृति एवं पर्यावरण, गतिशीलताएं, वैश्विक समाज की जटिलताएं, ऊर्जा के उपयोग एवं जलवायु परिवर्तन, नगरीय प्रारूप, थ्री–डी (त्रि–आयामी) प्रिंटिंग के सामाजिक प्रभाव एवं सबसे हाल ही में, वर्तमान–भविष्य तथा भावी भविष्य इत्यादि कुछ भी हो। इनमें से उनकी अनेक रूचियों ने लैंकेस्टर में 'सामाजिक भविष्य संस्था' (इंस्टीटयूट फॉर सोशल फ्यूचर) की स्थापना हेतु इनके प्रयासों को समर्थन दिया।

जॉन के जीवन के इस उत्सव में, स्कॉट लैंस एवं एंड्रयू ऐअर ने अपने योगदानों में उनके कुछ प्रेरणादायक कार्यों का वर्णन किया।

>>

जॉन की जटिल एवं विस्तृत 'सोशल शियरी एस साइंस' से मैं प्रभावित हूं, जिसे रसेल कीट (1975, 2015 में पुनः प्रकाशित) के साथ मिलकर लिखा गया था, इसमें उनके सैद्धांतिक पक्ष के हर बिंदु को उल्लेखित किया गया था और समाजविज्ञान के दर्शन में मेरा अपना कार्य भी इससे प्रेरित था। हालांकि, वे हमेशा परिवर्तित होते सैद्धांतिक एवं मौलिक बहसों/विवादों में बराबर रूचित लेते थे। जॉन ने विस्तृत अध्ययन किया और सदैव अपने बौद्धिक स्तर को बढ़ाने के विषय में पूछते रहते थे कि वे कौन–सी नई समझ या अंतदृष्टि विकसित कर सकते हैं, किन विसंगतियों एवं नवीनताओं को वे सामने जा सकते हैं तथा कहाँ वे नेतृत्व प्रदान कर सकते हैं। उनकी रूचियों का क्षेत्र व्यापक था, प्राकृतिक एवं पर्यावरण विज्ञान के साथ वे सम्बद्ध थे तथा एक मजबूत 'उत्तर–अनुशासनात्मक' (पोस्ट–डिसीपिलिनरी) उपागम को परिलक्षित करते थे जो कि लैंकेस्टर के समाजशास्त्र विभाग की विशेषता को बताता है। उनके व्यक्तित्व में यह एक महत्वपूर्ण कारक था कि वे विभिन्न विषयों, पैराडियों, ज्ञानवादी समुदायों के बीच मध्यस्थता करने की क्षमता रखते थे, अनेक विद्यार्थियों एवं शोधार्थियों के साथ अपने उदार एवं लोकतांत्रिक ढंग से अंतः क्रिया में संलग्न रहते, उन्हें अपने रूचियों एवं अपने प्रोजेक्ट स्वयं चुनने के लिए प्रोत्साहित करते तथा अपनी व्यापक बौद्धिक पूंजी से तैयार विचारों और अंतदृष्टि को विद्यार्थियों के साथ साझा करते, जो इन अंतः क्रियाओं के माध्यम से नवीनीकृत और व्यापक भी होते रहते थे।

एक प्रतिष्ठित समाजशास्त्री बनने एवं बने रहने के लिए अनेक तरीके हैं। जॉन ने इनमें से अनेक तरीकों में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। परंतु वे कभी भी शक्ति को स्थगित करके या अपनी बौद्धिक एकता का त्याग करके प्रसिद्धि को पाने के लिए नहीं दौड़े। वह निश्चित रूप से अपनी वफादारियों में और महत्वपूर्ण स्थितियों में ''स्थानीय'' थे और विद्यार्थियों तथा सहकर्मियों की सहायता करने के लिए हमेशा उत्साही रहते थे। आल्विन गाउल्डनर की संगठनात्मक अस्मिताओं के मध्य अंतर के साथ निरंतर बने रहने पर भी वह एक वैश्विक बौद्धिक उपस्थिति के साथ भी उतनी ही मजबूती से जुड़े रहे। उनकी राशियाँ एवं प्रोजेक्ट्स प्राकृतिक एवं सामाजिक विश्व से सम्बद्ध है और उनका प्रभाव व्यक्तिगत संपर्कों एवं उभरती बहसों में समय पर हस्तक्षेप के द्वारा वैश्विक स्तर पर फैल गया।

जॉन 'सामजशास्त्रियों का एक समाजशास्त्री' था, जो शिल्प कला से परिचित था और सम्मान करता था परंतु इसे विकसित भी करना चाहता था। वह अत्याधुनिक नवाचारों के साथ अपनी दृढ़ सुरक्षा के लिए तथा राजनेताओं के आक्रमण के विरूद्ध विषय को बढ़ावा देने के लिए विख्यात थे। परंतु एक प्रोफेशनल समाजशास्त्री के विपरीत जोकि विषय की संकीण/सीमित समझ से सम्बद्ध वास्तविक प्रोजेक्ट पर ही पूरी तरह केन्द्रित होते हैं, जॉन एक व्यग्र बुद्धिजीवी भी थे। उनकी असीमित जिज्ञासा ने उनके जीवन को गतिशील बना दिया, विभिन्न क्षेत्रों से जोड़ा तथा अनुसंधान के क्षेत्र में नयी और नीतिगत बहस करने की ऊर्जा दी। वास्तव में, जॉन ने समाज विज्ञान के सैद्धांतिक, आनुभविक एवं व्यावहारिक क्षेत्र में, सामाजिक प्रवृत्तियों को दर्शाने में तथा नवाचारी कार्य को आकार देने में महत्वपूर्ण कार्य किया। यह आश्चर्यजनक है कि उन्होंने अपने लेखन में, सहयोगात्मक कार्य में, अंतरराष्ट्रीय नेटवर्क को विकसित करने में, अनुसंधान प्रबंधन में, लेखा–परीक्षण के अंतहीन सिलसिले पर बातचीत में और समाज विज्ञान को बढ़ावा देने में बहुत कुछ अर्जित किया। यह भी उतना ही आश्चर्यजनक था कि उन्होंने यह सब अपने शांत, उदार, मिलनसार एवं हंसमुख व्यवहार को खोये बिना किया।

जॉन भी सी. राइट मिल्स (द सोशियोलॉजिकल इमेजीनेशन नामक क्लासिकल पुस्तक के लेखक, 1959) की तरह ओजपूर्ण बुद्धि के स्वामी थे। तुच्छ सत्य को दोहराकर हमेशा सही होने की तुलना में गलत होने का खतरा लेकर कुछ महत्वपूर्ण कहना, अधिक उपयोगी है। हाल के वर्षों में, वह एक जन–बुद्धिजीवी (पब्लिक–इंटेलेक्चुअल) की तरह मानवजाति और विश्व के भविष्य के लिए महत्वपूर्ण मुद्दों पर निर्णय लेने और बहसों में हिस्सा लेने के लिए अधिक सक्रिय थे। इसके अतिरिक्त, हालांकि, वह एक महान सहकर्मी थे तथा उनका प्रभाव उनके निरन्तर कार्य तथा बहसों के माध्यम से जीवित रहेगा, उनके द्वारा जो उनसे प्रेरित थे। ■

– बॉव जेसप, लैंकेस्टर विश्वविद्यालय, ब्रिटेन।

> निकटता और गतिशीलता में : जॉन उरी का कीर्तिमान

''भविष्य के शहर : स्मार्ट या खुश'' पर संगोष्ठी, लैंकेस्टर, 2016

ब्रिटिश समाजशास्त्री जॉन उरी का मार्च में उस समय निधन होना एक दुखद घटना है जब हम एक साथ लिखे गये एक लेख "Mobilizing the new Mobilities Paradigm" के एक नये जर्नल Applied Mobilities में प्रकाशित होने का जश्न मना रहे थे–एक ऐसा लेख जिसमें हमने पिछले एक दशक में समाज–विज्ञानों में गतिशीलता पैराडिम के प्रभाव का मूल्यांकन किया। हम दोनों ने Current Sociology में 'गतिशीलता मोड' (Mobilites turn) एवं 'स्थानिक मोड़' (Spatial turn) के बीच सम्बंध पर एक साथ एक निबंध लेखन की लगभग आधी प्रक्रिया पूरी कर ली थी। मैं बहुत खुशकिस्मत हूं जिसे आंतरिक/स्पेस एवं गतिशीलता पर उनकी सोच की उत्पत्ति पर तथा एक विषय के रूप में समाजशास्त्र से इनके सम्बंध पर जॉन से बातचीत करने का मौका मिला।

मैं 1998 में लैंकेस्टर विश्वविद्यालय के समाजशास्त्र विभाग में शामिल हुआ, क्योंकि जॉन वहीं था, एक सफल सहयोगी और अन्तःवैषयिक वातावरण बनाने की अपनी योग्यता के माध्यम से जॉन ने दर्जनों स्नातक छात्रों, पोस्ट डाक्टरल शोधार्थियों, अतिथि (विजिटिंग) अनुसंधानकर्त्ताओं एवं उत्तर पश्चिमी इग्लैंड के नये व्याख्याताओं को आकर्षित किया। गतिशीलताओं से सम्बंधित अनेक लेखों पर एक साथ काम करने के बाद, हमने 2003 में लैंकेस्टर में 'सेंटर फॉर मॉबिलिटीज रिसर्च' (गतिशीलताओं पर शोध हेतु केन्द्र) की सह–स्थापना की; आगामी वर्षों में, हमने एक आरम्भिक वैकल्पिक गतिशीलता भविष्य सम्मेलन का आयोजन किया, केविन हन्नान के साथ मिलकर डवइपसपजपमे नामक जर्नल की स्थापना की, 'भौतिकताओं एवं गतिशीलताओं' पर Environment and Planning A शीर्षक से एक विशेष अंक का सह–संपादन किया तथा Mobile Technologies of the City (शहर की मोबाइल/गतिशील तकनीकी) का सह–सम्पादन किया। मूलभूत काम की इस जल्दबाजी में, स्थानिक पैमानों के परे सोचने अनुशासनात्मक सीमाओं को धुंधला करने, भौतिकताओं और लौकिकतओं को खोजने में, ''निष्क्रिय'' राष्ट्रीय या सामाजिक ढाँचों से आगे बढ़ने और ''गतिशीलताएं'' समाज विज्ञान के लिए एक भिन्न दृष्टिकोण (विजन) उपलब्ध करा सके, की खोज करना : जो अधिक खुला, अधिक व्यापक, अन्य क्षेत्रों का अधिक अभ्यस्त, और अधिक जीवंत हो, पर मजबूती से बल देता है।

हमारी हाल ही में हुई बातचीत के लिए मैं बहुत आभरी हूँ, जिसमें जॉन ने सामाजिक सिद्धांत में स्थानिक मोड की गतिशीलताओं में अपनी रूचि की उत्पत्ति का पता लगाया, जिसकी शुरूआत लेफेब

>>

(Lefebure) की 1974 में Lae Production, de L'espace, एवं एक अन्य महान विचारक डौरीन मैसी, दुख की बात है जिन्हें हमने हाल ही में खोया है की ब्रिटिश बहस के साथ हुई। उनकी पुस्तक 1984 में Spatial Divisional of Labour ने हर जगह और जगह के बाहर पूंजी के जटिल और विविध आंदोलनों तथा परिणामस्वरूप प्रत्येक स्थान के भीतर अवसादन के स्वरूपों का मूल्यांकन किया, इसके बाद ग्रेगरी एवं उरी की पुस्तक 1985 में Social Relations and Spatial Structures, अस्तित्व में आयी, जो हार्वे, गिडिंस, मैसी, प्रेड, सेअर, सोजा एवं थ्रिफ्ट के भौगोलिक एवं समाजशास्त्रीय योगदानों को एक साथ लागी। यह संकलन जॉन के मोड के बारे में सूचित करता है जिसे उसने 'एक स्थान में एवं स्थान के बाहर लोगों के फुरसत के आंदोलन' की संज्ञा दी, जिसे आगे 'The Tourist Gaze (1990)' में विकसित किया। इसी तरह बहु–गतिशीलताओं एवं उनके स्थानिक परिणामों की चर्चा लैश एवं उरी की The End of Organised Capitalism (1987) तथा Economics of Signs and Space (1994) में की गई। जॉन की प्रारम्भिक पुस्तकें Social Theory as Science (1975, जो रसेल कीट के साथ है) तथा The Anatomy of Capitalist Societies (1981) भी महत्वपूर्ण सैद्धांतिक योगदानको, उनके काम में इस बाद की दिशा ने नींव का काम किया। 1990 के दशके के मध्य तक, 'प्रवाह' एवं 'नेटवर्क' (जाल) के क्षेत्रों के सैद्धांतिकरण कैसेल के 1996 में नेटवर्क सोसायटी पर त्रयी–रचना के साथ विशेष रूप से महत्वपूर्ण हो गये तथा मिलेनियम के दौर में 'गतिशीलता' की अवधारणा एक मुख्य अवधारणा के रूप में उभरी। उरी की रचना Sociology Beyond Societies में एक उभरते स्थानिक समाज विज्ञान के भीतर एक मुख्य अवधारणा के रूप में गतिशीलता पर ध्यान केन्द्रित करने में सहायता की अथवा 'मोबाइल समाजशास्त्र' (गतिमान समाजशास्त्र)–एक उपागम जो पिछले 15 सालों में, कम से कम अमेरिका के बाहर, तेजी से प्रभावशाली बन गया।

गतिशीलता पर बल देने वाला यह दौर, 1980 के दशक के प्रारम्भिक समय में पॉलिटी प्रेस के साथ Environment and Planning D : Society and Space and Theory, Culture and Society नामक जर्नल की स्थापना एक साथ एक ही समय में हुयी थी। जॉन ने इन प्रकाशनों का वर्णन विश्वविद्यालय पर थैचर सरकार के आक्रमणों तथा विशेष रूप से विश्वविद्यालय के समाज विज्ञान के कार्यक्रमों में कटौती करने के प्रत्युत्तर में एक उत्तर–अनुशासनात्मक समाजविज्ञान एवं सामाजिक सिद्धांत को विकसित करने के प्रयास के हिस्से के रूप में किया।

जॉन ने भी अपने काम का वर्णन अमेरिकी समाजविजन तथा 'ब्रिटिश अनुभविकतावाद' दोनों के विपरीत किया। मेरे दृष्टिकोण से संयुक्त राज्य अमेरिका में, प्रत्यक्षवाद–विरोधी एवं क्रिटिकल सिद्धांत जॉन उरी के कार्य से तेजी पकड़ता है और अमेरिकी समाजशास्त्रीय सदा के स्पष्ट अनिच्छा की व्याख्या करने में सहायता करता है। अमेरिका की अनेक मुख्यधारा वाले समाजशास्त्र विभाग को गतिशीलताओं के नये पैराडिम के साथ संलग्न करता है–एक ऐसा पैराडिम जिसे मैं आलोचनात्मक, संलग्न, उत्तर–अनुशासनात्मक समाज–विज्ञान के लिए एक आशा का दीपस्तम्भ मानता हूँ।

एक 'नये पैराडिम' की घोषणा करने का घमण्ड दिखाने के बावजूद, जॉन व्यक्तिगत रूप से बहुत शर्मीले एवं सरल थे, कभी भी अपनी उपलब्धियों का ढिंढोरा नहीं पीटते थे। जॉन का व्यक्तिगत स्वभाव पूर्णतः अभिजन–विरोधी एवं उदारवाद विरोधी था, जैसा कि उनकी प्रतिदिन की अन्तः – क्रियाओं से भौतिक रूप से स्पष्ट था और उनका हमेशा एक ही रंग की कार्य–यूनीफार्म में रहना–आमतौर पर एक नीली सूती शर्ट, नीली जैकेट एवं पतलून, हमेशा खुली कॉलर और बिना टाई के रहना–प्रतीकात्मक रूप से स्पष्ट करता था। वह पूरी तरह से एक समतावादी थे, उनमें मिथ्याभिमान, संस्तरण या परकी चाहत के लिए धैर्य नहीं था। वह विश्व भर के छात्रों और आगंतुकों का एक संक्रामक मुस्कान के साथ स्वागत करते थे और उन्होंने हमेशा सभी के लिए एक ही मेज पर जगह बनायी।

जॉन उरी ने एक नये प्रकार के मोबाइल/गतिमान समाजशास्त्र की रचना की : जो विषयों के परे चला जाता है, नये प्रकार के बौद्धिक निर्माण के लिए सक्षम बनाता है और एक बड़े पैमाने पर दुनिया में अपनी प्रासंगिकता को नवीनीकृत करने की समाजशास्त्र को अनुमति देता है। वह महत्वपूर्ण सार्वजनिक मुद्दों के साथ ही हाल ही के अपने महत्वपूर्ण कार्यों–जलवायु परिवर्तन, संसाधन निष्कर्षण, और अंधेरी अर्थव्यवस्थाओं को सम्बोधित करता है। नवीन गतिशीलता पैराडिम एवं उरी के कार्य का बड़ा संकलन अमेरिकी एवं ब्रिटिश समाज विज्ञानों में मात्रात्मक आनुभविक परम्पराओं के विपरीत निरन्तर खडा है, जबकि अकादमिक विभागों के संस्तरण, व्यवसायिक निकायों तथा नवउदारवादी विश्वविद्यालय के अनुशासनात्मक समापन के विरूद्ध संघर्ष कर रहा था। उन्होंने जो कुछ प्रारम्भ किया था उसे समाजशास्त्र अच्छी तरह से निरंतर बनाये रखेगा। ■

– मिमी शैलर, ड्रेक्सेल विश्वविद्यालय, अमेरिका।

> यौन हिंसा के खिलाफ छात्र अभियान

एना विदु, बार्सीलोना विश्वविद्यालय, अर्थव्यवस्था और समाज पर आई. एस. ए. शोध समिति (RC02) के सदस्य और
टिंका शुबर्ट, लोयोला विश्वविद्यालय, अण्डालुसिया, समाज में महिलाओं पर आई. एस. ए. की शोध समिति (RC32) के सदस्य[1]

चित्रण अरबू द्वारा

कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय–बर्कले लंबे समय से परिसर में यौन उत्पीड़न और यौन हमलों पर बहस के केंद्र में रहा है, इसलिये नहीं कि यहां असामान्य संख्या में ये घटनायें होती है बल्कि जिस तरह से इसने प्रतिक्रिया दी है। दुर्भाग्य से, यह समस्या अधिकतर विश्वविद्यालयों में बहुत अधिक फैली हुई है। इस समस्या से जूझ रहे अनेक कॉलेजों में से एक के रूप में, यू. जी. बर्कले यौन उत्पीड़न से मुकाबला करने में अपने असामान्य छात्र आंदोलनों के लिये जाना जाता है–एक आंदोलन जो कि अन्य परिसरों तक भी पहुंच गया है।

यू सी बर्कले में परिसरों में यौन हिंसा के खिलाफ छात्र विरोधों की अग्रणी परंपरा हैं जो इसे इस प्रयास में एक नेता बनाता है। इस मुद्दे को सबसे पहले 1970 के दशक के उत्तरार्ध में उठाया गया था जब समाजशास्त्र विद्यार्थियों ने Women Organised Against Sexual Harassment (WOASH) का गठन किया। यह महिलाओं का एक समूह है जिन्होंने एक समाजशास्त्र के प्रोफेसर के खिलाफ तेरह छात्र शिकायतकर्ताओं की ओर से कार्यवाही करने का फैसला किया। बहुत ही शुरूआती मामलों के रूप में, इसने अमेरिका में उच्च शिक्षा में यौन हिंसा पर चुप्पी तोड़ने में कदद की, और कॉलेजों में यौन उत्पीड़न और यौन हमलों के खिलाफ संघर्ष के नये रास्ते बनाये।

1979 की फेडेरल शिकायत जो WOASH ने विश्वविद्यालय के खिलाफ दर्ज की, ने सबसे पहले उदाहरणों का निर्माण किया, जिसमें Title IX legislation का इस्तेमाल शैक्षणिक क्षेत्र में यौन हमलों के खिलाफ कानूनी ढांचे के रूप में किया। परंतु WOASH यहां नहीं रूका। दो साल बाद, इसने परिसरों में आने वाले विद्यार्थियों के लिये पहली उन्मुखीकरण निर्देशिका का निर्माण किया, जिसमें यौन उत्पीड़न की पहचान करने में विद्यार्थियों की मदद करने के लिए सामग्री के साथ और व्यवहार की रूपरेखा बताते हुये जो कि विश्वविद्यालय द्वारा सहन नहीं किये जायेंगे–साथ ही अस्वीकार्य

> >

व्यवहार के समय पर कहां सलाह ले और कहां शिकायत दर्ज कराये, के बारे में पीड़ितों को सलाह प्रदान की।

1990 के दशक तक, शिकायतकर्ताओं की संख्या के साथ नीतियों, उत्तरजीवियों के लिये संसाधनों और परिसरों में यौन उत्पीड़न के मामलों की रोकथाम और उपाय के लिये विशिष्ट कार्यालयों की संख्या में काफी बढ़ोतरी हुई। 2003 में, ''सहमति'' को यौन गतिविधि के लिये पहले जरूरी शर्त के रूप में स्थापित करने के लिये Criminal Sexual Assault Act में ''नहीं मतलब नहीं'' का आरंभ किया गया।

2010 के दशक के शुरूआत में, देश भर के छात्र कार्यकर्ताओं के एक नये समूह ने दावा किया कि विश्वविद्यालय शिकायतों को गंभीरता से नहीं ले रहा है और इस प्रकार यह ..... का उल्लंघन है। यौन हिंसा के खिलाफ विद्यार्थियों की पर्याप्त सुरक्षा करने में नाकाम रहने के आरोप लगाते हुये अमेरिकन विश्वविद्यालयों के खिलाफ शिकायतें दर्ज की गयी। 2013 में, California State Legislature ने यू. सी. बर्कले को यौन उत्पीड़न और यौन हमलों से संबंधित नीतियों पुनः परीक्षण करने के लिये कहा। एक साल बाद, 2014 में, कॉलेज परिसरों में छात्रों ने ''हां मतलब हां'' सहमति कानून के लिए दवाब बनाया, जिसमें किसी भी यौन संपर्क में एक सकारात्मक, सचेत और स्वैच्छिक सहमति की जरूरत है, यह मानते हुये कि पीड़ित हमेशा ''ना'' नहीं कह सकता।

2015 में, विश्वविद्यालय समुदाय से एकजुटता व समर्थन और हिंसा के विरोध में कार्यवाही करने के लिये कॉलेज सदस्यों का उत्साहवर्धन का संदर्भ बनाकर छात्र विरोध पहले से कहीं अधिक मुखर बन गये। हाल ही में, संकाय और विभाग सदस्यों के सामाजिक दवाब ने एक प्रसिद्ध बर्कले खगोलशास्त्र प्रोफेसर और नोबेल पुरस्कार उम्मीदवार को यौन उत्पीड़न शिकायतों, जो पिछले कई सालों में हुई, पर इस्तीफा देने के लिये राजी किया। शीघ्र ही उसके बाद, कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय ने यौन उत्पीड़न के आरोपों का सामना कर रहे शिक्षकों से निपटने की विश्वविद्यालय प्रक्रियाओं की जांच करने के लिये एक समिति का गठन किया।

अमेरिका के कॉलेज परिसरों में यौन हिंसा के खिलाफ संघर्ष में, सामाजिक सक्रियता और कानूनी बदलाव, दोनों ही शामिल थे। WOASH के द्वारा किये गये 1979 के विरोध, बोलने के द्वारा, और उत्पीड़न करने वालों के खिलाफ शिकायतें दर्ज करके, और उत्पीड़न करने वालों को बर्दाश्त करने वाले विश्वविद्यालयों के विरोध करके, मिसाल कायम कर संदर्भ के निर्माण में महत्वपूर्ण थे। देशभर में जन जागरूकता बढ़ाकर, सम्मान की संस्कृति का निर्माण कर और किसी भी विश्वविद्यालय सदस्य द्वारा यौन उत्पीड़न के प्रति शून्य सहिष्णुता द्वारा इन विरोधों ने परिसर संस्कृति में परिवर्तन लाने में मदद की। कॉलेज परिसरों में यौन हमला अब संपूर्ण समुदाय के लिये एक समस्या के रूप में देखा जाने लगा–एक बदलाव जिसका मतलब है कि पीड़ित अब औपचारिक और अनौपचारिक दोनों तंत्रों से सहायता ले सकता है।

परिसर में छात्र कार्यकर्ता बर्कले परिसर की नीतियों को चुनौती देते और सुधार करते रहे–एक परंपरा में जो कि काम करती देखी जा सकती है, उदाहरण के लिये, परिसर के मुख्य द्वार पर जहां छात्र अपने विभिन्न सामाजिक सरोकारों का प्रचार करते हैं। यहां तक कि बर्कले की बस पर, यौन उत्पीड़न पर चर्चायें सुनी जा सकती हैं। परिसर में, छात्र विरोध प्रदर्शन करते हुये देखे जा सकते हैं, जबकि प्रशासन इमारत के पास लैंगिक हिंसा के खिलाफ विविध दावों वाली चित्रित टी–शर्टों की एक ''प्रदर्शनी'' दिखाई देती है। यौन हमलों पर व्याख्यान अब परिसर की नियमित विशेषता है और छात्र अखबार यौन हिंसा के बारे में ताजा सूचनायें अपने मुखपृष्ठ पर प्रकाशित करते हैं।

अमेरिका में, राष्ट्रीय और स्थानीय सम्मेलनों के साथ और इन प्रयासों के प्रति समर्पित एक राष्ट्रीय संघ के साथ, यौन उत्पीड़न के खिलाफ अभियान चलाया गया। एक महत्वपूर्ण अभियान में पीड़ितों और कार्यकर्ताओं द्वारा संस्थापित एक प्रयास किया गया जिसे End Rape on Campus कहा गया। अन्य पहलों में ..... टीवी कार्यक्रम ६ look into sexual assault; The Hunting Ground के शीर्षक से एक वृत्तचित्र, और किताबें और उपन्यास जैसे "Again and again" शामिल हैं। राजनैतिक क्षेत्र में संयुक्त राज्य सरकार ने विद्यालयों, छात्रों और सभी के लिये मुद्दे से संबंधित संसाधनों आँकड़ों कानूनों और उपयोगी जानकारी को प्रकाशित करते हुये एक वेबसाइट खोली जिसे "Not Alone, together against sexual assault" कहा गया। व्हाइट हॉउस खुद और National Campus Leadership Council ने जागरूकता बढ़ाने, कार्यवाही करने और परिसर में यौन हमलों को रोकने के लिये, जो कि एक राष्ट्रीय समस्या माना गया, It's on Us अभियान को बढ़ावा दिया। सरकार ने शपथ लेने का दावा किया कि वे एक दर्शक नहीं वरन् समाधान का हिस्सा बनेंगे। It's on ने का उद्देश्य कॉलेज परिसरों में यौन हमलों के चारों ओर एक सांस्कृतिक बदलाव हासिल करना है और प्रत्येक पीड़ित को संसाधन उपलब्ध कराना है जिसके वे हकदार हैं।

बर्कले और अन्य अमेरिकन विश्वविद्यालय परिसरों में छात्रों द्वारा की गयी कार्यवाहियों ने ना केवल यौन उत्पीड़न के प्रति संस्थागत प्रतिक्रियाओं को बदला बल्कि वैश्विक स्तर पर छात्र आंदोलनों को भी प्रभावित किया। जैसा कि उल्लेख किया गया है, संसार भर में पीड़ितों के बीच मजबूत एकजुट नेटवर्क मुख्य है, और इस संघर्ष की प्रगति को प्रदान करेगा। उदाहरण के लिये, स्पेन में, सामंती ढांचे के द्वारा थोपी गयी चुप्पी और हमलावरों से बदले की धमकियों के बावजूद पिछले सालों में छात्र अभियान उभरे हैं। अब Solidarity Network of Victims of Gender Violence of Universities पूरे स्पेन में मजबूत आंदोलन को बढ़ावा दे रहे हैं; हालांकि इस समय में भी, बहुत थोड़े संकाय सदस्य इस संघर्ष से जुड़ते हैं और अगर वे जुड़े तो उन्हें गंभीर प्रतिशोधों का सामना करना पड़ सकता है। यह नेटवर्क यौन उत्पीड़न के लिए विश्वविद्यालय प्रोफेसर के खिलाफ दर्ज की गयी पहली शिकायत के पीड़ितों और कार्यकर्ताओं द्वारा बनाया गया है। संस्थागत प्रतिक्रिया की कमी का सामना करते हुये, उन्होंने मीडिया से संपर्क करने के लिये और उन सभी छात्रों और कॉलेज यौन हमले की पीड़ितों का एक संदर्भ नेटवर्क बनने के लिये, अपने को संगठित करने का निर्णय लिया। नेटवर्क को तत्पश्चात् स्पेनिश स्वास्थ्य, सामाजिक सेवा और समानता मंत्रालय के द्वारा ''सर्वोत्तम व्यवहार'' के रूप में मान्यता दी गयी।

यौन हिंसा के मुद्दे के चारों ओर अमेरिकन छात्रों के सामाजिक आंदोलन और कार्यवाही ने स्पेनिश परिसरों और अन्य कहीं पर छात्रों को प्रेरित किया है। इस तरह के आंदोलन, मजबूत जन सहभागिता के द्वारा समर्थन लिये हुये, विश्वविद्यालयों के निर्माण में एक प्रमुख भूमिका निभायेंगे जिसकी भविष्य की पीढ़ियां हकदार हैं। ■

एना विदु से पत्र व्यवहार हेतु पता <ana.vidu@ub.edu>
टिंका शुबर्ट से पत्र व्यवहार हेतु पता <tschubert@ub.edu>

[1] Research for this article was conducted while Ana Vidu was visiting the University of California, Berkeley and Tinka Schubert was visiting the Graduate Center of City University of New York.

> मोन्ड्रेगन का तीसरा रास्ता

शररयन कास्मिर को जवाब

इग्नेसियो सांता क्रूज एयो, स्वायत्त बार्सीलोना विश्वविद्यालय, स्पेन और **इवा एलोन्सो,** बार्सीलोना विश्वविद्यालय, स्पेन

मोन्ड्रेगन शहर में एक भित्ति
किस्चियन वेबर द्वारा फोटो

सहकारी समितियों पर शोध करने वाले विद्वानों के रूप में, हम वैश्विक संवाद को सहकारी समितिों पर बहस शुरू करने के लिये, और वैश्विक संवाद 6.1 (मार्च 2016) में प्रकाशित हुये शैरिन कसमीर के मोन्ड्रेगन की सहकारी समितियों के मूल्यांकन पर, प्रतिक्रिया व्यक्त करने की अनुमति देने के लिये धन्यवाद देना चाहेंगे।

सहकारी समितियों, जैसे कि स्पेन की प्रसिद्ध मोन्ड्रेगन, सहकारी समितियों, के समालोचनात्मक टिप्पणीकार अक्सर तर्क करते हैं कि ''प्रतिस्पर्धा का सामना करते हुये, सरकारी समितियां या तो पूंजीवादी फर्मों में पतित हो जाती हैं या डूब जाती है।'' यह मानते हुये कि मोन्ड्रेगन साफ तौर पर डूब नहीं रही है, बहुत सी आलोचनाऐं–कस्मीर सहित–का उद्देश्य यह दिखाना है कि मोन्ड्रेगन संदिग्ध कार्य स्थितियों के साथ एक मानक पूंजीवादी फर्म में ह्रासित हो गया है। इस समालोचना के आमतौर पर दो तत्व हैं : अस्थायी कर्मचारियों में बढ़ोतरी और गैर–सहकारी सहायक कंपनियों का अंतर्राष्ट्रीय विस्तार। वर्तमान लेख में, हम कुछ आँकड़े प्रस्तुत कर रहे हैं जो दिखाते हैं कि अपने सहकारी सिद्धांतों को छोड़ने के बजाय मोन्ड्रेगन के सदस्य इन चुनौतियों को अपने मॉडल को सुधारने और मजबूत करने के अवसरों के रूप में देखते हैं। हमारी स्वयं के शोध में, हमने एक नये गैर–पूंजीवादी प्रतिस्पर्धात्मक सहकारी समिति प्रारूप के रूप में सहकारी समितियों के लिए तीसरे मार्ग की पहचान की है।

साठ से अधिक वर्षों से, गुणवत्तापूर्ण और सतत नौकरियों का सृजन मोन्ड्रेगन का केंद्रिय लक्ष्य रहा है। इसकी 2014 की वार्षिक रिपोर्ट के अनुसार, मोन्ड्रेगन 103 सहकारी समितियों और 125 उत्पादक सहायक कंपनियों सहित 263 संगठनों को एक समूह है। साथ में, समूह 74,117 नौकरियों के लिये जिम्मेदार है। मोन्ड्रेगन आर्थिक मंदी के दौरान भी नौकरियां सृजन करने और बनाये रखने में सफल रहा है; जब भी संभव हो, सृजन की गयी नौकरियां स्थायी होती हैं। आज, अधिकतर गैर–सरकारी नौकरियां तीन क्षेत्रों में पायी जाती हैं : वितरण क्षेत्र, स्पेनिश, औद्योगिक सहायक कंपनियां और अंतर्राष्ट्रीय औद्योगिक सहायक कंपनियां।

मोन्ड्रेगन अस्थायी नौकरियों को सहकारी में परिवर्तित करने के लिये तीन विशिष्ट रणनीतियों को काम में लेता है। वितरण क्षेत्र में, मोन्ड्रेगन EMES योजना (Estatuto Marco de la Estructura Societaria) का उपयोग करता है। ..... मोन्ड्रेगन का वितरण समूह ने, अन्य वितरण समूह (Caprabo) का अधिग्रहण किया और दोनों समूहों के सुपरमार्केट का विलय कर मान्यता नहीं देते हैं; कई कर्मचारियों को सदस्य बनने के लिये आवश्यक आर्थिक संसाधनों की कमी होती है; और कुछ सहायक कंपनियों में, कई कर्मचारी सहकारी का अर्थ ही नहीं समझते हैं। मोन्ड्रेगन की संस्कृति बास्क देश में साठ सालों में बढ़ी है और पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित

>>

मोन्ड्रेगन सहकारी संस्थाओं की वैश्विक पहुँच

होती आयी है। इस संस्कृति का दूसरे संदर्भ में हस्तांतरण करना आसान नहीं है। फिर भी, वहां कुछ सफलतायें मिली हैं। उदाहरण के लिये, ... ट्रेड यूनियन प्रतिनिधियों का पोलैंड में .... के द्वारा बनायी गयी सहायक कंपनी की प्रशासनिक परिषद् में एकीकरण का वर्णन करते हैं जो कि कंपनी प्रबंधन में कर्मचारियों की भागीदारी की सफलता का प्रतीक है।

मोन्ड्रेगन आज की प्रतिस्पर्धात्मक वैश्विक अर्थव्यवस्था में सहकारी समितियों की भूमिका के बारे में अनेक जटिल सवाल उठाता है। मोन्ड्रेगन की सहकारी समितियों को एक प्रतिस्पर्धात्मक दुनिया में कार्य करना चाहिये ताकि कभी कभी अंतराष्ट्रीयकृत करने में नाकाम होने पर स्पेन और विदेशों में नयी नौकरियां पैदा करने के अवसर खोने का जोखिम होगा। हालांकि सहकारी कंपनियां अल्पसंख्यक हैं और पूंजी कंपनियां बाजार के नियम तय करती है, इसका यह मतलब नहीं है कि वैश्विक अर्थव्यवस्था में जीवित रहने का केवल एक ही रास्ता है। मोन्ड्रेगन समूह नये तरीकों से अंतराष्ट्रीयकरण तक पहुंचने में सक्षम रहा है। जब सहायक कंपनियां विदेशो में शुरू की गयी, मोन्ड्रेगन की प्राथमिकता नौकरियां बनाये रखने और स्थानीय–आधारित सहकारी समितियों को बचाये रखना रही है, ना कि उत्पादन को आउटसोर्स या ऑफशोर करना।

मोन्ड्रेगन अन्य सहकारी समितियों और पूंजीवादी कंपनियों की तुलना में काम करने की बेहतर स्थितियां बनाये रखने में भी सफल रहा है। यहां तक कि जो मोन्ड्रेगन की आलोचना करते हैं इस योगदान को मानते हैं, जैसा कि यह सर्वविदित है कि आज के सहकारी समिति सदस्य यह उम्मीद रखते हैं कि उनके बच्चे समान सहकारी नौकरियों तक पहुंच रखेंगे जो कि स्थिर और उच्च गुणवत्ता दोनों की होंगी। सतत और गुणवत्ता वाली नौकरियां पैदा करने का यह सिद्धांत भी अंतराष्ट्रीय सहायक कंपनियों को हस्तांतरित हो गया है। इस प्रकार, Luzarraga and Irizar (2012) बताते हैं कि राष्ट्रीय और स्थानीय नियमों के पालन के साथ साथ, मोन्ड्रेगन की सहायक कंपनियों ने श्रमिकों की स्थितियों को भी बेहतर किया है, जैसे मजदूरी या प्रशिक्षण अवसरों में। हालांकि, मोन्ड्रेगन का सहकारी आंदोलन अकेले ही वैश्विक पूंजीवाद की गतिकी में परिवर्तन लाने में भले ही सक्षम ना रहा हो, यह फिर भी श्रमिकों और उनके समुदायों के लिये एक बेहतर दुनिया बनाने के अपने ऐतिहासिक प्रयासों को जारी रखे हुये है। ■

इग्नासियो सांता क्रूज एयो से पत्र व्यवहार हेतु पता <Inaki.SantaCruz@uab.cat>
इवा एलोन्सो से पत्र व्यवहार हेतु पता <eva.alonso@ub.edu>

References

Altuna, L. (ed.) (2008) *La experiencia cooperativa de Mondragón, una síntesis general*. Eskoriatza: Lanki–Huhezi, Mondragon Unibertsitatea.

Errasti, A. (2014) "Tensiones y oportunidades en las multinacionales coopitalistas de Mondragón: El caso Fagor Electrodomésticos, Sdad. Coop." *Revesco: Revista de Estudios Cooperativos*, 113: 30-60.

Flecha, R. and Ngai, P. (2015) "The challenge for Mondragon: Searching for the cooperative values in times of internationalization." *Organization*, 21 (5): 666-682.

Kasmir, S. (March 2016) "The Mondragon Cooperatives: Successes and Challenges." *Global Dialogue* 6.1.

Luzarraga, J.M. and Irizar, I. (2012) "La estrategia de multilocalización internacional de la Corporación Mondragón." *Ekonomiaz*, 79: 114-145.

> वैश्विक संवाद का रोमानियाई भाषा में अनुवाद

कोस्टीनेल अनूता, कोरिना ब्रागरू, अंका मिहाई, ओआना नेग्रिया, इओन डेनियल पोपा और **डियाना तिहान,**
बुखारेस्ट विश्वविद्यालय, रोमानिया

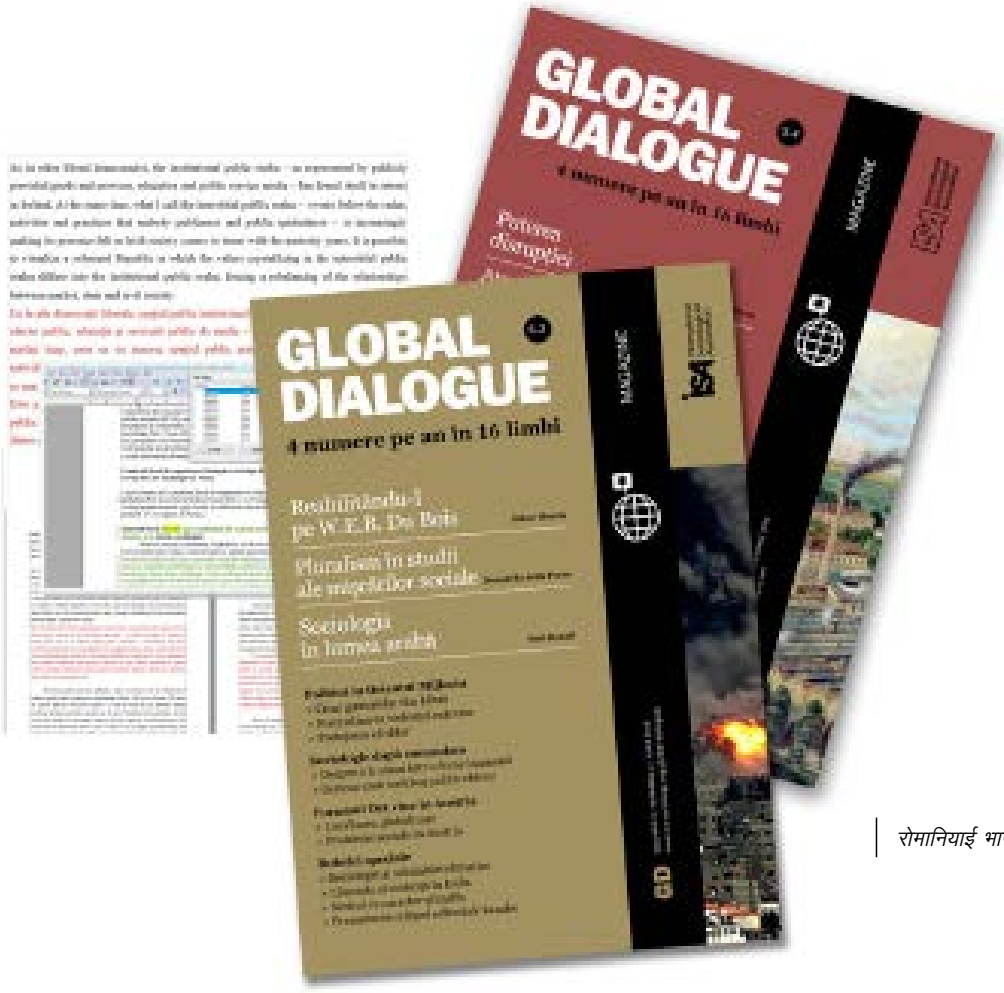

रोमानियाई भाषा में वैश्विक संवाद के अनुवाद की चुनौती

यह लेख समूह की कुछ विशिष्ट प्रथाओं और साथ साथ इसके विकास और कार्य प्रक्रिया पर ध्यान केंद्रित करते हुये, वैश्विक संवाद के रोमानियाई संपादकीय समूह की उत्पत्ति और संरचना का वर्णन करता है।

रोमानियाई संपादकीय समूह की शुरूआत प्रोफेसर मेरियन प्रेदा के द्वारा की गयी थी, जिन्होंने स्नातकोत्तर विद्यार्थियों को उनके डॉक्टरेट प्रशिक्षण के अंश के रूप में शामिल होने के लिये प्रोत्साहित किया और प्रोफेसर कोसिया रूघुनिस और इलियाना सिनजियाना सुर्दू, जिन्होंने टीम की उत्पादन प्रक्रियायें विकसित करने में मदद की। इलियाना ने टीम को हर कदम पर निर्देशित किया और इसके वर्तमान कार्यों को आकार देने में बहुत योगदान दिया।

वैश्विक संवाद के अंग्रेजी संस्करण को प्राप्त करने के बाद, टीम सहकर्मियों, जो कि संपादकीय समूह में पहले से ही हैं और बुखारेस्ट विश्वविद्यालय के समाजशास्त्र के स्नातक कार्यक्रम के विद्यार्थियों को निमंत्रण भेजता है। टीम में शामिल होने के लिए–पांच अंकों में काम करने के बाद ISA छात्र सदस्यता के अतिरिक्त प्रोत्साहन के साथ

> >

– अनुभव सबसे अधिक विश्वासप्रद प्रोत्साहनों में एक हेाता है जो यह प्रत्येक लेख को पढ़ने, प्रोसेसिंग और अनुवाद के समाजशास्त्रीय और भाषायी कौशल के अभ्यास के लिये प्रदान करता है।

एक बार ड्राप बाक्स फोल्डर में अंग्रेजी प्रारूप डालने के बाद, अगले दो सप्ताहों में लेखों का अनुवाद किया जाता है। प्रत्येक अनुवादक को अंक के अनुसार, आमतौर पर चार से दस पृष्ठों के बीच, एक निश्चित मात्रा में अनुवाद करने के लिये कहा जाता है। तीसरा सप्ताह सहकर्मी–समीक्षा प्रक्रिया का होता है जहां टीम का हर सदस्य किसी दूसरे सहकर्मी द्वारा अनुवादित लेख की समीक्षा करता है। लेखों के अंग्रेजी और रोमानियाई संस्करणों की लगातार तुलना की जाती है जिससे शब्दों के मूल अर्थ और शैली की सर्वोत्तम पकड़ हासिल की जा सके। चौथे सप्ताह में टीम का एक अन्य सदस्य, जो इस प्रक्रिया में नये हैं, सभी लेखों में अनुरूपता बनाये रखने के लिये प्रत्येक लेख की समीक्षा करता है (उदाहरण के लिये पत्रिका की उद्धरण शैली में सामंजस्यता लाना; सबसे अनुकूल समानार्थी शब्द का निर्णय लेना), और अंत में, टीम रोमानियाई लेखों की जांच और संपादन करता है।

फिर भी, चीजें हमेशा सुचारू रूप से नहीं चलती हैं, हम में से प्रत्येक को धैर्य और अनुकूलन सहित सामाजिक कौशल पर काम करना पड़ा। सबसे कांटेदार चुनौतियों में से एक, मूल अंग्रेजी के अर्थ को धाराप्रवाह और प्राकृतिक रोमानियाई भाषा में प्रतिपादित करना थी; कभी कभी, हमें अपेक्षाकृत नयी अवधारणाओं के लिये अनुकूल शब्दावली का सृजन करना पड़ा जैसे कि ''ट्रिकल डाउन'' अर्थव्यवस्था, जिसका सामना हमने ग्लोबल डायलोग 5.4 के एक लेख में किया। यह चुनौती अंग्रेजी (एक जर्मन भाषा) और रोमानियन (एक लैटिन भाषा) के बीच संरचनागत अंतर से उपजती है, दो भाषायें जो कभी–कभी शब्दक्रम और वाक्य रचना के परस्पर विरोधी नियमों का उपयोग करती हैं। कौनसा शब्द या वाक्य सबसे अच्छा अनुवाद होगा, इस पर गरम बहस ना केवल हमारी अंग्रेजी अच्छी करने में, बल्कि हमारी स्वयं की देशज भाषा के उपयोग को सीखने के लिये भी अच्छे अवसर प्रदान करती है। कई बार, हम समाजशास्त्रीय अवधारणाओं, जो कुछ कुछ नये हैं, के रोमानियाई वाक्य को ढूंढने के लिये संघर्ष करते हैं एक बहस जो कि तब खत्म होती है जब एक वालंटियर सबूत ला पाता था कि एक रोमानियन समाजशास्त्री ने अंग्रेजी शब्दों के अनुवादित संस्करण का उपयोग किया है। इस प्रकार अनुवाद की चुनौती ने दो तरीकों से हमारी मदद की : इसने इस प्रक्रिया में हमारी भाषायी दक्षता को बेहतर किया और हमारे समाजशास्त्र के सामान्य ज्ञान को मजबूत किया। सैद्धांतिक विषयों पर बहस करते हुये अनुवाद की समयसीमा पर कार्य करना दूसरी चुनौती है–मुख्यतः जबकि सभी सदस्यों को वैश्विक संवाद के कार्य को अपने शैक्षिक और पेशेवर कार्यक्रमों में साथ समायोजित करना होता था।

पत्रिका में विषयों की व्यापक विविधता को देखते हुये, वैश्विक संवाद के परिवार को जोड़ने के लिये विभिन्न शैक्षिक और स्थानीय संस्कृतियों के साथ काफी प्रयोगों की आवश्यकता है। अनुवाद की पूरी प्रक्रिया के दौरान, प्रत्येक समूह सदस्य अपनी विशेषज्ञता लाता है ताकि रोमानियाई संस्करण का हर अंक उत्साहपूर्ण भागीदारी, गहरी रूचि और अत्यंत समर्पण का परिणाम हो। ■

कोस्टीनेल अनूता से पत्र व्यवहार हेतु पता <costinel.anuta@gmail.com>,
कोरिना ब्रागरू से पत्र व्यवहार हेतु पता <bragaru_corina@yahoo.com>,
अंका मिहाई से पत्र व्यवहार हेतु पता <anca.mihai07@gmail.com>,
ओआना नेग्रिया से पत्र व्यवहार हेतु पता <oana.elena.negrea@gmail.com>,
इओन डेनियल पोपा से पत्र व्यवहार हेतु पता <iondanielpopa@yahoo.com> और
डियाना तिहान से पत्र व्यवहार हेतु पता <tihandiana@yahoo.com>